CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरिः

चित्र-सूची

पृष्ठ

१–श्रीनन्दनन्दन (बहुवर्ण) १

मथुरा

२–श्रीद्वारकाधीशजीका मन्दिर १२
३–श्रीराधेश्यामजीकी झाँकी, स्वामीघाट १४
४–विश्रामघाट १४
५–कृष्णगंगाघाट २०

६–श्रीराधाकुण्ड २८
७–श्रीकृष्णकुण्ड २८
८–कुसुम-सरोवर २९
९–मानसी गंगा, खास महल (गोवर्धन) ३०
१०–चन्द्रसरोवर ३४
११–गोपालभवन (डीग) ३८
१२–संगमरमर-झूला (डीग) ३८
१३–भोजनथाली ४१
१४–श्रीलाडलीजी (राधाजी) का मन्दिर (बरसाना) ४४
१५–जयपुर-नरेशका मन्दिर (बरसाना) ४४
१६–राधा-गोपालजीका मन्दिर (प्रेमसरोवर) ४५
१७–प्रेमसरोवर ४५
१८–नन्दगाँवका एक दृश्य ४८
१९–श्यामकुण्ड ५५
२०–अक्रूरघाट ५७

वृन्दावन

२१–वृन्दावनका एक दृश्य ५७
२२–कालीदह ५७
२३–युगलघाट ५७
२४–श्रीयुगलकिशोरीजीका मन्दिर ५७
२५–मदनमोहनजीका मन्दिर ५७
२६–श्रीश्रीराधावल्लभजीकी झाँकी ५८
२७–श्रीबाँकेविहारीजीका मन्दिर ५८
२८–सेवाकुञ्ज ५९
२९–शाहविहारीलालजीका मन्दिर ५९
३०–निधिवन ५९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१–श्रीराधारमणजीकी झाँकी ६०
३२–श्रीराधारमणजीका मन्दिर ६०
३३–रासमण्डल ६०
३४–श्रीगोपीनाथजीकी झाँकी ६१
३५–श्रीगोकुलानन्दमन्दिर, श्रीराधाविनोदजी ६१
३६–वंशीवट ६१
३७–श्रीगोपेश्वर महादेव ६१
३८–लालाबाबूका मन्दिर ६२
३९–श्रीरंगनाथजीका मन्दिर ६२
४०–श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर ६४
४१–श्रीगोविन्ददेवजीकी झाँकी (जयपुर) ६४
४२–ज्ञान-गुदड़ी, यमुना-चढ़ाव ६४
४३–यमुना-पुलिन ६४
४४–शाहजहाँपुरवाली रानीका मन्दिर ६५
४५–मानसरोवर ६६
४६–केशीघाट ६६
४७–चीरघाट ६६
४८–श्रीबलदेवजीकी झाँकी ६९
४९–क्षीरसागर ७०
५०–ठकुरानीघाट (गोकुल) ७२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपोद्घात

राधानाथसमारम्भां श्रीविष्णुस्वामिमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।

यह व्रजमण्डल गोलोक-भूमि है, गो-गोप-गोपीगण-परिवेष्टित, अखण्डब्रह्माण्डनायक, कन्दर्पकोटिलावण्य, मुरलीवादननिरत, कमलदललोचन श्यामसुन्दर श्रीकृष्णकी जो और जैसी लीलाएँ गोलोकधाममें होती हैं वे और वैसी हीं लीलाएँ इस व्रजमण्डलमें होती हैं, ऐसा ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, गर्गसंहिता आदि ग्रन्थोंमें उल्लेख है। इसीसे किसी महानुभावने मथुराकी महत्ताको देखकर कहा था कि—

मथुरेति त्रिवर्णीयं त्रयीतोऽपि गरीयसी ।
सा धावति परं ब्रह्म ब्रह्म तामनुधावति ।।

म-थु-रा ये तीन वर्ण वेदत्रयीसे भी अधिक हैं, क्योंकि वेदत्रयी तो ब्रह्मके पीछे दौड़ती है और ब्रह्म मथुराके पीछे दौड़ता है। एक भक्तशिरोमणि महात्मा वृन्दावनकी अलौकिकताको निरखकर कह उठे कि—

वेदद्रुमे मृगय मा वृन्दाविपिने द्रुमे द्रुमे पश्य ।
यद्व्रजवनिता भूत्वा श्रुतिभिरिहैवावलोकितं ब्रह्म ।।

'वेदरूपी वृक्षमें ब्रह्मको मत ढूँढ़, किन्तु वृन्दावनमें पेड़-पेड़में देख ले, क्योंकि श्रुतियोंने व्रजबाला बनकर यहाँ ही तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मको देखा था ।' महावनमें एक बार दोनों भाई राम-श्याम घुटुअन चलते-चलते नन्द-महलके द्वारपर पहुँच गये, दाऊजी तो बड़े थे सो देहलीको लाँघकर नीचे उतर गये । किन्तु छोटे सरकार उनकी देखादेखी चौखट पकड़कर नीचे उतरने लगे, पर छोटे होनेके कारण धरतीतक पैर न पहुँच पाये, अब ऊपर भी नहीं चढ़ सकते, इससे वहीं लटकने लगे और रोने लगे । इतनेमें ही कोई महात्मा उधर आ निकले और इस नजारेको देखकर गद्-गद होकर कहने लगे—

श्रुतिमपरे स्मृतिमपरे भारतमपरे भजन्तु भवभीताः ।
वयमिह नन्दं वन्दे यस्यालिन्दे परब्रह्म ॥

'संसारसे डरे हुए कोई चाहे श्रुतिको, चाहे कोई स्मृतिको और चाहे कोई भारतको भजा करें पर हम तो इस नन्दबाबाको प्रणाम करते हैं, जिसकी चौखटपर परब्रह्म लटक रहा है ।' जिस व्रजमें यह सुख है, यह भाव है, यह प्रेम है उसकी महिमाका क्या वर्णन हो सकता है । इसीलिये हजारों वर्ष व्यतीत हो जानेपर भी श्रीकृष्णकी इस लीलास्थलीके दर्शन करनेको, इसकी परम पावन रजमें लेटनेको, कहीं लुक-छिप करके भी उस मोरमुकुटवालेकी झाँकीकी झलक दिखायी दे जाय इस आशाके पूर्ण करनेको दूर-दूर देशसे लाखों यात्री व्रजमें आते रहते हैं और यहाँ आकर शान्ति-लाभ करते हैं । कोई-कोई घर बैठे ही दूसरोंसे सुनकर ही व्रजदर्शनकी लालसाको तृप्त कर लेते हैं । परन्तु इतने बड़े व्रजके समस्त लीलास्थलोंके दर्शनकी सुविधा समस्त यात्रियोंको नहीं हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकती। इसी त्रुटिके दूर करनेको यह छोटा-सा निबन्ध स्नेह-भाजन श्रीयुत सोहनलालजी गोयलीय तथा कल्याण–सम्पादक श्रीयुत हनुमानप्रसादजी पोद्दारकी आज्ञासे लिखकर कल्याणपत्रमें प्रकाश करनेके लिये भेजा था और वह कल्याणके श्रीकृष्णांकमें प्रकाशित हुआ था। उसीसे पुनः उद्धृत, परिष्कृत एवं परिवर्द्धित करके यह पुस्तकके आकारमें प्रकाश करके व्रजभक्तोंकी सेवामें समर्पित किया है। व्रजके यात्री इसके अनुसार व्रजकी यात्रा अच्छी तरह कर सकेंगे। घर बैठे सज्जन भी इसके द्वारा व्रज-यात्राका सुख ध्यानसे प्राप्त कर सकेंगे, ऐसी पूर्ण आशा है। जो सज्जन कृपाकर इसकी मनुष्य-स्वभाव-सुलभ त्रुटियोंको सूचित करेंगे, उनकी कृपाका धन्यवाद किया जायगा और द्वितीय संस्करणमें वे त्रुटियाँ सुधार दी जायँगी। इसके अतिरिक्त इस निबन्धके लिखनेमें निम्नलिखित सज्जनोंसे मुझे सहायता मिली है। पूज्यपाद ज्येष्ठबन्धु श्रीगोस्वामी वासुदेवाचार्यजी, आयुर्वेदाचार्य राजवैद्य श्रीरामप्रसादजी शास्त्री, पं० श्रीजवाहरलालजी चतुर्वेदी, चतुर्वेद श्रीनारायण माधवजी भिषग्, हिन्दीरत्न पं० श्रीप्यारेलालजी गौड, पं० श्रीगोविन्दरामजी पाठक सबडिप्टीइन्स्पेक्टर स्कूल्स। इन महानुभावोंकी कृपाका मैं पूर्ण आभार मानता हूँ और हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता हूँ। [इस पुस्तकका समस्त मुद्रणाद्यधिकार गीताप्रेस, गोरखपुरके अध्यक्ष महोदयको है।] अन्तमें श्रीव्रजराजसे प्रार्थना है कि यह 'वाक्य-कुसुमाञ्जलि' श्रीमहाराजके चरणोंमें समर्पित है, इससे लोगोंके चित्तमें भक्ति उदय हो और उनका कल्याण हो।

श्रीविष्णुस्वामिसम्प्रदाय गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य—मथुरावासी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीविष्णुस्वामिने नमः

व्रजकी झाँकी

व्रजाधिराजपादपद्मयुग्मशुभ्रमन्दिरे ।
मनोरमे मनो रमेत मे नखालिचन्दिरे ॥

भुवन-विदित इहि जदपि चारु-भारत-भुवि पावन ।
पै रसपूर्ण कमण्डल व्रज-मण्डल मन-भावन ॥

—स्व० कवि सत्यनारायण

भगवान् श्रीकृष्ण धन्य हैं, उनकी लीलाएँ धन्य हैं और इसी प्रकार वह भूमि भी धन्य है जहाँ वे त्रिभुवनपति मानवरूपमें अवतरित हुए और परम पवित्र अनुपम अलौकिक लीलाएँ कीं जिनकी एक-एक झाँकीका अनुकरण भी भावुक हृदयोंको अलौकिक आनन्द देनेवाला है। श्रीकृष्णको अवतरित हुए आज पाँच सहस्र वर्षसे ऊपर हुए। उनके कीर्ति-गानके साथ-साथ उस परम पावन भूखण्डकी भी महिमाका सर्वदा बखान किया जाता है। वहाँकी रजको मस्तकपर धारण करनेके लिये अबतक शतशः लोग तरसते हैं। बड़े-बड़े लक्ष्मीके लाल अपने समस्त सुख-सौभाग्यको लात मार यहाँ आ बसे और व्रजके टूक माँग-माँगकर उदर-पोषण करनेमें ही अपने आपको धन्य समझा। यही नहीं, अनेक भक्त-हृदय तो यहाँके टुकड़ोंके लिये तरसा करते हैं, भगवान्से इसके लिये प्रार्थना करते हैं। ओड़छेके बाबा गिड़गिड़ाकर कहते हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसो कब करिहो मन मेरो।
कर करवा हरवा गुंजनको, कुंजन माँहि बसेरो।
व्रजवासिनके टूक जूँठ अरु घर-घर छाछ महेरो॥
भूख लगे तब माँगि खाइहौं, गिनौं न साँझ-सबेरो।
ऐसी आस 'व्यास' की पूजौ मेरे गाँव न खेरो॥

यह क्या बात है? इस भूमिमें ऐसा कौन-सा आकर्षण है जो अपनी ओर इच्छाके विरुद्ध भी आकर्षित कर लेता है? भगवान् श्रीकृष्णने यहाँ जन्म धारण किया था और नाना प्रकारकी अलौकिक लीलाएँ की थीं, क्या इसीलिये भक्त-हृदय इससे इतना प्रेम करते हैं? हाँ, अवश्य ही यह बात है; पर केवल यही बात नहीं है, इसके साथ-साथ सोनेमें सुगन्ध यह और भी है कि इस भूमिको भगवान् श्रीकृष्ण गोलोकसे यहाँ लाये थे। जैसे व्रजमें देवी-देवता, ऋषि-मुनि, श्रुतियाँ आदिने आकर गोप-गोपिकाओंका जन्म ग्रहण किया था उसी प्रकार व्रज-भूमि भी श्रीगोलोक-धामसे आयी थी, इस कारण इसकी महिमा विशेष है। पुराणोंके अनुसार यह भूमि सृष्टि और प्रलयकी व्यवस्थासे बाहर है। ऋग्वेदमें एक ऋचा व्रजके सम्बन्धमें मिलती है जो इस प्रकार है—

'ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमवभातिभूरि' इति। ता तानि वां युवयो रामकृष्णयोर्वास्तूनि रम्यस्थानानि गमध्यै गन्तुम् उश्मसि उष्मः कामयामहे न तु तत्र गन्तुं प्रभवामः। यत्र (वृन्दावनेषु) वास्तुषु भूरिशृङ्गा गावः अयासः सञ्चरन्ति अत्र भूर्लोके अह निश्चितं तत् गोलोका-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वयं परमं पदं भूरि अत्यन्तं मुख्यम् उरुभिर्बहुभिर्गीयते स्तूयत इत्युरुगायस्तस्य वृष्णेर्यादवस्य पदमवभाति प्रकाशते इति।

अर्थात्—इन्द्र स्तुति करते हैं कि "हे भगवन् श्रीबलराम और श्रीकृष्ण! आपके वे अति रमणीक स्थान हैं। उनमें हम जानेकी इच्छा करते हैं, पर जा नहीं सकते। कारण—

अहो मधुपुरी धन्या वैकुण्ठाच्च गरीयसी।
विना कृष्णप्रसादेन क्षणमेकं न तिष्ठति॥

'यह मधुपुरी धन्य और वैकुण्ठसे भी श्रेष्ठ है, क्योंकि वैकुण्ठमें तो मनुष्य अपने पुरुषार्थसे पहुँच सकता है, पर यहाँ श्रीकृष्णकी कृपाके बिना कोई एक क्षण भी नहीं ठहर सकता।' जहाँ (व्रजमें) बड़े सींगोंवाली गायें चरती हैं। यदुकुलमें अवतार लेनेवाले, उरुगाय (बहुत प्रकारसे गाये जानेवाले) भगवान् वृष्णिका गोलोक नामक वह परमपद (व्रज) निश्चित ही भूलोकमें प्रकाशित हो रहा है।" तब फिर बतलाइये व्रजभूमिकी बराबरी कौन स्थान कर सकता है? भारतवर्षमें अनेक तीर्थस्थान हैं, सबका माहात्म्य है, भगवान्के और-और भी जन्म-स्थान हैं, पर यहाँकी बात ही कुछ निराली है! आनन्द ही अनोखा है!! यहाँके नगर-ग्राम, मठ-मन्दिर, वन-उपवन, लता-कुञ्ज आदिकी अनुपम शोभा भिन्न-भिन्न ऋतुओंमें भिन्न-भिन्न प्रकारसे देखनेको मिलती है। अपनी जन्मभूमिसे सभीको प्रेम होता है, फिर वह चाहे खुला खँडहर हो अथवा सुरम्य स्थान; वह जन्मस्थान है, यह विचार ही उसके प्रति प्रेम होनेके लिये पर्याप्त है। इसीलिये भगवान्का भी इससे प्रेम होना स्वाभाविक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसीसे श्रीभागवतमें लिखा है 'मथुरा भगवान् यत्र नित्यं सन्निहितो हरिः।' उस पुण्यभूमिकी रही-सही नैसर्गिक छटाके दर्शनके लिये—उस छटाके लिये जिसकी एक झाँकी उस पवित्र युगका, उस जगद्गुरुका, उसकी लौकिकरूपमें की गयी अलौकिक लीलाओंका अद्भुत प्रकारसे स्मरण कराती, अनुभवका आनन्द देती और मलिन मन-मन्दिरको सर्वथा स्वच्छ करनेमें सहायता प्रदान करती है—भावुक भक्त तरसा करते हैं, इसमें आश्चर्य ही क्या है? नैसर्गिक शोभा भी न होती, प्राचीन लीलाचिह्न भी न मिलते होते, तो भी केवल साक्षात् परब्रह्मका यहाँ विग्रह होनेके नाते ही यह स्थान आज हमारे लिये तीर्थ था; यह भूमि हमारे लिये तीर्थ थी, जहाँकी पावन रजको ब्रह्मज्ञ उद्धवने अपने मस्तकपर धारण किया था; वे व्रजवासी भी दर्शनीय थे जिनके पूर्वजोंके भाग्यकी सराहना करते-करते भक्त सूरदासके शब्दोंमें बड़े-बड़े देवता आकर उनकी जूँठन खाते थे; क्योंकि उनके बीचमें भगवान् अवतरित हुए थे।

व्रज-वासी-पटतर कोउ नाहीं।
ब्रह्म, सनक, सिव, ध्यान न पावत,
इनकी जूँठन लै-लै खाहीं॥
हलधर कह्यौ, छाक जैंवत सँग,
मीठौ लगत सराहत जाहीं।
'सूरदास' प्रभु जो विस्वम्भर,
सो ग्वालनके कौर अघाहीं॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तब फिर यहाँ तो अनन्त दर्शनीय स्थान हैं, अनन्त सुन्दर मठ-मन्दिर, वन-उपवन, सर-सरोवर हैं, जो अपनी शोभाविशेषके लिये दर्शनीय हैं और पावनताके लिये भी दर्शनीय हैं। सबके साथ अपना-अपना इतिहास है। यद्यपि मुसलमानोंके आक्रमण-पर-आक्रमण होनेसे व्रजकी सम्पदा नष्टप्राय हो गयी, कई प्रसिद्ध स्थानोंके चिह्नतक मिट गये, मन्दिरोंके स्थानपर मसजिदें खड़ी हो गयीं, तथापि धर्मप्राणजनोंकी चेष्टासे कुछ स्थानोंकी रक्षा तथा जीर्णोद्धार होनेसे यहाँकी जो भी कुछ बची-खुची शोभा आज है वह भी दर्शनीय और अलौकिक ही है।

व्रज-नामका कारण और स्थान-विस्तार

जिस स्थानमें पशु अधिक हों उसे व्रज कहते हैं। अथवा—'व्रजन्ति अस्मिन् जनाः श्रीकृष्णप्राप्त्यर्थमिति व्रजः' अर्थात् इस प्रान्तमें श्रीकृष्ण भगवान्‌से मिलनेके लिये जीव जाते हैं, इसलिये यह व्रज है। यह व्रजभूमि मथुरा और वृन्दावनके आस-पास चौरासी कोसमें फैली हुई मानी जाती है। वाराहपुराणमें इसका विस्तार अस्सी कोस माना गया है। जैसे कि—

विंशतिर्योजनानां च माथुरं मम मण्डलम्।
यत्र तत्र नरः स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः॥*

अर्थात् मेरा मथुरा-मण्डल बीस योजन (अस्सी कोस) है, जिसके यत्र-तत्र स्थित तीर्थोंमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पातकोंसे

---

* पदे पदेऽश्वमेधानां फलं प्राप्नोत्यसंशयम्।
—ऐसा भी पाठ है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुक्त हो जाता है। मथुराके चार कोसोंको मिलानेसे चौरासी कोस होते हैं। पैंड-पैंडपर अश्वमेधका फल निश्चय प्राप्त होता है।

वन-उपवन

यहाँ १२ महावन और अनेक उपवन हैं जो इस प्रकार हैं—

महावन—(१) मधुवन (२) तालवन (३) कुमुदवन (४) बहुलावन (५) कामवन (६) खदिरवन (७) वृन्दावन* (८) भद्रवन (९) भाण्डीरवन (१०) बेलवन (११) लोहवन (१२) महावन।

उपवन—(१) गोकुल (२) गोवर्धन (३) बरसाना (४) नन्दगाँव (५) संकेत (६) परममन्द्र (७) अड़ींग (८) शेषशायी (९) माट (१०) अञ्चगाम (११) खेलवन (१२) श्रीकुण्ड (१३) गन्धर्ववन (१४) परसौली (१५) विलछू (१६) वच्छवन (१७) आदिबद्री (१८) करहला (१९) आजनोखर (२०) पिसायो (२१) कोकिलावन (२२) दधिवन (२३) कोटवन (२४) रावल (२५) सुरभीर (सुरीर) (२६) मुञ्जाटवी आदि अनेक उपवन हैं।

---

*वृन्दावन तीन हैं (१) कामवनके आसपास (२) गोवर्धनके आसपास (३) मथुरासे तीन कोसपर वर्त्तमानमें विद्यमान है। इसका विस्तार आगे आवेगा। वृन्दावनके मार्ग दो हैं, इससे यह बेलवनके पीछे भी गिनतीमें आता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरिता-सरोवर

व्रजमण्डलमें पहले कई सरिताएँ थीं पर अब यमुना, कृष्ण-गङ्गा, मानसीगङ्गा और चरणगङ्गा—ये चार ही नदियाँ प्रकट हैं। सरस्वती प्रकट नहीं हैं। मथुरामें जहाँ पहले सरस्वती बहती थीं वहाँ अब सरस्वती-नाला नामसे स्थान प्रसिद्ध है और जहाँ सरस्वती यमुनाजीमें मिलती थीं वहाँ सरस्वती-सङ्गम-तीर्थ अब भी प्रसिद्ध है।

सरोवर

सरोवर पाँच हैं——मानसरोवर, हंससरोवर, पानसरोवर, चन्द्रसरोवर और प्रेमसरोवर।

इसके सिवा मठ-मन्दिर, कुण्ड इत्यादि अगणित स्थान हैं।

पर्वत

पर्वत पाँच हैं——गोवर्धन, बरसानु, नन्दीश्वर, चरणपहाड़ी, दूसरी चरणपहाड़ी।

व्रज-यात्रा

वर्षा-ऋतुमें व्रज-यात्राएँ होती हैं। ये व्रज-यात्राएँ मुख्यतया तीन होती हैं। एकको माथुर-चतुर्वेदी प्रारम्भ करते हैं, दूसरी-को सनाढ्य और तीसरीको श्रीवल्लभाचार्य-वंशज गोस्वामी। पहिली यात्रा भाद्रपद कृष्णा एकादशीसे आरम्भ होकर पन्द्रह दिनमें समाप्त होती है और दूसरी भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशीको प्रारम्भ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होकर पन्द्रह दिनमें समाप्त होती है। ये दोनों रामदलके नामसे प्रसिद्ध हैं। पहले ये एक ही थीं, अब दो हो गयी हैं। तीसरी भाद्रपद शुक्ला एकादशीको प्रारम्भ होकर डेढ़ मासमें, कभी-कभी अधिक समयमें भी समाप्त होती है। इसमें सामयिक (अर्थात् जहाँ जैसी लीला श्रीभगवान्ने की है वैसे ही) रास, कथा, उपदेश भी होते रहते हैं। पहिली और दूसरी यात्रामें—शीघ्रतासे समाप्त होनेके कारण—कुछ स्थान रह जाते हैं। सन् १८५७ (सिपाही—विद्रोहके समय) से पहले यह यात्रा डीगमें नहीं जाती थी; गोवर्धनसे वहज होकर परममन्द्र (परमदरे) में स्थित होती थी फिर आदिबद्री होकर कामवन जाती थी। इसी प्रकार शेरगढ़से छिनवारेके घाटसे यमुना-पार होकर मुञ्जाटवी (मण्ड्यारी) होकर सुरीर पहुँचती थी। फिर भद्रवन (भदनवारा) होकर माट पहुँचती थी। मुञ्जाटवीके जङ्गलमें गदरके समय एक बार यात्रा लुट गयी थी। इसीसे उन स्थानोंको छोड़ देते थे। अब भी बहुत-से जानकार यात्री तथा व्रजके रहनेवाले यात्री उधरसे ही जाते हैं। मुञ्जाटवीसे सुरभीर होकर माटतक पक्की सड़क होनेसे विशेष सुभीता भी है (और यह भी सुना जाता है कि किसी समयमें माटसे राया मुकाम होकर दाऊजी जाते थे, लोहवन मुकाम नहीं होता था)। अब वहाँ जंगल भी नहीं है, लुटनेका डर भी नहीं है इसलिये सबको पूरी परिक्रमा ही करनी चाहिये। कुछ यात्री वृन्दावनसे ही मथुरा आ जाते हैं। परिक्रमा पूरी करके फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोकुल, महावन, दाऊजीके दर्शन करने जाते हैं । कुछ शेरगढ़से चीरघाट, नन्दघाट होकर माट, लोहवन, बलदेवजी, महावन, गोकुल इन यमुना-पारके क्षेत्रोंकी परिक्रमा करते पन्द्रहवें दिन दोपहरतक मथुरा आ जाते हैं किन्तु वृन्दावन छूट जाता है । अस्तु, यहाँ यात्राके अनुसार ही कुछ प्रमुख स्थानोंका परिचय दिया जाता है ।

मथुरा

मथुराकी ऐतिहासिकता

जहाँ आजकल मथुरा है वहाँ वह पहले न थी, इस समय जहाँ मल्लपुरा या केशवदेवजीका मन्दिर है वहाँ बसती थी । व्रजमें प्राचीन वस्तुएँ तीन ही हैं । पर्वत, नदी और भूमि । प्राचीन वस्तुएँ या तो नष्ट हो गयीं या नष्ट कर दी गयीं और उनके स्थानपर नई बन गयीं या पुरानीका जीर्णोद्धार हो गया । सारांश यह है कि प्राचीनता नष्ट होकर नवीनताका निराला नाज़ निखर आया । वही बात मथुराके सम्बन्धमें भी है । मथुरापर हूण, शक, बौद्ध, जैन, मुसलमान आदि सबका हमला और आधिपत्य होता रहा है एवं अपने-अपने आधिपत्यमें सबोंने पुरानी शोभाओंको नष्ट की और अपनी नयी कीर्ति स्थापित की, इस प्रकार प्राचीनता भंग होती चली गयी । धर्मान्ध म्लेच्छोंने तीन बार इसमें क़त्ले-आम भी किया, क्योंकि उनके वहाँ काफिरोंको मारना सबाब है और मथुरा-सदृश पुण्यतम तीर्थके काफिरोंका क़त्ल करना उनको बहिस्त पहुँचानेको काफी था । उस क़त्ले-आमको कटाके नामसे अब भी मथुरावासी याद कर लेते हैं । यहाँपर राज्य भी बदल-बदलकर कई हुए—पेशवा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेंधिया, जैपुर, होलकर, भरतपुर आदि। इस प्रकार मथुरा जैसे तीर्थरूपसे विलक्षण है वैसे यह अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी विशेष रखती है। इसके टीलोंमें, खण्डहरोंमें, भूमिमें, कुओंमें, यमुनामें, बड़ी-बड़ी महत्त्वकी ऐतिहासिक वस्तुएँ उपलब्ध हुई हैं जो यहाँके 'प्राचीन-वस्तु-संग्रहालय' (म्यूजियम) में रक्खी हुई हैं। कुछ बाहर भी चली गयी हैं। सन् १०१७ ई०में महमूद गजनवीने बीस दिनतक मथुरा और उसके आस-पासके वृन्दावन आदिको खूब ही नष्ट-भ्रष्ट किया। फिर सन् १५०० ई० में सुलतान सिकन्दर लोदीने मथुराका सर्वनाश किया। सन् १६६९ ई० में औरंगजेबने मथुरा और ब्रजका नाश किया। इस प्रकार 'मथुरा' सर्वदा दूसरोंके आक्रमण ही सहती चली आयी है।

अस्तु, सन् १८०३ ई० में यहाँ अंग्रेजी राज्य स्थापित हुआ।

स्थान-परिचय

हिन्दू-धर्म-ग्रन्थोंमें मथुराकी बड़ी महिमा है। अथर्ववेदकी गोपालतापिनीमें लिखा है—

मथ्यते तु जगत्सर्वं ब्रह्मज्ञानेनं येन वा॥
तत्सारभूतं यद्यस्यां मथुरा सा निगद्यते॥

अर्थात् जिस ब्रह्मज्ञान एवं भक्ति-योगसे सारा जगत् मथा जाता है यानी ज्ञानी और भक्तोंका संसार लय हो जाता है वह सारभूत ज्ञान और भक्ति जिसमें सदा विद्यमान रहते हैं वह 'मथुरा' कहलाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद्मपुराणमें भगवान्का वचन है—

'अहो न जानन्ति नरा दुराशयाः
पुरीं मदीयां परमां सनातनीम् ।
सुरेन्द्रनागेन्द्रमुनीन्द्रसंस्तुतां
मनोरमां तां मथुरां पराकृतिम् ॥'
—इत्यादि ।'

अर्थात् 'दुष्ट-हृदयके लोग मेरी इस परम सुन्दर सनातन मथुरा-नगरीको नहीं जानते जिसकी सुरेन्द्र, नागेन्द्र तथा मुनीन्द्रोंने स्तुति की है और जो मेरा ही स्वरूप है ।' मथुरा आदि-वाराह भूतेश्वर-क्षेत्र कहलाती है । मथुराके चारों ओर चार शिवमन्दिर हैं—पश्चिममें भूतेश्वरका, पूर्वमें पिप्पलेश्वरका, दक्षिणमें रंगेश्वरका और उत्तरमें गोकर्णेश्वरका । चारों दिशाओंमें स्थित होनेके कारण शिवजीको मथुराका कोतवाल कहते हैं । मानिक-चौकमें नील-वाराह और श्वेत-वाराहके सुन्दर विशाल मन्दिर हैं । श्रीकृष्णके प्रपौत्र वज्रनाभने श्रीकेशवदेवजीकी मूर्ति स्थापित की थी, पर औरङ्गजेबके कालमें वह 'रज-धाम' में पधरा दी गयी । औरङ्गजेबने मन्दिरको तोड़ डाला और उसके स्थानमें मसजिद खड़ी कर दी । बादमें उस मसजिदके पीछे दूसरा केशवदेवजीका मन्दिर बन गया है । प्राचीन केशव-मन्दिरके स्थानको 'केशव-कटरा' कहते हैं । खुदाई होनेसे यहाँपर बहुत-सी ऐतिहासिक वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं । मन्दिरके पास दक्षिणकी ओर पोतरा-कुण्ड है, जो देखनेमें बहुत सुन्दर तो नहीं, पर बहुत विशाल है । इसमें भीतर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतने बड़े-बड़े दालान हैं जिनमें हजारों मनुष्य बैठ सकते हैं और कुण्डके बाहरसे कुछ मालूम भी न हो। इसमें जल प्रायः सूख जाया करता है। इसीके पास वर्तमान कृष्ण-जन्म-भूमिका मन्दिर है (वास्तविक कृष्ण-जन्मभूमिके स्थानपर तो औरङ्गजेबकी मसजिद है) जिसमें देवकी-वसुदेवजीकी मूर्तियाँ हैं। उक्त स्थानको मल्लपुरा भी कहते हैं। इसी स्थानमें कंसके चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल, तोशल आदि प्रसिद्ध मल्ल रहा करते थे। यहाँ एक पुराना गङ्गाजीका मन्दिर भी है और इस प्रान्तमें भूतेश्वर महादेवजीके पास कङ्काली-टीलेपर कङ्काली-देवी (कंस-काली) का मन्दिर है। कङ्काली-टीलेमें भी खोदनेसे अनेक वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं। यह कङ्काली वह बतलायी जाती है, जिसे देवकीकी कन्या समझकर कंसने मारना चाहा था; पर जो उसके हाथसे छूटकर आकाशमें चली गयी थी। इससे आगे बलभद्रकुण्ड है और बलभद्र तथा जगन्नाथजीका मन्दिर है।

और भी बहुत-से नवीन मन्दिर हैं। ये सब नगरके बाहर हैं। सबसे श्रेष्ठ, सुन्दर, सेवा-शृङ्गारका जहाँ अच्छा आनन्द रहता है, वह श्रीद्वारिकाधीशका मन्दिर है। यह सेठ गोकुलदास पारखजीका बनवाया हुआ है, जो कि ग्वालियर-राज्यके खजांची थे और कई करोड़की सम्पत्तिके मालिक थे। यह मन्दिर तृतीय पीठाधिपति काँकरोलीके गोस्वामियोंके सुपुर्द है। इसके खर्चके लिये गाँव लगे हुए हैं और भेंट भी बहुत आती है। इसमें उत्सव बहुत होते हैं और नित्य साधु प्रसाद पाते हैं। अन्न-कूटके अवसरपर हजारों ब्राह्मण और अन्य सेवकजन प्रसाद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

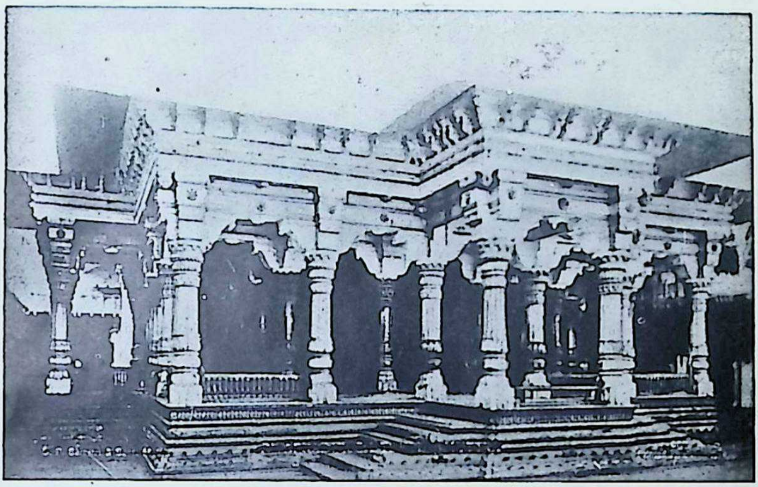

श्रीद्वारकाधीशजीका मन्दिर (मथुरा) पृष्ठ १२

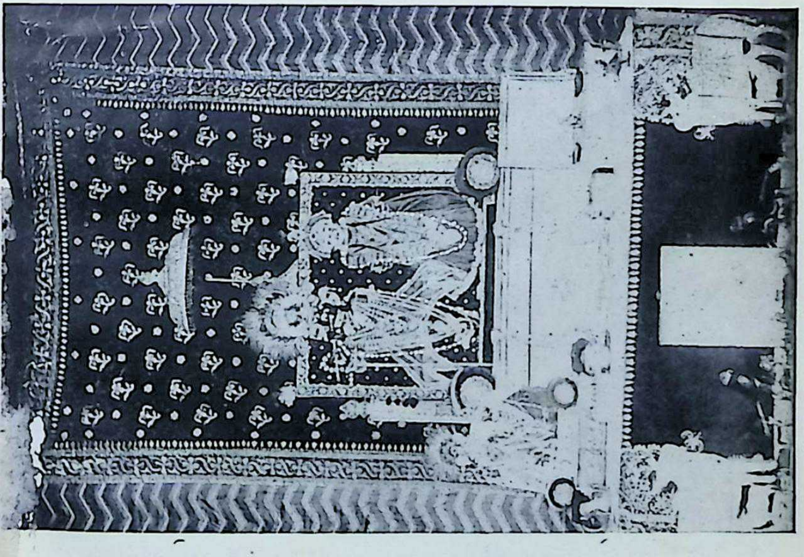

श्रीराधेश्यामजीकी झाँकी (स्वामीघाट, मथुरा) पृष्ठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

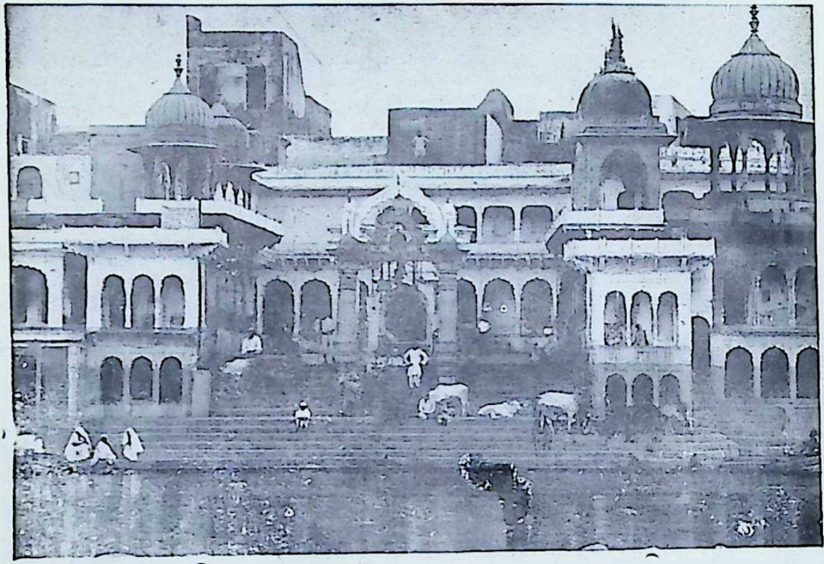

विश्रामघाट (मथुरा) पृष्ठ १४

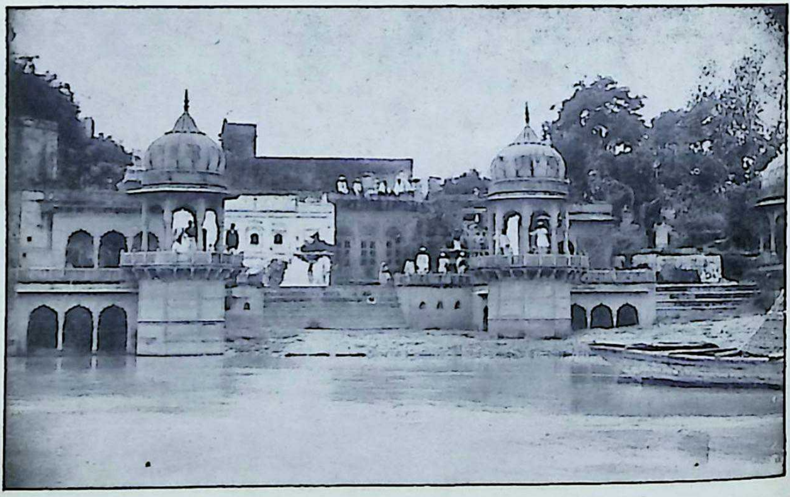

कृष्णगंगाघाट (मथुरा) पृष्ठ २०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाते हैं और सालभरमें एक बार मथुराकी विद्वन्मण्डली भी वहाँ प्रसाद पाती है। इस मन्दिरमें संस्कृत-पाठशाला भी है। इसमें आयुर्वैदिक और होमियोपैथिक दो चिकित्सालय भी हैं। श्रीमद्भागवतकी कथा भी जिस दिनसे भगवान् विराजे हैं उसी दिनसे नित्य प्रातःकाल होती है और प्रारम्भकर्ता वक्ताके वंशज ही बाँचते आ रहे हैं। रात्रिमें चार मनुष्य नाम-कीर्तन करते हैं। शयनके समय प्रतिदिन बहुत-से साधु नाम-कीर्तन करते हैं। उसी समय श्रीमद्भागवतका पाठ भी नित्य होता है। इस प्रकार अहर्निश हरिस्मरण ही होता रहता है। प्रबन्ध-व्यवस्था भी बहुत सुन्दर है। यह मन्दिर सं० १८६५ वि० में बना था। वास्तवमें यह मथुराकी शोभा है।

श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर—यह रामगढ़ निवासी सेठ गुरुसहाय-मलजी पोद्दारका बनवाया हुआ है। इसमें भी उत्सव बहुत अच्छे होते हैं और भगवान्‌की मूर्ति बड़ी सुन्दर है। विद्यार्थी और साधु प्रति-दिन भोजन करते हैं। इसमें भी एक सुन्दर संस्कृत-पाठशाला है और अभ्यागतोंको चने भी बँटते हैं। श्रीकिशोरीरमणजीका मन्दिर स्वर्गीय किशोरीलालजी ढूँसरका बनवाया हुआ है। इसके आधिपत्यमें किशोरीरमण-पाठशाला, किशोरीरमण-गर्ल्सस्कूल और किशोरीरमण हाईस्कूल हैं जो बहुत उन्नत दशामें हैं। इस मन्दिरमें भी उत्सव बहुत सुन्दर होते हैं। इसमें सोने-चाँदीका बना हुआ हिंडोला बहुत विचित्र है। इसमें भी विद्यार्थी, साधु नित्य भोजन करते हैं, कथा और कीर्त्तन होते हैं।

गोवर्धननाथजीका* मन्दिर—इसमें पत्थरका काम बहुत

---

* ये पाँच मन्दिर स्वामीघाटपर हैं। इसका दूसरा नाम वसुदेव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही सुन्दर है, जिसके फोटो लेनेको यूरोपियन आया करते हैं। उदयपुरवाली रानीका मदनमोहनजीका मन्दिर—इसका प्रबन्ध भी अच्छा है। अभ्यागतोंको भोजन और चने मिलते हैं। बिहारीजीका मन्दिर—इसे मऊके एक सेठने बनवाया है। आजकल यह मन्दिर श्रीनाथजीके गोस्वामी गोवर्धनलालजीकी भेंट है। इसमें श्रीनाथ-भण्डार स्थापित है। पहले एक संस्कृत-पाठशाला भी थी, जिसमें श्रीवल्लभसम्प्रदायके ग्रन्थ पढ़ाये जाते थे। मदनमोहनजीका मन्दिर—यह रामगढ़के रहनेवाले अनन्तराम सेठका बनवाया हुआ है। बड़ा विशाल है। राधेश्यामजीका मन्दिर—यह उन्नाववाली रानी श्यामकुँवरिका बनवाया हुआ है। असकुण्डाघाटपर हनूमान्जी, नृसिंहजी, वाराहजी, गणेशजीके मन्दिर हैं। इससे उत्तरकी तरफ प्राचीन विश्रामघाट था। मुसलमानी समयमें वह भ्रष्ट कर दिया गया और एक मखदूम साहबने दौला-मौला नामका (मसजिद) स्थान बना दिया। प्राचीनताके माननेवाले पुरुष अब भी यमद्वितीयाको वहाँ ही स्नान करते हैं। यहाँ-पर यमुनाजी उस घाटको छोड़ती जाती हैं। यहाँ-पर ही राजा भरतपुरकी हवेली है जिसका फाटक व दरवाजा बहुत ही सुन्दर है। दूसरी ओर सेठ लक्ष्मीचन्द-जीकी हवेली है। उससे आगे महाप्रभुजीकी बैठक है। उससे आगे (वर्त्तमान) विश्राम या विश्रान्तघाट है। मथुरामें

घाट भी है। सुनते हैं इसी रास्तेसे वसुदेवजी श्रीकृष्णको मथुरासे गोकुल ले गये थे। यह मथुराके सामने ही है इससे इसको सामुइघाट भी व्रजभाषामें कहा करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यही प्रधान तीर्थ है। नित्य प्रातःकाल और सायंकाल यहाँ श्री-यमुनाजीकी आरती हुआ करती है। अच्छी शोभा होती है। श्रीकृष्ण भगवान्‌ने कंसको मारकर यहाँ विश्राम लिया था इसलिये इसका विश्रामघाट नाम हुआ या सांसारिक-पथिकको विश्रान्ति मिलती है इससे विश्रान्त या विश्रामघाट नाम बना है। इस जगह दतियावाले महाराज इक्यासी मन सोनेसे तुले थे और यह सोना व्रजमें बँटा था। तीन मन सोनेसे काशीके महाराज भी तुले थे। इस प्रकार सुवर्णकी ये दो बड़ी तुलाएँ हो चुकी हैं। जयपुर व रीवाँके महाराजोंकी तुलाएँ भी हैं और वे तुलाएँ वहाँ बनी हुई भी हैं। विश्रामघाटपर कृष्णबलदेवजी, राधादामोदरजी, मुरली-मनोहरजी, लक्ष्मीनारायण, अन्नपूर्णा, धर्मराज, गोवर्धननाथ आदिके कई मन्दिर हैं। यहाँपर चैत्र शुक्ला षष्ठीको यमुनाजीके जन्मदिन, फूलडोलका बहुत उत्तम मेला होता है। यह विश्रान्तसे आगे सभी घाटोंपर होता है। दूसरा मेला यमद्वितीयाको होता है। तीसरा कार्तिक शुक्ला दशमीको होता है, जब श्रीरामकृष्ण कंसको मारकर अपने सखाओंके वर्गके साथ विश्रान्तपर पधारते थे।

विश्रान्तसे पीछे बाज़ारमें गतश्रमनारायणजीका मन्दिर है। यह प्राणनाथजी शास्त्रीका बनवाया हुआ श्रीरामानुजसम्प्रदायका है। इसके व्यय-निर्वाहार्थ गाँव लगे हुए हैं। उससे पीछे पुराना गत-श्रमनारायणका मन्दिर भी है। इससे आगे कंसखार है। यहाँ सब्जीमण्डी है और पण्डित क्षेत्रपाल शर्माका बनवाया हुआ घण्टाघर है। इससे आगे सतघरा मुहल्ला है जिसमें पहले श्रीवल्लभाचार्य-के सातों स्वरूप विराजते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पालीवाल बोहरोंके बनवाये हुए मथुरानाथ, राधा-कृष्ण, दाऊजी, विजयगोविन्द, गोवर्धननाथ आदिके मन्दिर हैं। रामजीद्वारेमें श्रीरामजीका मन्दिर है। वहीं श्रीगोपालजीकी अष्टभुजी मूर्ति है, जिसमें चौबीस अवतारोंकी मूर्तियों-के दर्शन होते हैं। रामनवमीके दिन यहाँ बहुत बड़ा मेला होता है। इसीके पास कीलमठकी गलीमें स्वामी कीलजी महाराज-की गुफा है। ये बड़े पहुँचे हुए महात्मा हो गये हैं। इन्होंने अपने तपोबलसे हिन्दुओंकी मुसलमानोंसे रक्षा की थी। इनका वेणीमाधवजीका मन्दिर (श्रीरामानुजसम्प्रदायका) है जो प्रयाग-घाटपर है। तुलसी-चौतरापर तुलसीजीका थामला है और श्री-नाथजीकी बैठक है। गोवर्धनसे आकर प्रथम रात्रिमें श्रीनाथजी यहाँ ही विराजे थे और अब मेवाड़में विराज रहे हैं। आगे चलकर चौवच्चामें वीरभद्रेश्वरजीका मन्दिर है, जो राजा पटनीमल-जीने बनवाया था। वहाँ ही शत्रुघ्नजीका मन्दिर है, जिन्होंने लवणासुरको मारकर मथुराकी रक्षा की थी। होली-दरवाजेके पास कंसनिकन्दनका मन्दिर है। ये प्रभु भी वज्रनाभके पधराये हैं।

इससे आगे चलकर दाऊजीका मन्दिर है। महोलीकी पौरमें पद्मनाभजीका मन्दिर है। ये भी वज्रनाभके पधराये हुए हैं। डोरीबाजारमें गोपीनाथजीका मन्दिर है। इसमें भी अभ्यागत भोजन करते हैं। घीयामण्डीमें सीतारामजी और जानकी-जीवनजीके मन्दिर हैं इनमें भी अच्छे उत्सव होते हैं। ये दोनों मन्दिर ढूँसरोंके बनवाये हुए हैं। आगे चलकर दीर्घविष्णुजीका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दिर है। यह भी पटनीमलजीका बनवाया हुआ है। (वाराह-पुराणमें मथुराके जिन मन्दिरोंका वर्णन है और कालवश वे नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं उनमेंसे कितनोंहीको राजा पटनीमलने बनवाया था जैसा कि वीरभद्रेश्वर-मन्दिरकी प्रशस्तिमें लिखा है—

सुविश्रुतं यज्ञवपुःपुराणे
श्रीवीरभद्रेश्वरमन्दिरं यत्।
अदृश्यतां कालवशादवाप्तं
राज्ञा नवं तत्पटनीमलेन॥
निर्माय धर्मज्ञवरेण भूयः
कृता प्रतिष्ठा विधिपूर्वकं हि।
वाणाङ्गनागेन्दु (१८६५) मिते च वर्षे
वैशाखशुक्लत्रिकु (१३) संख्य तिथ्याम्॥

सीतलापाइसामें मथुरादेवी और गुजरानामें दाऊजीके एक चरणका चिह्न है। बंगालीघाटपर श्रीवल्लभाचार्य-कुलके गोस्वामियोंके बड़े मदनमोहनजी, छोटे मदनमोहनजी, गोकुलेशजीके मन्दिर हैं। नगरके बाहर ध्रुवटीलेपर ध्रुवजीका मन्दिर है। बालक ध्रुवजीने पाँच वर्षकी अवस्थामें छः महीनेतक कठिन तप करके भगवान्को प्रसन्न किया था। यहाँपर ध्रुवजीके चरणचिह्न हैं। पहले यहाँ केवल चरणचिह्न और श्रीनिम्बार्काचार्यके पूज्य श्रीसर्वेश्वर और विश्वेश्वर श्रीशालग्राम भी थे जो घटनावश अब सलेमाबादमें और छत्तीस-गढ़में विराजते हैं। ध्रुवजीकी मूर्ति—गोस्वामी श्रीलड़ेतीलालजीकी पधरायी हुई है। ये चरणचिह्न वज्रनाभके स्थापन किये हुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। इसी स्थानपर जगत्प्रसिद्ध श्रीकेशवकाश्मीरीजी विराजते थे। यह स्थान निम्बार्क-सम्प्रदायका है। केशव-काश्मीरीजी भी बड़े विद्वान् और तपस्वी थे। इन्होंने भी मुसलमानोंसे हिन्दुओंकी रक्षा की थी। गऊघाटपर प्राचीन विष्णु-स्वामी-सम्प्रदायका श्रीराधाविहारीजीका मन्दिर है। वैरागपुरामें प्राचीन विष्णुस्वामी-सम्प्रदायका विरक्तोंका मन्दिर है। इससे आगे मथुरासे पश्चिममें महाविद्यादेवीका मन्दिर है, जोकि बहुत ऊँचे टीलेपर है। इसके नीचे आस-पास बड़ा भारी जंगल था। जो संवत् १९५६ वि०के अकालमें कट गया, इससे वहाँ-की शोभा जाती रही। वहाँ नीचे एक सुन्दर कुण्ड है जो अब जीर्ण हो गया है। वहाँ पशुपति महादेवजीका मन्दिर है और उसके नीचे सरस्वती-नाला है। श्रीमद्भागवतमें एक प्रसंग है—

एकदा देवयात्रायां गोपाला जातकौतुकाः।
अनोभिरनडुद्युक्तैः प्रययुस्तेऽम्बिकावनम् ॥ १ ॥
तत्र स्नात्वा सरस्वत्यां देवं पशुपतिं विभुम्।
आनर्चुरर्हणैर्भक्त्या देवीं च नृपतेऽम्बिकाम् ॥ २ ॥

इसके बाद यह वर्णन है कि एक सर्प नन्दबाबाको रात्रिमें निगलने लगा, तब श्रीकृष्णजीने सर्पको लात मारी, जिससे वह शरीरको छोड़कर सुदर्शन विद्याधर हो गया। किन्हीं-किन्हीं टीकाकारोंका मत है कि यह लीला इसी महाविद्यास्थलकी है और किन्हीं-किन्हींका मत है कि यह अम्बिकावन दक्षिणमें है। अस्तु, उससे आगे चलकर सरस्वती-कुण्ड है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और सरस्वतीका मन्दिर है । और आगे चलकर चामुण्डाका मन्दिर है। चामुण्डासे मथुराको लौटती बार मार्गमें अम्बरीष-टीला पड़ता है । यहाँ अम्बरीष राजाने तप किया था। पर अब इस स्थानपर नीचे जाहरपीरका मठ है और टीलेके ऊपर हनुमान्‌जीका मन्दिर है ।

घाट

मथुरामें सुप्रसिद्ध और प्राचीन चौबीस घाट हैं—बारह दक्षिणकोटिके और बारह उत्तरकोटिके ।

परिक्रमा

मथुराकी परिक्रमा हरेक एकादशी और अक्षयनवमीको सामूहिकरूपसे दी जाती है । देवशयनी और देवोत्थापनी एकादशीको मथुरा-वृन्दावनकी एक साथ भी दी जाती है । कोई-कोई गरुडगोविन्दको भी शामिल कर लेते हैं । वैशाख-शुक्ल-पूर्णिमाको भी रात्रिमें परिक्रमा दी जाती है। इसको वन-विहारकी परिक्रमा कहते हैं। स्थान-स्थानपर गाना-बजाना होता है, कभी-कभी नाटक भी खेला जाता है । दाऊजीने द्वारकासे आकर वसन्तऋतुके दो मास व्रजमें रहकर जो अपने भक्तजनोंको सुख दिया था और वन-विहार किया था एवं यमुनाको खींचा था यह उसी लीलाकी स्मृति है । परिक्रमामें जो स्थान आते हैं वे यहाँ लिखे जाते हैं । इसमें चौबीस घाट भी आ जायँगे। विश्रामघाट, बलभद्रघाट, गतश्रमनारायणका मन्दिर, सतीका बुर्ज,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चर्चिकादेवी, योगघाट, पिप्पलेश्वर महादेव, योगमार्गवटुक, प्रयाग-घाट, वेणीमाधवका मन्दिर, श्यामघाट, कनखलतीर्थ, तिन्दुक-तीर्थ (जोकि नष्ट कर दिया गया है), सूर्यघाट, ध्रुवक्षेत्र (यहाँ तीर्थश्राद्ध होते हैं), ध्रुवटीला, सप्तर्षिटीला (इसके भीतरसे यज्ञ-भस्म निकलती है—सप्तर्षियोंके दर्शन हैं), कोटितीर्थ, रावणटीला, बुद्धतीर्थ, बलिटीला, रंगभूमि (कुवलयापीडस्थान, धनुषभङ्ग-स्थान, चाणूरमुष्टिकवध-स्थान, कंसटीला—ये सब प्राचीन नहीं मालूम होते हैं) रंगेश्वर महादेव, सप्तसमुद्रकूप, शिवताल*, बल-भद्रकुण्ड, भूतेश्वर महादेव, पोतराकुण्ड,जन्मभूमि, केशवदेवमन्दिर, कृष्णकूप, कुब्जाकूप, महाविद्या, सरस्वतीनाला, सरस्वतीकुण्ड, सरस्वतीमन्दिर, चामुण्डा, उत्तरकोटितीर्थ, गणेशतीर्थ, गोकर्णेश्वर महादेव, गौतमर्षिकी समाधि, सेनापतिका घाट, सरस्वतीसंगम, दशाश्वमेधघाट, अम्बरीषका टीला, चक्रतीर्थ, कृष्णगंगा, कालिञ्जर महादेव, सोमतीर्थ, गौघाट, घण्टाकर्ण मुक्तितीर्थ, ब्रह्मघाट, वैकुण्ठ-घाट, धारापतन, वसुदेवघाट†, प्राचीन विश्रामघाट, असिकुण्डा, वाराहक्षेत्र, द्वारकाधीशका मन्दिर, विश्रामघाट——ये मथुराके परिक्रमाके स्थान हैं। दूर होनेके कारण अब इनमेंसे उत्तर-दक्षिणके बहुत-से स्थान परिक्रमामें छोड़ देते हैं। बस, मथुरामें बड़े-बड़े दर्शनीय मन्दिर और स्थान ये ही हैं और छोटे-छोटे तो बहुत हैं।

---

* शिवताल भी राजा पटनीमलका बनवाया हुआ है।

† इसको ही सामीघाट कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकीर्णक

म्यूजियम–यह भी मथुरामें विचित्र वस्तु है। इसमें ऐतिहासिक मूर्ति आदि वस्तुओंका अच्छा संग्रह है। वहाँ गायत्रीटीलेमेंसे मिला हुआ एक पत्थर है जिसमें शेषजी, यमुनाजी और श्रीकृष्णको लिये हुए वसुदेवजी दिखाये गये हैं। उसमें मत्स्य, कच्छप, मगर भी बड़ी सुन्दरताके साथ दिखाये गये हैं। अबतक इसके सम्बन्धमें यह निश्चय हुआ है कि यह मूर्ति ईसासे दो सौ वर्ष पहलेकी है।

शिक्षा-विभाग

मथुरामें चार हाईस्कूल हैं–१–गवर्नमेण्ट-हाईस्कूल, २–मिशन-हाईस्कूल, ३–किशोरीरमण-हाईस्कूल, ४–चम्पा अग्रवाल-हाईस्कूल। एक हिन्दी-मिडिल स्कूल भी है। पहले जो मन्दिरोंके क्रमसे संस्कृत-पाठशाला लिख आये हैं उनके अतिरिक्त स्वर्गवासी स्वनामधन्य चौबे बैजनाथजी इटावानिवासीने शहरसे बाहर डेम्पीयर-नगरमें माथुर-विद्यालय स्थापित किया है। इसमें हिन्दी-अंग्रेजी-शिक्षाके अतिरिक्त संस्कृतकी उत्तमा-परीक्षातककी शिक्षा दी जाती है। स्वर्गीय राजा सेठ लक्ष्मणदासजी C.I.E. सी० आई०ई० के मुनीम रायबहादुर मंगीलालजीके ज्येष्ठ पुत्र प्रसिद्ध सेठ नारायणदासजीके द्रव्यसे बनी हुई एक नारायणदास-धर्मशाला है, जो मथुरासे कुछ दूर वृन्दावनकी सड़कपर है। इसमें भी एक संस्कृत-पाठशाला है, जिसमें काशीकी परीक्षाओंकी पढ़ाई होती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चर्चिकादेवी, योगघाट, पिप्पलेश्वर महादेव, योगमार्गवटुक, प्रयागघाट, वेणीमाधवका मन्दिर, श्यामघाट, कनखलतीर्थ, तिन्दुकतीर्थ (जोकि नष्ट कर दिया गया है), सूर्यघाट, ध्रुवक्षेत्र (यहाँ तीर्थश्राद्ध होते हैं), ध्रुवटीला, सप्तर्षिटीला (इसके भीतरसे यज्ञभस्म निकलती है—सप्तर्षियोंके दर्शन हैं), कोटितीर्थ, रावणटीला, बुद्धतीर्थ, बलिटीला, रंगभूमि (कुबलयापीडस्थान, धनुषभङ्गस्थान, चाणूरमुष्टिकवध-स्थान, कंसटीला—ये सब प्राचीन नहीं मालूम होते हैं) रंगेश्वर महादेव, सप्तसमुद्रकूप, शिवताल*, बलभद्रकुण्ड, भूतेश्वर महादेव, पोतराकुण्ड,जन्मभूमि, केशवदेवमन्दिर, कृष्णकूप, कुब्जाकूप, महाविद्या, सरस्वतीनाला, सरस्वतीकुण्ड, सरस्वतीमन्दिर, चामुण्डा, उत्तरकोटितीर्थ, गणेशतीर्थ, गोकर्णेश्वर महादेव, गौतमर्षिकी समाधि, सेनापतिका घाट, सरस्वतीसंगम, दशाश्वमेधघाट, अम्बरीषका टीला, चक्रतीर्थ, कृष्णगंगा, कालिञ्जर महादेव, सोमतीर्थ, गौघाट, घण्टाकर्ण मुक्तितीर्थ, ब्रह्मघाट, वैकुण्ठघाट, धारापतन, वसुदेवघाट†, प्राचीन विश्रामघाट, असिकुण्डा, वाराहक्षेत्र, द्वारकाधीशका मन्दिर, विश्रामघाट—ये मथुराके परिक्रमाके स्थान हैं। दूर होनेके कारण अब इनमेंसे उत्तर-दक्षिणके बहुत-से स्थान परिक्रमामें छोड़ देते हैं। बस, मथुरामें बड़े-बड़े दर्शनीय मन्दिर और स्थान ये ही हैं और छोटे-छोटे तो बहुत हैं।

---

* शिवताल भी राजा पटनीमलका बनवाया हुआ है।

† इसको ही सामीघाट कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकीर्णक

म्यूजियम—यह भी मथुरामें विचित्र वस्तु है। इसमें ऐतिहासिक मूर्ति आदि वस्तुओंका अच्छा संग्रह है। वहाँ गायत्रीटीलेमेंसे मिला हुआ एक पत्थर है जिसमें शेषजी, यमुनाजी और श्रीकृष्णको लिये हुए वसुदेवजी दिखाये गये हैं। उसमें मत्स्य, कच्छप, मगर भी बड़ी सुन्दरताके साथ दिखाये गये हैं। अबतक इसके सम्बन्धमें यह निश्चय हुआ है कि यह मूर्ति ईसासे दो सौ वर्ष पहलेकी है।

शिक्षा-विभाग

मथुरामें चार हाईस्कूल हैं—१—गवर्नमेण्ट-हाईस्कूल, २—मिशन-हाईस्कूल, ३—किशोरीरमण-हाईस्कूल, ४—चम्पा अग्रवाल-हाईस्कूल। एक हिन्दी-मिडिल स्कूल भी है। पहले जो मन्दिरोंके क्रमसे संस्कृत-पाठशाला लिख आये हैं उनके अतिरिक्त स्वर्गवासी स्वनामधन्य चौबे बैजनाथजी इटावानिवासीने शहरसे बाहर डेम्पीयर-नगरमें माथुर-विद्यालय स्थापित किया है। इसमें हिन्दी-अंग्रेजी-शिक्षाके अतिरिक्त संस्कृतकी उत्तमा-परीक्षातककी शिक्षा दी जाती है। स्वर्गीय राजा सेठ लक्ष्मणदासजी C.I.E. सी० आई०ई० के मुनीम रायबहादुर मंगीलालजीके ज्येष्ठ पुत्र प्रसिद्ध सेठ नारायणदासजीके द्रव्यसे बनी हुई एक नारायणदास-धर्मशाला है, जो मथुरासे कुछ दूर वृन्दावनकी सड़कपर है। इसमें भी एक संस्कृत-पाठशाला है, जिसमें काशीकी परीक्षाओंकी पढाई होती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। यहाँ एक पुस्तकालय भी है। इसमें रामानुजीय वैष्णवोंके ठहरने तथा भोजनादिका प्रबन्ध है और अभ्यागतोंको भी चने मिलते हैं।

धर्मशालाएँ

मथुरासे बाहर वृन्दावन-दरवाजेसे आगे चलकर बाबू कल्याणसिंहजी भार्गवकी बनायी हुई बड़ी सुन्दर पक्की संगीन धर्मशाला है। इसमें उच्च-श्रेणी और निम्न-श्रेणीके यात्रियोंके ठहरनेका पृथक्-पृथक् प्रबन्ध है, परन्तु शहरसे दूर होनेके कारण उच्च-श्रेणीके यात्री कम ठहरते हैं। इस धर्मशालाके पास नृसिंहगढ़ एक तपःस्थल है, यहाँ नरहरिनामके एक पहुँचे हुए महात्मा हो गये हैं। इन्होंने चार सौ वर्षके होकर अपना शरीर-त्याग किया था। महेश्वरीयोंकी धर्मशाला वृन्दावन-दरवाजेपर है इसमें बरातें अधिक ठहरती हैं। हाथरसवालोंकी धर्मशाला, कलकत्तावालोंकी धर्मशाला, सिन्धी-धर्मशाला, बीकानेरियोंकी धर्मशाला, लुहाणोंकी धर्मशाला, भाटियोंकी धर्मशाला, पंजाब्रियोंकी धर्मशाला आदि सौसे ऊपर धर्मशालाएँ हैं। पर इनमें हाथरसवालोंकी और कलकत्तावालोंकी धर्मशालाएँ सच्ची धर्मशालाएँ हैं क्योंकि इनमें सब देशोंके और सब जातियोंके उच्चवर्णके सज्जन ठहर सकते हैं। औरोंमें जिन देशवालोंने बनवायी हैं उन्हीं देशोंके मनुष्य ठहर सकते हैं। इनसे भी उच्च एक धर्मशाला और है जो महाराजा अवागढ़की बनवायी हुई है। उसमें हर एक हिन्दू अपनी इच्छाके अनुसार चाहे जितने दिन ठहर सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दरवाजे

मथुरामें चार दरवाजे हैं। १—भरतपुर-दरवाजा, २—डीग-दरवाजा, ३—वृन्दावन-दरवाजा, ४—होली-दरवाजा। तीन दरवाजे तो केवल नाममात्रके हैं। इनमें दरवाजे नहीं हैं। होली-दरवाजा बड़ा सुन्दर और विशाल पत्थरका बना हुआ है। फाटक इसमें भी नहीं हैं। इसमें घण्टाघर है। इसे हार्डिंग कलक्टरने बनवाया था, इसीलिये इसे हार्डिंग-गेट भी कहते हैं।

अन्यान्य स्थान

होली-दरवाजेके पास कुछ आगे चलकर रंगेश्वर महादेवका मन्दिर है उसके सामने कुछ आगे चलकर गवर्नमेण्ट-हास्पिटल (अस्पताल) है, जिसके दरवाजे और कुछ इमारतके लिये श्रीनाथजीके टीकायत गोस्वामीजीने पचास हजार रुपये दिये थे। किन्तु मथुराकी धार्मिक जनताके लिये यहाँ एक बड़े धर्मार्थ आयुर्वेदीय औषधालयकी विशेष आवश्यकता है। दो बैंकें हैं—एक इलाहाबाद-बैंक, दूसरी इम्पीरियल बैंक। यहाँ सरकारी गोरों और कालोंकी फौज भी सदा रहा करती है। यमुनासे पार जानेके लिये पहले नावोंका पुल था, फिर लोहेके पीपोंका, उसके बाद फिर पक्का पुल बन गया है, जो अब कई सालसे फ्री (बे-टिकट) हो गया है। चार रेलवे-स्टेशन हैं—१—मथुराकैण्टोमेण्ट, २—मथुराजंकशन, ३—मसानी (मथुरा-सिटी), ४—भूतेश्वर। यहाँपर सरकारी कचहरियाँ भी कई हैं—कलक्टरी, तहसील, दो मुंसिफी, दो जजी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कचहरियोंके पास डिस्ट्रिक्टबोर्ड और गंगा-नहर, यमुना-नहरोंके दफ्तर हैं। म्यूनिसिपिल्टी भी है जिसमें चार मुसलमानमेम्बरों, एक चौबे मेम्बर और दो सरकारी मेम्बरोंके स्थान संरक्षित (रिजर्व) हैं, शेष नौ मेम्बर पब्लिककी ओरसे चुने हुए हैं। इस कमेटीके द्वारा नगरकी सफाई, बिजलीकी रोशनी, नलका जल और स्वास्थ्यका प्रबन्ध होता है जो साधारणतः अच्छा है। जबसे अनिवार्य शिक्षा हुई है तबसे म्यूनिसिपिल्टीने लोअर और अपर प्राइमरी मदरसे बहुत बढ़ा दिये हैं और टाउनस्कूल भी इसीके प्रबन्धमें है। अन्त्यजोंके लिये अलग पाठशाला है। कई कन्या-पाठशालाएँ हैं। एक पटवारियोंका स्कूल भी है पर यह म्यूनिसिपिल्टीके अधीन नहीं है।

व्यापार

यहाँके पेड़े, खुरचन, सूतकी निवाड़ और डोर, ताँबेके करुए, ठाकुरजीके सलमा-सितारे और सोने-चाँदीके मुकुट, किरीट आदि शृङ्गार, चन्दन और हाथीदाँतके चँवर, पंखे आदि बहुत अच्छे बनते हैं। अब कपड़ोंकी सुन्दर छपाईका काम भी बहुत होने लगा है।

विद्वान्

पहले यहाँ एक-एक, दो-दो शास्त्रोंके पूर्ण ज्ञाता गणना-योग्य विद्वान् बहुत थे। यहाँके ही शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। अब वह बात नहीं रही। पर अब भी व्याकरण, साहित्य,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गणित (दृश्य और प्राचीन दोनों), वैद्यक, श्रीमद्भागवत, मन्त्रशास्त्र, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड आदिके उत्तम विद्वान् समयानुसार विद्यमान हैं और प्रतिवर्ष परीक्षोत्तीर्णोंसे इनकी संख्या बढ़ती जाती है। मथुरा यमुनाजीके किनारेपर बसती है। परलीपारसे खड़े होकर देखनेसे अथवा रेलमें बैठे देखनेसे बड़ी शोभा दीखती है। पर अब घाटोंपरसे यमुनाके हट जानेसे और बीच-बीचमें रेती पड़ जानेसे बड़ा बुरा दृश्य दीखता है। अस्तु।

मधुवन

(महोलीगाँव)—यह गाँव मथुरासे दक्षिण-पश्चिमके बीच चार या पाँच मीलकी दूरीपर है। यहाँ श्रीरामचन्द्रजीके भाई शत्रुघ्नजीने मधुदैत्यके किलेको नष्टकर तथा वनको उजाड़कर और लवणासुरको मारकर मधुपुरी बसायी थी। पीछे यही मथुरा कहलायी। यद्यपि मथुरा अनादिकालसे थी पर मधुदैत्य और उसके पुत्र लवणासुरने उसको उजाड़कर अपनी राक्षस तथा दैत्य-प्रजाको वहाँ बसा रक्खा था और सबका नाम मधुवन रख छोड़ा था। परन्तु उसमें इतना भेद है कि मथुरा सदासे यमुना-तटपर बसती है और यह मधुपुरी कुछ मील दूर है। सम्भव है कि प्राचीन-कालमें नगर, किला, वन—सब मिलाकर इतने फेरमें रहे हों। किसी-किसीका मत है—पहले मथुराको भी मधुरा कहते थे। मधुरा, मधुवन, मधुपुरी एकके ही नाम हैं। मधुवनमें कृष्णकुण्ड है और चतुर्भुज, कुमरकल्याण तथा ध्रुवजीका मन्दिर, महाप्रभुजीकी बैठक है। यहाँ-पर भादों बदी एकादशीको मेला होता है। इससे आगे दक्षिणकी ओर—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तालवन (तारसीगाँव)

—है। यहाँ श्रीबलरामजीने धेनुकासुरको मारा था। यहाँ बलभद्र-कुण्ड और बलदेवजीका मन्दिर है। इससे आगे—

कुमुदवन

—है। कपिल मुनिके दर्शन, लाल कदमके नीचे ठाकुरजीकी बैठक, महाप्रभुजीकी बैठक और विहारकुण्ड है। इसमें कमल बहुत होते हैं। यहाँसे लौटकर मधुवन आना होता है।

वहाँसे सतोहाके मार्गमें—

गिरिधरपुर

—में चामुण्डादेवीके दर्शन हैं—

शान्तनुकुण्ड (सतोहागाँव)

—इसमें शान्तनुकुण्ड, गिरिधारीजी, बलदेवजी और शान्तनुके मन्दिर हैं, गुसाईंजीकी बैठक है। सन्तानकी इच्छावाले इस कुण्डमें स्नान करते हैं और बलदेवजी तथा शान्तनु महाराजके मन्दिरके पीछे गोबरके सतिये (स्वस्तिक) रखते हैं। भादों सुदी छट्ठिको यहाँ बड़ा मेला होता है और हर रविवारी सप्तमीको भी मेला होता है। इससे आगे—

दतियागाँव

—है जहाँ भगवान्‌ने भागकर आये हुए दन्तवक्रको मारा है इस समय आप व्रजमें फिर आये थे। इससे आगे—

गन्धर्वेश्वर (गणेशरागाँव)

—है। यहाँ गन्धर्वकुण्ड है। इससे आगे—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खेचरीगाँव

—है (यह पूतनाका गाँव है) यहाँ भी एक कुण्ड है । (व्रजके ये जितने धाम हैं इनमें यात्राके अनुसार, जैसे हम लिख रहे हैं, वैसे भी पहुँच सकते हैं और मथुरासे स्वतन्त्र मार्गसे भी पहुँच सकते हैं ।) इससे आगे—

बहुलावन (वाठीगाँव)

—है । यहाँ कृष्णकुण्ड, कृष्ण-बलदेवजी तथा बहुलागायका मन्दिर है । महाप्रभुजीकी बैठक है । इससे आगे—

तोषगाँव

—है । तोष भगवान्का सखा था; उसका यह गाँव है । यहाँ तोष-कुण्ड है । इससे आगे—

जाखिन (यक्षहन्गाँव)

—है । यहाँ रोहिणीकुण्ड और बलदेवजीका मन्दिर है—

मुखराइ (मोक्षराजतीर्थ)

—यहाँ मुखरादेवीका मन्दिर है । वाठीसे दूसरा मार्ग और है—

रारगाँव

—में बलभद्रकुण्ड, बलभद्रमन्दिर है—

जसोदीगाँव

—में सूर्यकुण्ड है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वसोदीगाँव

—में वसन्तकुण्ड, ललिताकुण्ड, राजकदम्ब-वृक्षमें मुकुटका चिह्न, बड़का वृक्ष। यहाँ श्रीराधाकृष्ण प्रथम ही झूला झूले हैं।

राधाकुण्ड

—यहाँ राधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, राधाबल्लभ महाप्रभुजी, गुसाईंजी, गोकुलनाथजीकी बैठकें हैं। बैठक उसे कहते हैं कि जहाँ बैठकर इन आचार्योंने श्रीमद्भागवतके सप्ताह-पारायण किये हैं। गोविन्ददेव (यहाँ गिरिराजकी जिह्वाके दर्शन हैं), पाण्डव श्रीकृष्ण (वृक्षरूप) और बंगाली महात्माओंके स्थापन किये अनेक मन्दिर हैं। विष्णुस्वामी सम्प्रदायके प्रयागदत्तजी गोस्वामी-की धर्मशाला है। राधाकुण्डमें बहुत-से अकिञ्चन बंगाली महात्मा निवास करते हैं। जिस समय भगवान् श्रीकृष्णने अरिष्टासुरको मारा था जो कि बैलके रूपमें था तब गोप और गोपियोंने भगवान्से कहा कि 'तुमको बैलके मारनेकी हत्या लगी है, सो किसी तीर्थमें स्नान करके शुद्ध होओ'। तब श्रीराधिकाजीने अपने श्रीहस्तोंसे धरती खोदकर जल निकालना प्रारम्भ किया। इधर श्रीकृष्णने भी उसी प्रकार कुण्ड खोदा। इस प्रकार राधाकुण्ड और कृष्णकुण्ड बने। तब राधाकुण्डमें भगवान्ने स्नान किया। वह अरिष्टासुर जहाँ मारा गया था उस स्थानका नाम अरिष्टगाँव हुआ और आजकल उसे अड़ींग कहते हैं।

यहाँ इतने तीर्थ और हैं। जैसे कि—वज्रकुण्ड, विसाखाकुण्ड, ललिताकुण्ड, अष्ट सखियोंके कुण्ड, गोपीकूप और इसके समीपमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

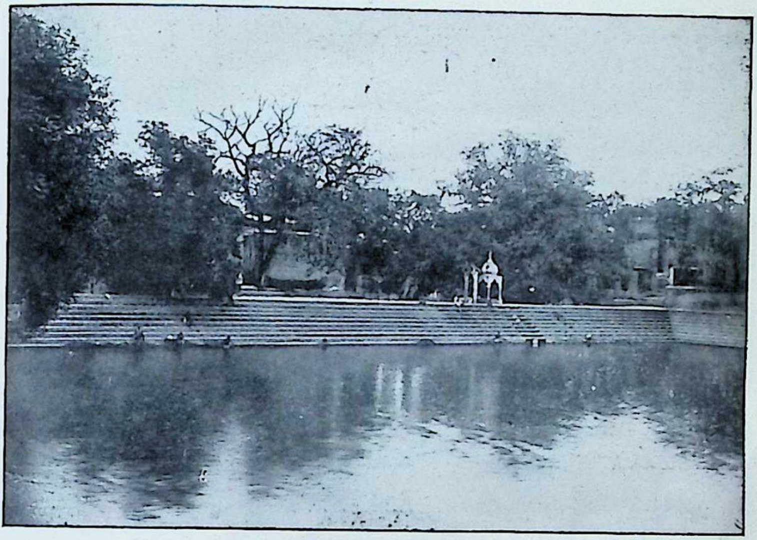

श्रीराधाकुण्ड पृष्ठ २८

 श्रीकृष्णकुण्ड पृष्ठ २८

Nepal Sanskrit University Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुसुम-सरोवर

पृष्ठ २६

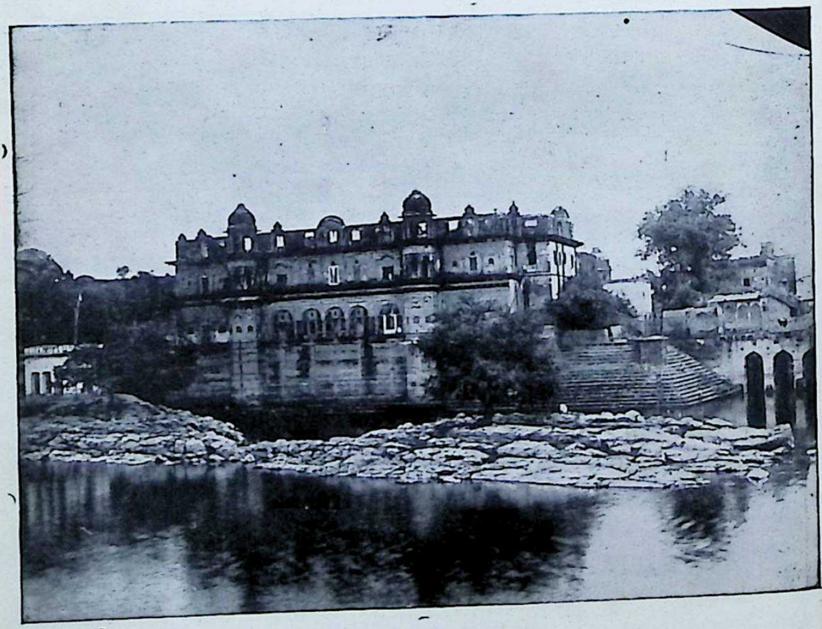

मानसी गंगा, खास महल (गोवर्द्धन)

पृष्ठ ३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्धवकुण्ड जहाँ उद्धवजी एक रूपसे गुल्मलता बनकर निवास करते हैं, दूसरे रूपसे बदरिकाश्रममें। नारदकुण्ड और उद्धवजीके दर्शन हैं। इसके अनन्तर ग्वालपोखरा, रत्नसिंहासन, किलोलकुण्ड हैं।

गोवर्धन

राधाकुण्डसे गोवर्धन तीन मील है। मार्गमें एक सरकारी पत्थर गड़ा हुआ है जिसमें शिकार खेलने, मोर, हिरन आदि मारनेके निषेधका हिन्दी, फारसी और अंग्रेज़ीमें फर्मान है। इसी बीचमें बहुत रमणीक और विशाल बहुत सुन्दर नकासीके कामका पत्थरका बना हुआ पक्का एक तालाब है, जिसको कुसुमसरोवर (कुसुमोखर) कहते हैं, जिसे भरतपुरके राजा सूरजमलके लड़के जवाहरसिंहने दिल्लीकी लूटके द्रव्यसे बनवाया था। इससे पूर्व यह साधारण बना हुआ था। इसके पास राजा सूरजमल जवाहर सिंहकी विशाल छत्री भी है जो देखने ही योग्य है। गोवर्धन सात कोसका पर्वत है। इसको गिरिराज भी कहते हैं। इसकी ऊँचाई पहले बहुत थी अब बहुत थोड़ी रह गयी है। पहले इनका दर्शन अड़ींगसे होता था अब सौ-दो सौ गजकी दूरीसे भी नहीं होता है। प्रतीत होता है कि ये पृथिवीमें धीरे-धीरे समाते जाते हैं। कदाचित् किसी दिन सारे ही समा जायँ। यहाँ भजनानन्दी बङ्गाली महात्मा बहुत रहा करते हैं। यहाँ वज्रनाभके पधराये हुए हरिदेवजी थे। पर औरङ्गजेबके समयमें वे यहाँसे चले गये। अब उस स्थानपर दूसरी मूर्ति विराज रही है। यह मन्दिर बहुत सुन्दर है, इसके व्यय-निर्वाहार्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ गाँव भी लगे हैं। दूसरा मन्दिर चक्रेश्वर (चक्लेश्वर) महादेवजीका है। यह भी वज्रनाभके पधराये हुए हैं। महाप्रभुजीकी बैठक है। दूसरी ओर गोसाईंजीकी बैठक है। चरणके चिह्न और मनसादेवीके दर्शन हैं। यहाँसे आगे बसईगाँव है जहाँ नन्दरायजी बसे हैं। बसईकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड है (पर इधर यात्रा नहीं जाती)। मानसीगंगाके ऊपर गिरिराजजीका मुखारविन्द है, जिसमें मुकुटकी आकृतिका प्रत्यक्ष दर्शन होता है, यहीं गिरिराजजीका पूजन हुआ करता है। गिरिराजजीके ऊपर और आस-पास गोवर्धनगाँव बस रहा है। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमाको और कार्तिक कृष्ण अमावस्याको बड़ा मेला होता है। यहाँपर मानसीगंगा है, जिसको भगवान्ने अपने मनसे उत्पन्न किया था। इसके तीन तरफ बड़े सुन्दर घाट बने हुए हैं, चौथी तरफ गिरिराजजी विराजमान हैं, वास्तवमें मानसीगंगाके बीचमें गिरिराज हैं। यह एक अद्भुत दृश्य है। दीवालीके दिन इन घाटोंपर मनों घीके दीपक जलाये जाते हैं। उनकी जलके भीतर बड़ी शोभा दीखती है।

मानसीगंगासे पश्चिम सखीतरा (सखीस्थलगाँव) है, जो चन्द्रावलिजीका श्वशुरालय है। गोवर्धनकी दण्डवती परिक्रमा भी बहुत दी जाती है। पहले पृथिवीपर लेट जाते हैं और जहाँतक हाथ फैलते हैं वहाँ अँगुलीसे लकीर खींच देते हैं और फिर उठकर उसी लकीरसे आगेकी ओर दण्डवत् प्रणाम करते हैं इसी तरह दण्डवत् प्रणाम करते चले जाते हैं और एक अठवारेसे लेकर पन्द्रह दिनतकमें इस प्रकारकी दण्डवती परिक्रमाको पूरी कर लेते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मानसीगंगापर श्रीलक्ष्मीनारायणजीका मन्दिर है जो कि उत्तर-भारतमें श्रीरामानुजसम्प्रदायकी गोवर्धनगद्दीके नामसे प्रसिद्ध सिद्धस्थल है। गोवर्धनमें भरतपुरके राजाओंकी बनवायी हुई छत्रियाँ (समाधि) और दूसरी-दूसरी इमारतें बड़ी सुन्दर-सुन्दर हैं। एक दो मन्दिर भी नये बने हुए अच्छे हैं। इसमें ये कुण्ड हैं—गोरोचन, धर्मरोचन, पापमोचन, ऋणमोचन। इनमें पिछले तो वर्षाऋतुके सिवा और ऋतुमें सूखे पड़े रहते हैं। पहले भी अच्छी दशामें नहीं हैं। एक निवृत्त-कुण्ड भी है। यहाँ किशोरीलाल-अनाथालय है और कुँवर सज्जनसिंहजी सिंहवीकी धर्मशाला है। प्रायः यात्री इसीमें बहुत ठहरा करते हैं क्योंकि यहाँ बहुत आराम मिलता है। और भी कई धर्मशालाएँ हैं, सफाखाने हैं, लड़के-लड़कियोंके स्कूल हैं। मथुरासे दीघको जो सड़क जाती है और गिरि गोवर्धनके ऊपर होकर जहाँपर निकलती है वह स्थान दानघाटी कहलाता है। यहाँ कृष्ण महाराज दान लिया करते थे और इस घाटीपर दान-रायजीका मन्दिर भी है। इसी गोवर्धनके आस-पास बीस कोसके बीचमें सारस्वतकल्पमें वृन्दावन था और इसीके पास यमुनाजी बहती थीं। जैसा कि श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

वृन्दावनं गोवर्धनं यमुनापुलिनानि च।
वीक्ष्यासीदुत्तमा प्रीती राममाधवयोर्नृप॥

स्कन्दपुराणमें भी लिखा है—

अहो वृन्दावनं रम्यं यत्र गोवर्धनो गिरिः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बृहद्गौतमीय तन्त्रमें लिखा है—

पञ्चयोजनमेवास्ति वनं मे देहरूपकम् ।
कालिन्दीयं सुषुम्नाख्या परमानन्दवाहिनी ॥

जहाँ उस समय यमुनाजी बहती थीं वहाँ जमनाउतोगाँव अबतक प्रसिद्ध है । यदि वर्तमान वृन्दावनको ही सारस्वतकल्पका वृन्दावन माना जाय तो यह एक शङ्का उपस्थित होती है कि यज्ञके बन्द होनेपर इन्द्रने वर्षा करके व्रजका नाश करना चाहा था तब गाय, गोप और गोपियोंकी प्रार्थनासे गोवर्धनको उठाकर भगवान्‌ने व्रजकी रक्षा की थी । पर ऐसी वर्षा होते रहते गोपी, गायें और उनके बच्चे तथा सब घरका सामान वर्तमान वृन्दावनसे अठारह मील चलकर गोवर्धनतक सकुशल कैसे पहुँच सकते थे ? इसलिये मानना ही पड़ेगा कि उस समय अर्थात् सारस्वतकल्पमें गोवर्धनके पास ही वृन्दावन बसता था । वर्तमान वृन्दावनको वर्तमान श्वेतवाराहकल्पका मान लेना उचित प्रतीत होता है । प्रति कल्पोंमें कुछ-कुछ लीलाओंमें भी तारतम्य हुआ करता है । अस्तु, यहाँसे दो मार्ग हैं, एक तो सीधा चन्द्रसरोवरको दूसरा 'जमनाउतो' होकर चन्द्रसरोवरको—

जमनाउतोगाँव—

—यहाँ जमनाजीका निकुञ्ज है । यहाँ अष्टसखाओंमेंसे कुम्भनदासजी निवास करते थे और आपके नामसे ही यहाँ पोखरा और खिड़क प्रसिद्ध हैं । आजकल यात्रा दानघाटीसे अड़ींग आदि स्थलोंमें होती हुई गोवर्धनके पूर्वभागसे पश्चिमभागको जाती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहले गोवर्धनसे 'वहज' होकर 'परमदरे' जाती थी।

अड़ींग अरिष्टगाँव अथवा अरिग्रहगाँव

अरिष्टगाँवके नामका कारण तो पहले लिखा गया है। पर किन्हीं महानुभावोंका कथन है कि कंसके मरनेसे डरकर उसके आठ भाई मथुरासे भाग गये, उनको पकड़ने और मारनेके लिये बलभद्रजी पीछे-पीछे दौड़े और यहाँ आकर उनको पकड़ा तथा मारा। इससे इसका नाम 'अरिग्रह' और आजकल 'अड़ींग' हुआ। यहाँ बलदेवजीका मन्दिर और बलभद्रकुण्ड हैं। इससे भी यह कल्पना ठीक जँचती है। कोई-कोई अरिष्टासुरकी कथाका सम्बन्ध भाण्डीरवनसे बताते हैं।

माधुरीकुण्ड

यहाँ माधुरी मोहनका मन्दिर है। अब डेरी फार्म भी यहाँ बन गया है। इसकी गायें बहुत सुन्दर हैं, दूध भी कुछ सस्ता बिकने लगा है।

भवनपुरा

यह गाँव भवानीमायाका है।

दुवेलेका गाँव दुवेलाकुण्ड, पारासौली (परम रासस्थली)

यहाँ ही भगवान्‌ने गोपियोंके साथ शरद्पूनोको महारास किया था। रासचौंतरा, चन्द्रविहारीका मन्दिर, महाप्रभुजी, गोसाईंजी, गोकुलनाथजीकी बैठकें हैं। श्रीनाथजीका जलघड़ा और इन्द्रके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

औंधे नगाड़े पड़े हैं। बहुत बड़े और भारी दुन्दुभीके आकारके दो पत्थर हैं जिनमें बजानेसे नगाड़ोंकी-सी आवाज होती है।

यहाँ चन्द्रसरोवर है। रासके प्रारम्भमें चन्द्रोदय होनेसे चन्द्रमाकी किरणोंसे वन रँग गया था और चन्द्रमाका प्रतिबिम्ब इस सरोवरमें दीखा था। यहाँपर ही अष्टछापके अनुपम कवि श्रीसूरदासजीने निम्नलिखित पद गाते-गाते अपना भौतिक शरीर-त्याग किया था। वह पद यह है—

खञ्जन-नैन रूप-रस-माते।
अतिसै चारु चपल अनियारे,
पल-पिंजरा न समाते॥
चलि चलि जात निकट स्रवननिके,
उलट पुलट ताटंक फँदाते।
'सूरदास' अञ्जन-गुन अटके,
नतरु अबहि उड़ जाते॥

मोहकुण्ड पैठोगाँव

व्रजमें घुसनेको (अन्दर जानेको) पैठना कहते हैं—यहाँ श्रीकृष्णके पैठनेकी गुफा है। चतुर्भुजनाथजीका मन्दिर है। नारायण-सर है। लक्ष्मीकूप, ऐंठाकदम्ब, क्षीरसागर, बलभद्रकुण्ड है।

वछगाँव (वत्सग्राम)

बछड़ोंके चरानेका स्थान। यहाँ छः कुण्ड हैं—१—कनकसागर, २—सहस्रकुण्ड, ३—(माखन-चोर-ठाकुर) रामकुण्ड, ४—अड़वारो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

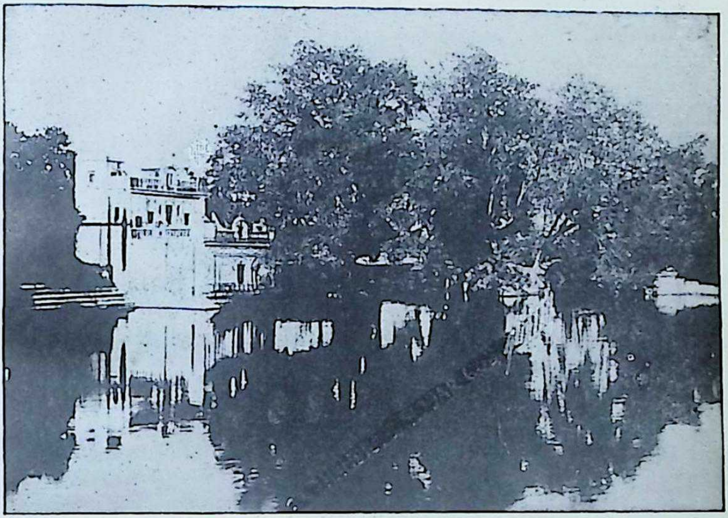

चन्द्रसरोवर पृष्ठ ३४

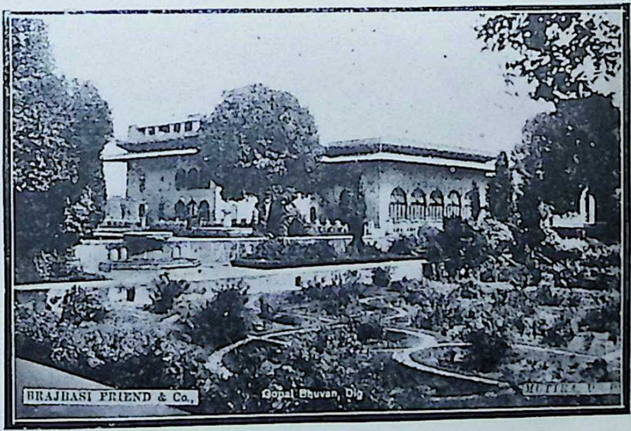

गोपालभवन (डीग) पृष्ठ ३८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

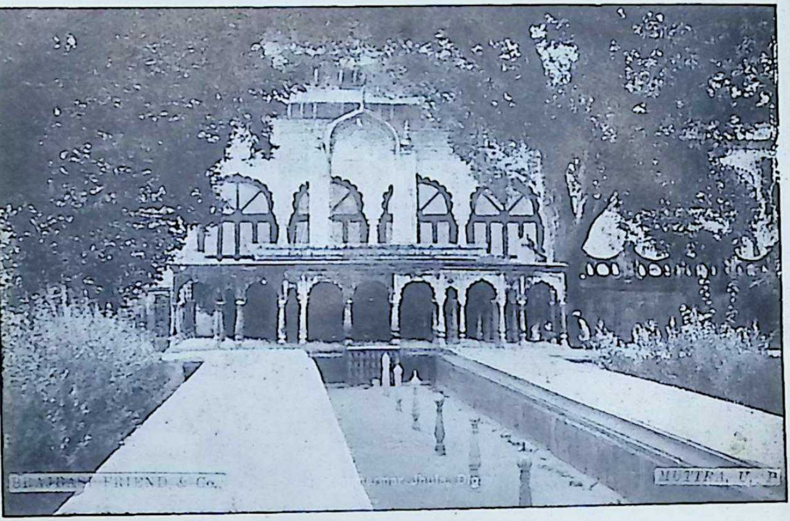

संगमरमर-झूला (डीग) पृष्ठ ३८

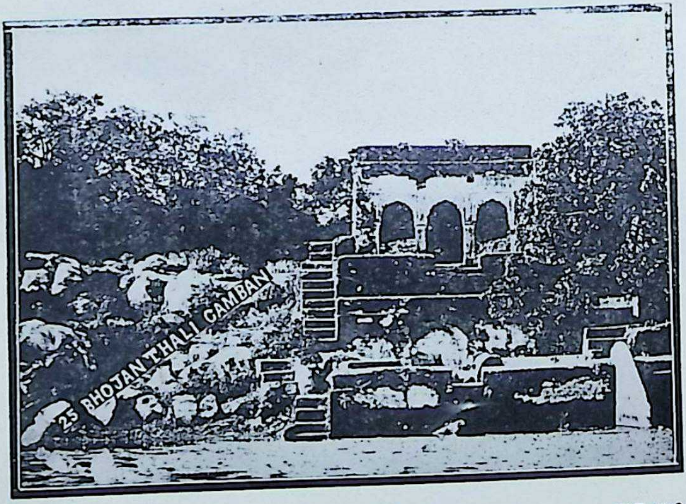

भोजनथाली पृष्ठ ४१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुण्ड, ५–(वत्सविहारी-ठाकुर) रावरीकुण्ड, ६–सूर्यकुण्ड।

आन्यौर

इसके सम्बन्धमें ऐसा कहा करते हैं कि जब भगवान्‌ने गोवर्धनकी पूजा की और अन्नकूटका भोग लगाया तब आप ही बहुत विशालरूप धारणकर गिरिराजके ऊपर प्रत्यक्ष विराजमान होकर चारों ओरसे भोग लगाने (भोजन करने) लगे। उस समय यह भी कहते जाते थे कि 'आनो और' अर्थात् 'और लाओ' इसीसे उस स्थानका नाम आनोर या 'आन्यौर' पड़ गया। यहाँ 'गौरीकुण्ड' है। यहाँ श्रीराधिकाजीने गौरीका पूजन किया है। यहाँसे फिर गिरिराजजीका पूर्वीय भाग मिलता है। यहाँ गिरिराजजीमें कई प्रकारके विलक्षण चिह्न, दहीकटोरा, टोपी, मोजा आदिके दर्शन होते हैं और संकर्षण-कुण्ड, बलदेवजीका मन्दिर है। बाजनीशिला—जिसमें छड़ी या अँगुली लगानेसे आवाज होती है। आगे–

केसरीकुण्ड, गन्धर्वकुण्ड, गोविन्दकुण्ड

–है। यहाँ ही इन्द्रने और सुरभीने भगवान्‌का प्रसिद्ध गोविन्दाभिषेक किया था। यहाँ ही भगवान्‌का गोविन्द नाम रक्खा गया था। गोविन्दकुण्डकी महिमा स्कन्दपुराण-कृष्णखण्डमें है–

'यत्राभिषिक्तो भगवान्मघोना यदुवैरिणा।
गोविन्दकुण्डं तज्जातं स्नानमात्रेण मोक्षदम्॥'

महाप्रभुजीकी बैठक और चतुरानागाके यहाँ श्रीनाथजीके दर्शन हैं। यहाँ गिरिराजमें छड़ी (लाठी) का चिह्न है। मुकुट तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्ताक्षरके चिह्न हैं। इससे दक्षिणकी ओर महादेवजी बैलपर बैठे हुए तथा श्रीराधाकृष्णके दर्शन होते हैं पर कुछ दूरसे खड़े होनेपर होते हैं, पास जानेपर नहीं होते केवल रेखा-से ही दीखते हैं। यह इसमें विचित्रता है। इससे आगे सिन्दूरीशिला है जिसमें हाथ लगानेसे हाथमें सुर्खी आ जाती है। आगे गिरिराजका अन्तिम भाग है, जिसे पूँछरी कहते हैं। यहाँ अप्सराकुण्ड, नवलकुण्ड है। 'पूँछरीको लौठा' नामक गोपका मन्दिर है। वहाँ रामदासजीकी गुफा है। इससे आगे कृष्णदासजीभूतका कुँआ है। इससे आगे—

श्यामढाक

—है। यहाँ गोपीतलाई, गोपसागर, श्यामढाक, ठाकुरजीका मन्दिर और जलघड़ा—ये चार स्थल हैं। श्याम-तमालके नीचे बैठक है, और अनेक विचित्र चिह्न हैं। यहाँसे आगे चारों ओर लीलास्थल हैं। इससे आगे पीछेका क्रम नहीं है। 'चरणघाटी' है, जहाँ श्रीठाकुरजी, सुरभी गाय, ऐरावत हाथी, उच्चैःश्रवा घोड़ाके चरण-चिह्न हैं। ढूका बलदेवजीका मन्दिर, ऊपर बैठे हुए बलदेवजी तलहटीमें चरती हुई गायोंको 'ढूक' झुककर देखते रहते थे। काजलीशिला (हाथको काला करनेवाली), सुरभीकुण्ड, ऐरावतकुण्ड और अष्टछापके प्रसिद्ध कवि श्रीगोविन्द-स्वामीकी कदम्बखण्डी* और गुफा, हरजूकी पोखर, हरजूकुण्ड आदि स्थान हैं।

---

* कदम्बखण्डी या क्यार कदम्बोंके सघन वनको कहते हैं। इनमें चौक और क्यारियाँ बने होते हैं। यह दर्शनीय होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जतीपुरा

इसमें श्रीवल्लभाचार्यके वंशज गोस्वामियोंकी सात गद्दियोंके सात मन्दिर हैं। यहाँ अन्नकूटके दर्शन अच्छे होते हैं। इसके अतिरिक्त गोस्वामियोंकी यात्रा जब यहाँ पहुँचती है तब भी अन्नकूटके-से पदार्थ बनाकर भगवान्‌के भोग लगाते हैं! इसको 'कुनवाड़ा' कहते हैं। यह कुनवाड़ा जब-तब किसी गोस्वामी अथवा सेवकका मनोरथ होता है तब भी हो जाता है। जतीपुरामें भी गिरिराजजीका मुखारविन्द बतलाया जाता है। उस स्थानपर गोस्वामिवृन्द श्रीनाथजीका-सा बड़ा सुन्दर शृंगार करते हैं। मुखारविन्दपर दूध बहुत चढ़ाया जाता है, जिससे कि दूधका नाला-सा बह निकलता है। महाप्रभुजीकी बैठक, नाभिका चिह्न, श्रीनाथजीके प्रकट होनेका स्थान है। जतीपुरामें गिरिराजमें कई कन्दराएँ हैं और गिरिराजके ऊपर वर्षाकी बूँदोंके चिह्न दिखायी पड़ते हैं। तलहटीमें (नीचे) श्रीराधिकाजीका तीजका चबूतरा, दण्डोतीशिला आदि हैं। आगे—

रुदनकुण्ड

—बूढ़े बाबू महादेवजीका मन्दिर, सूर्यकुण्ड, विलछूवन है। यहाँ भगवान्‌की कन्दुकक्रीड़ा (गेंदबल्ली) का स्थल (चौगान) है। यहाँ राधिकाजीकी बैठक, जानअजानवृक्ष, पूजनीशिला आदि स्थल हैं।

गाँठोलीगाँव

गोपियोंने कौतुकवश श्रीराधा-कृष्णके उत्तरीय वस्त्रोंकी चुपके-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चुपके गाँठ बाँध दी है और जब दोनों उठके पधारने लगे हैं तब बड़ी हँसी की है। अहा—

कहत अयाने लोग, जहाँ गाँठ तहाँ रस नहीं।
बसत सकल रसभोग, गँठजोड़ाकी गाँठमें॥

यहाँ भगवान्‌ने होली खेली है। यहाँ गुलालकुण्ड, महाप्रभुजी-की बैठक, सिज्जा (शय्या) मन्दिर, टौंकको घनो, वैज (विजय-गाँव) आदि स्थल हैं। यहाँ बलभद्रकुण्ड और रेवतीकुण्ड हैं। ये सब स्थान गोवर्धनके आस-पास दोनों ओरको हैं—

डीग (दीर्घपुर) (लठावन)

—यहाँसे भरतपुरका राज्य प्रारम्भ हो जाता है और कामवनतक रहता है। इसीसे भरतपुरनरेशोंको ब्रजेन्द्रकी पदवी है। पहले कभी सारा ब्रज इनके ही राज्यमें था। यहाँ भरतपुरनरेशके बनवाये भवन हैं। उनमें फुहारे चलनेका अच्छा आनन्द रहता है। बिल्कुल वर्षाऋतु झलक जाती है। दाऊजीका मन्दिर है। यहाँ एक सरोवर भी (रूपसागर) बड़ा सुन्दर है। डीगसे एक मार्ग—

नींवगाँव

—को गया है। यहीं श्रीनिम्बार्काचार्य निवास करते थे। दूसरा नींवगाँव महावनके पास है वहाँ उनका जन्म हुआ था। ये ही एक आचार्य एतद्देशीय और सो भी ब्रजवासी हैं। अन्य तीनों आचार्य श्री-विष्णुस्वामी, श्रीरामानुज, श्रीमध्व दाक्षिणात्य हैं। नींवगाँवको एक मार्ग गोवर्धनसे भी गया है। नींवगाँवसे आगे—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाडरगाँव

—यहाँ पाडरगङ्गा हैं । कुञ्जेरागाँव है । डीगसे दूसरा मार्ग—

परमदरे (परममन्दिर) गाँव

—को गया है । इसको 'प्रमोदन' भी कहा करते हैं । यहाँ कृष्णकुण्ड और श्रीदामाजीका मन्दिर है । बीच मार्गमें कुछ हटकर—

वहज (वज्री) गाँव

—है । जहाँ इन्द्रने लज्जित होकर भगवान्‌की स्तुति की है । वेदशिरा, मुनिशीर्षगाँव हैं । परमदरेसे—

आदिबद्री

—हैं । नन्दादि गोपोंको यहाँ ही बदरीनारायणका दर्शन कराया है । सेऊका गाँव, नयनसरोवर अलखगङ्गा, खोह, फिर 'बड़े बद्री' व 'मानसरोवर' आदि बड़े अपूर्व मनोहर स्थल हैं । एक मन्दिरमें बीचमें नारायण और इधर-उधर चन्द्रकुबेर हैं । दूसरे मन्दिरमें व्यास, नर और बदरीनाथ हैं । एक तप्त कुण्ड है । पहाड़में स्थान-स्थानपर किस स्थानसे, कौन स्थान कितनी दूर है, यह खुदा हुआ मिलता है । यह गौड़िया गोस्वामियोंका परिश्रम है । खोहसे आगे श्वेतपर्वत, सुगन्धिशिला, नीलपर्वत और आनन्दाद्रि (घाटी) है ।

इन्दरोलीगाँव

—है । यह गाँव इन्दुलेखाजीका है । इसमें इन्दुलेखाकी निकुञ्ज, इन्दुकूप, इन्दुकुण्ड हैं । 'कनुयावरो' कण्वमुनिका स्थान ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामवन

इसको काम्यकवन भी कहते हैं। पाँचों पाण्डव वनवासके समय इसमें रहे थे। यह भी वृन्दावन है, यहाँ गोविन्ददेवजीके मन्दिरमें वृन्दादेवीका मन्दिर भी है। यहाँ भी श्रीकृष्णने दान अथवा कर गोपियोंसे लिया था। जैसा कि श्रीमद्भागवतमें लिखा है—'कदाचिन्नृपचेष्टया' और—

'एवं विहारैः कौमारैः कौमारं जहतुर्व्रजे।
निलायनैः सेतुबन्धैर्मर्कटोत्प्लवनादिभिः॥'

ये लीलाएँ कामवनमें हुई हैं।

यहाँ चौरासी तीर्थ हैं। मधुसूदनकुण्ड, यशोदाकुण्ड, सेतुबन्धरामेश्वर, चक्रतीर्थ, लङ्कापलङ्काकुण्ड, लुकलुककुण्ड जिसे श्यामकुण्ड भी कहते हैं। लुकलुककन्दरा—यहाँ श्रीकृष्णचन्द्र आँखमिचौनी खेले हैं और कन्दरामें छिपकर पर्वतपर प्रकट हुए हैं, वंशी बजायी है। चरणपहाड़ी, जिसपर भगवान्के अकृत्रिम चरणचिह्नोंका दर्शन होता है। महोदधिकुण्ड, छटङ्की-पंसेरी। जब गोपियाँ यशोदाजीसे भगवान्की माखनचोरीका उलाहना देने लगी हैं तब यशोदाजीने वे बड़े-बड़े पत्थर जिनमें एक छोटा है उसको छटङ्की बताकर, जो बड़ा है उसको पंसेरी बताकर (जो वास्तवमें छटाँक और पाँच सेरसे बहुत भारी हैं) कह दिया कि इनसे माखन-दही तोलकर—

'जाको जाको खायो सोई ले जाओ री,
गारी मत दीजो मो गरीबनीको जायो री।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रत्नाकरसागर, ललिताजीकी बावड़ी, नन्दकूप, नन्दबैठक, मोतीकुण्ड, देवीकुण्ड, गयाकुण्ड, गदाधर भगवान्‌के दर्शन, प्रयाग-कुण्ड, काशीकुण्ड, गोमतीकुण्ड, श्रीदामादिपञ्चगोपकुण्ड, घोषरानी (यशोदा) कुण्ड, यशोदाजीका पीहर है। गोपराज पिताका नाम है। गोपीनाथजीका मन्दिर, चौरासी खम्भा—जिसके चौरासी खम्भे गिने नहीं जाते—श्रीकृष्णचैतन्य सम्प्रदायके गोपीनाथजी, गोविन्ददेवजी, मदनमोहनजी, राधावल्लभजीके मन्दिर, श्रीवल्लभसम्प्रदायके कृष्णचन्द्रमाजी नवनीत प्रियाजी, मदनमोहनजीके मन्दिर, श्वेतवाराहका मन्दिर, सूर्यकुण्ड, गोपालकुण्ड, राधाकुण्ड, शीतलाकुण्ड, ब्रह्माजीका मन्दिर, ब्रह्माकुण्ड, श्रीकुण्ड, महाप्रभुजी, गुसाईंजी, गोकुलनाथजीकी बैठकें, खिसलनीशिला, कामसागर, व्योमासुरकी गुफा। व्योमासुर गोपका रूप धारणकर भगवान् और गोपोंके साथ राजा-चोरके खेलको खेलता हुआ खेलमें सोते हुए गोपोंको गुफामें डाल आता था। भगवान्‌ने उसकी इस करतूतको देखकर उसे मारा और गोपोंको गुफासे निकाला। कठला, मुकुट, हाथ इनके चिह्न हैं। नीचे उतरकर बलदेवजीके बायें चरणका चिह्न है (मथुरामें बलदेवजीके दक्षिण चरणका चिह्न है)।

भोजन-थाली—यहाँ पहाड़पर पत्थरकी स्वतः-सिद्ध अनेक थालियाँ बनी हुई हैं। भोगकटोरा, कृष्णकुण्ड, चरणकुण्ड, गरुडकुण्ड, रामकुण्ड, राममन्दिर, अघासुरकी गुफा, कामेश्वर महादेवका मन्दिर—ये महादेव वज्रनाभके पधराये हुए हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रभागाकुण्ड, वाराहकुण्ड, पाँचों पाण्डवोंका मन्दिर, चारों युगोंके महादेव, धर्मकुण्ड, धर्मकूप, पञ्चतीर्थ, मनकामनाकुण्ड, इन्द्रमन्दिर, विमलकुण्ड—यह तीर्थराज है—हिंडोलेका स्थान, सुनहरी कदम्बखण्डी, रासमण्डलका चबूतरा, कुञ्जमें जलशय्या, विहारका स्थान, यहाँ सखियोंने फूलोंकी सेज श्रीराधा-कृष्णके लिये बनायी है। फूलोंके पंखेसे श्रम दूर किया है। यहाँपर जावकके चिह्न हैं। इन नामोंके देखनेसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह भी वृन्दावन है। यहाँसे भी आदिबद्रीस्थानको मार्ग गया है। पूर्वोक्त कुण्डों-मेंसे बहुत-से सूख गये हैं, बहुतोंका पता भी नहीं है। कामवनसे आगे—

कनवारोगाँव

—है। यहाँ भगवान् हिंडोलेमें झूले हैं, यहाँ कृष्णके और दाऊजीके कान छिदे हैं। यहाँ कर्णकुण्ड है, सुनहराकी कदम्बखण्डी है। पनिहारीकुण्ड, कृष्णकुण्ड, ठाकुरजीकी बैठक, काका बल्लभजीकी बैठक इत्यादि हैं। इससे आगे—

चित्र-विचित्र शिला

—है इसमें रेखाओंके चिह्न हैं और छप्पन कटोराओंके चिह्न हैं। राधाजीके चरणचिह्न हैं, माणिकशिला और देहकुण्ड है। इससे आगे—

ऊँचोगाँव

—है। यह श्रीबलदेवजीकी लीलाभूमि है। यहाँ श्रीबलदेवजीका रासमण्डल है। संयोग तीर्थ है। श्रीराधा-कृष्णका यहाँ विवाह हुआ है ऐसा भी कोई-कोई मानते हैं। यह गाँव श्रीललिताजीकी जन्म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमि है ऐसा कहते हैं। यहाँ परमभक्त महाविद्वान् श्रीनारायणभट्टजी हो गये हैं, जिन्होंने व्रज-महिमाके सम्बन्धमें १०८ ग्रन्थ बनाये हैं। नन्दगाँव और बरसानेके निवासी इन्हींके शिष्य हैं। ऊँचेगाँवसे आगे भानोखर (भानुसरोवर), वृषभानुकुण्ड, रावड़ीकुण्ड, पाँवड़ी (खड़ाऊ) कुण्ड, शीतलकुण्ड, तिलककुण्ड, ललिताकुण्ड, विशाखाकुण्ड, कुहककुण्ड, मोरकुण्ड, जलविहारकुण्ड, दोहनीकुण्ड, यहाँ नन्दबाबाकी गायोंकी दोहनी धोयी जाती थी। यहाँ ही पहले-पहल श्रीयशोदाजीने श्रीराधा-कृष्णकी युगल जोड़ीके दर्शन किये थे और ईश्वरसे प्रार्थना की थी कि मेरे लालाका विवाह इसी लालीके साथ हो, सूर्यकुण्ड, नौवारी-चौवारी-स्थान और रत्नकुण्ड है। आगे—

डभारोगाँव

—है। यह चम्पकलता सखीका गाँव है।

बरसाना

इसको बरसानु, ब्रह्मसानु और वृषभानुपुर भी कहा करते हैं। यहाँ एक छोटी-सी पहाड़ी है। यह वृषभानु और कीर्तिरानीकी राजधानी है। यह पहाड़ी ब्रह्माजीका रूप है। इसके जो चार शिखर हैं वे ही चार मुख हैं। (इसी प्रकार नन्दगाँवमें जो पहाड़ी है वह शिवजीका रूप है और गोवर्द्धन विष्णुका रूप है) यहाँ मोरकुटी, मानगृह (गढ़) है, जहाँ मानवती राधाजीको भगवान्ने मनाया था। विलासगढ़, (गृह), संकीर्णपथ (साँकरीखोर)—यहाँ एक विचित्रता है। दोनों पहाड़ोंका अङ्ग-रूप नावके-से आकारका एक ही पत्थर है जो धरतीपर जम रहा है। इसकी विचित्रता देखनेसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही मालूम होती है। बरसानेके दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी और है, इन दोनों पहाड़ियोंकी द्रोणी (खौ) में बरसाना बसा है। दोनों पर्वत जहाँ मिलते हैं वहाँ ऐसी एक तंग घाटी है कि अकेला मनुष्य भी कठिनतासे निकल सकता है। इसी स्थानका नाम साँकरीखोर है। भादों सुदी अष्टमीसे चतुर्दशीतक यहाँ बहुत सुन्दर मेला होता है और इसी प्रकार फाल्गुन सुदी अष्टमी, नवमी और दशमीको होलीकी लीला होती है।

विहारवन, गहवर (गह्वर) वन

यह बहुत ही रमणीक स्थान है। शंखका चिह्न, महाप्रभुजीकी बैठक, दानगढ़—यहाँ जयपुरके महाराज माधवसिंहजीका बनवाया हुआ मन्दिर बहुत सुन्दर है, जयपुरकी पत्थरकी कारीगरी देखनेयोग्य है। गायके स्तनोंका चिह्न, लाडलीजी (राधाजी) का मन्दिर—यही यहाँ प्रधान हैं। नारायणभट्टजीके शिष्य नारायणदासजी ब्राह्मण यहाँ भजन किया करते थे। उनको स्वप्नमें श्रीलाडलीजीने दर्शन दिये कि जहाँ बैठकर तू भजन करता है उसके नीचे मैं हूँ। मुझे निकाल ले और मेरा मन्दिर बना। उन्होंने यह समझकर कि न तो मुझसे मन्दिर बन सकेगा, न सेवा-पूजा हो सकेगी और भजनमें विघ्न होगा, मूर्त्ति न निकाली। फिर स्वप्न हुआ तब उसने धरती खोदकर महारानीको निकाला और कुटी बनाकर उनकी सेवा-पूजा करने लगा। फिर स्वप्नमें ही विवाह करनेकी उसे आज्ञा हुई और कुछ दिन पीछे एक ब्राह्मणने अपनी कन्या उसे ब्याह दी। उसीके वंशधर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

४ श्रीलाडलीजी (राधाजी) का मन्दिर (बरसाना) पृष्ठ ४४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रजकी झाँकी

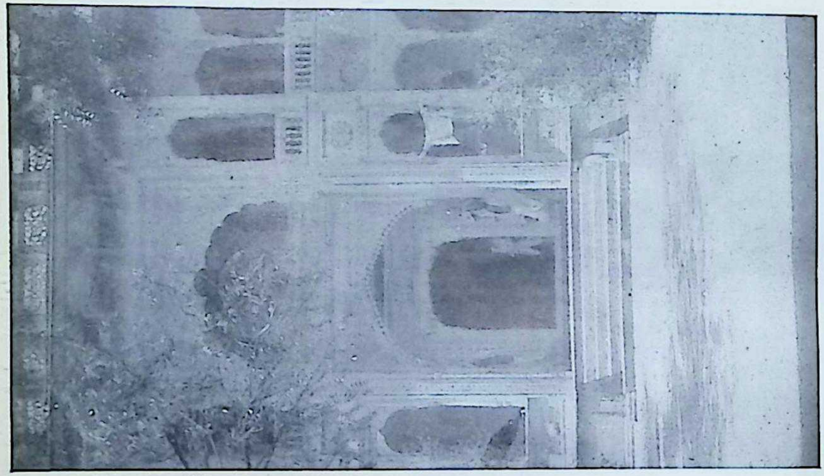

जयपुर-नरेशका मन्दिर (बरसाना) पृष्ठ ४४

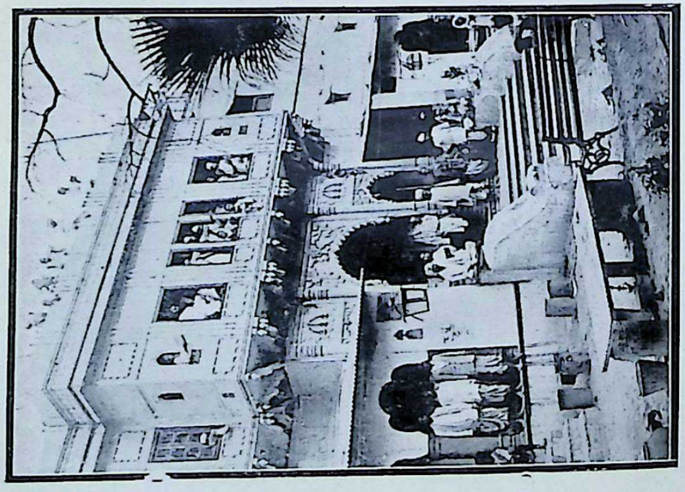

राधागोपालजीका मन्दिर (प्रेमसरोवर) पृष्ठ ४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वरसानेके गुसाईं हैं—ऐसा लोग कहा करते हैं। जब पहाड़ीके नीचेसे इस मन्दिरपर दृष्टि जाती है तब बड़ी शोभा दीखती है। जब लाडलीजीके मन्दिरसे सीढ़ियोंपर नीचे उतरते हैं तब बीच-में राधाजीके पितामह महिभानुका मन्दिर आता है। दूसरा मन्दिर वृषभानुका है। जिसमें वृषभानुजीकी पूरी मूर्ति है और एक ओर श्रीराधिकाजी हैं तथा दूसरी ओर राधिकाजीके भाई श्री-दामाजी हैं। राधिकाजीकी ललिता, विशाखा, चम्पकलता, रंगदेवी, चित्रलेखा, इन्दुलेखा, सुदेवी, तुङ्गविद्या—इन अष्टसखियोंके मन्दिर हैं।

वरसानेमें सनाढ्य ब्राह्मण रूपराम कटारेके बनवाये हुए महल, सरोवर बहुत हैं। यह ब्राह्मण बड़ा पण्डित, बड़ा धनी और बड़ा उदार था। मुसलमानोंने वरसानेका भी बहुत नाश किया था। चिकसौली (चित्रशाली), मुक्ताकुण्ड, पीरीपोखर (प्रियाकुण्ड)—यहाँ श्रीप्रियाजी अभ्यङ्ग उद्वर्त्तन करके स्नान करती थीं। यहाँ यह भी प्रसिद्ध है कि राधिकाजीने (विवाहके पीछे) अपने पीले हाथ यहाँ धोये हैं, इससे इसका नाम पीरीपोखर हो गया है। पील्हखोर—यहाँ पील्हके वृक्ष बहुत हैं इससे आगे—

प्रेमसरोवर

—है। यह बहुत विशाल बड़ा सुन्दर सरोवर है। यहाँ महाप्रभुजीकी बैठक है। यहाँ रामगढ़निवासी सेठ घनश्यामदासजीके पुत्र सेठ लक्ष्मी-नारायणजी पोद्दारका बनवाया हुआ श्रीराधा-गोपालजीका मन्दिर है, जहाँ एक संस्कृत-पाठशाला है। यहाँपर अक्षय अन्नसत्र है। चाहे जितने अभ्यागत आवें सबोंको दाल-आटा दिया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्राह्मणोंको भोजन कराया जाता है और जो कोई विदेशी विद्वान् वहाँ पधारते हैं उनको भी प्रसाद दिया जाता है। विद्यार्थियोंको भी आमान्न वहाँसे ही मिलता है। भादोंमें और फाल्गुनमें बड़े मेले होते हैं। इस मन्दिरसे प्रेमसरोवरकी शोभा है और प्रेमसरोवरसे इस मन्दिरकी। प्रेमसरोवर बरसाने और नन्दगाँवके बीचमें है। राधागोपालजीके मन्दिरके सम्बन्धमें साहित्येन्दु सेठ श्रीकन्हैयालालजी पोद्दारने यह कहा है—

उत आवत हे नँदलाल इते अलि आत रही वृषभानुकुमारी।
बिच प्रेमसरोवर भेंट भई यह प्रेम-निकुञ्ज नवीन निहारी॥
चित चाहतु है इत ही रहिये यह कीन्ह विनय प्रियसों जब प्यारी।
तब नित्य निवास कियो इत है मिलि राधे-गुविन्द निकुञ्जविहारी॥

इससे आगे—

संकेत

—है जहाँ समय-समयपर श्रीराधा और श्रीकृष्ण मिला करते थे। यहाँ ऐसी प्रसिद्धि है कि ब्रह्माजीने श्रीकृष्णका विवाह श्रीराधिकाजीके साथ यहाँ ही कराया था। इसीसे पीरीपोखरवाली बात भी प्रसिद्ध हुई है। यहाँ रासमण्डलका चबूतरा, झूलाका स्थान, रंगमहल, शय्यामन्दिर, विह्वलादेवी, विह्वलकुण्ड और संकेत-विहारीका मन्दिर आदि स्थान हैं। महाप्रभुजीकी बैठक है। इससे आगे—

रीठौरा (रिखेरा) गाँव

—है। यह चन्द्रावलीजीका गाँव है। यहाँ चन्द्रावलीकुण्ड है, चन्द्रावली-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

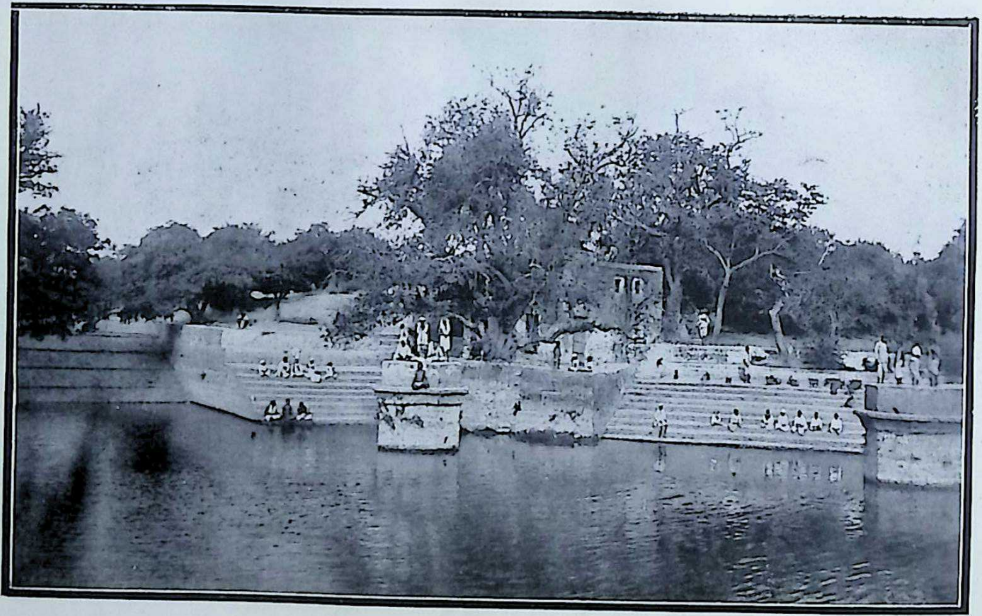

प्रेम-सरोवर

पृष्ठ ४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ नन्दगाँवका एक दृश्य पृष्ठ ४८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीकी बैठक है। चन्द्रावलीजीका कुञ्जभवन है। ठाकुरजीकी बैठक महाप्रभुजीकी बैठक है। यशोदामन्दिर, ललितामन्दिर, ललिताकुञ्ज, रासमण्डलका चौंतरा, हिंडोलेका स्थान, विशाखाजीकी कुञ्ज, विशाखाकुण्ड, विशालकुण्ड, कदम्बकुञ्ज, मधुसूदनकुण्ड, मोहनकुण्ड—भगवान्‌की रूप-माधुरीको देखकर व्रजवासी मोहित हो गये, सुध-बुध नहीं रही, तब भगवान्‌ने वंशी बजाकर उनको सचेत किया; उस दिनसे व्रजवासियोंने भगवान्‌का मोहन नाम रक्खा। हाऊ-बिलाऊ—यहाँ यशोदाजीने श्रीकृष्णको डराया है—

'दूर खेलन मत जाओ लला मेरे हाऊ आये हैं।'

दधि बिलोनेका माट यह इतना बड़ा है कि इसमें एक आदमी छिपकर बैठ सकता है। पद्मतीर्थ, बेलकुण्ड, पनिहारी-गाँव, पनिहारीकुण्ड—श्रीयशोदाजीके घर यहाँसे ही जल जाता था उसीको भगवान् पीते थे। चरण-पहाड़ी, जहाँ भगवान्‌के चरणचिह्न हैं। नन्दगाँव, चौडोखर (चरणकुण्ड), रोहिणी-मोहिनीकुण्ड, गायोंका खूँटा, गायोंका खिड़क, 'पान-सरोवर' (पावन सरोवर)—यह भी एक दर्शनीय स्थान है। श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक, श्रीसनातन गोस्वामीजीकी कुटी, मोतीकुण्ड, फुलवारी-उसास, श्यामपीपरी (काला पीपल), टेर कदम्ब, श्रीरूपगोस्वामीकी कुटी, कृष्णकुण्ड, आशाकुण्ड, आशेश्वर महादेव, कृष्णकुण्ड, जलविहार, कुहककुण्ड, छाछकुण्ड, छछिहारी देवी, जोगियाकुण्ड, वृक्षकी खोंतरमें भण्डार, अक्रूरबैठक—अक्रूरजी कृष्णको लिवाने गये वह लीला, वस्त्रकुण्ड, वस्त्रवन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ललिता–मोहन–विशाखा–उद्धव-कुण्ड, उद्धवके क्यार–कदम्बके वृक्षोंकी क्यारी–हैं। इनमेंसे एक वृक्षमें स्वतः दोने उत्पन्न होते हैं जिनमें छटाँकभर वस्तु आ सके 'तोरला पात बनाय ले दोना'। उद्धवकी बैठक—जहाँ उद्धवजीने गोपियोंको श्रीकृष्णका सन्देश सुनाया है। नन्दपोखरा, यशोदाकुण्ड, मधुसूदनकुण्ड, नृसिंह (नरसिंगा) नाद, नन्दराय, श्रीकृष्ण, बलदेव, यशोदा एक मन्दिरमें विराज रहे हैं। यही प्रधान मन्दिर है। बहुत विशाल और सुन्दर है। नन्दीश्वर महादेव—ये वज्रनाभके पधराये हुए हैं। 'देखो री एक बाला योगी द्वारे मेरे आया है री।' यह लीला है। यशोदा-नन्दन, विहारीजी और चतुरानागाके ठाकुर हैं।

नन्दगाँव

—को नन्द्रिग्राम कहते हैं। यह नन्दबाबाकी राजधानी है। पहाड़के ऊपर बसा है। पहाड़के ऊपर श्रीराधाजीके और श्रीकृष्णचन्द्रजीके चरणचिह्न हैं। नन्दीश्वरके वायु-कोणमें 'गेंदोखर' गेंद खेलनेका स्थान। कदम्बवन—यहाँ दाऊजीके भगवान्ने चरण दाबे हैं। महिरानोगाँव—अभिनन्द गोपकी गोशाला। नन्दगाँवसे पूर्व जाववट, पाडरगंगा (पीवन), किशोरीकुण्ड, कोकिलावन (जाववटसे पश्चिम)—जहाँ कोयलकी भाँति आप बोले हैं। इसीसे 'कोकिलास्वर-भूषणः' आपका नाम है। सघन वृक्षोंका बहुत सुन्दर वन है। इससे आगे पूर्णमासीकुण्ड (पूर्णमासी श्रीनन्दकी पुरोहितानी हैं), दौमन (दोऊ-मिलन), कदम्बखण्डी, रुनकी-झुनकीकुण्ड, कजरी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वन, कृष्णकुण्ड, आँजनोगाँव, अँजनोखर (अञ्जनकुण्ड) है। आँजनीशिला है। इसमें एक विचित्रता है कि शिलापर उँगली रगड़नेसे कोई चिह्न नहीं होता है पर उसी उँगलीको आँखोंमें लगानेसे आँखोंमें अञ्जन लगा-सा मालूम देता है। यहाँ श्रीकृष्णने श्रीराधाजीके नयनोंमें अञ्जन लगाया था। किसी भक्तने कहा है——

'धन्या गोकुलकन्या वयमिह मन्यामहे जगति।
यासां नयनसरोजे अञ्जनभूतो निरञ्जनो वसति ॥'

उसके पास–

सीपरसोंगाँव (शीघ्रं परश्वः)

–है। जब अक्रूरजीके साथ भगवान् मथुराको पधारे हैं और गोपियाँ विह्वल होकर रथके नीचे मरनेके लिये आने लगी हैं तब भगवान्ने कहा है–'शीघ्र परसों ही आऊँगा।' इसपर भक्तने कहा है——

'परसौं पिया आमन कह जु गए कब आवेगी बैरन वह परसौं।'

गौकुण्ड—यहाँ विलासवट है, हंससरोवर, सारसवन——यहाँ भगवान्ने पुष्पचयन करके राधाजीकी बेनी गूँथी थी।

पिसायोगाँव

–कदम्बखण्डी–यहाँ जब श्रीकृष्णजीको प्यास लगी तब श्रीराधिकाजी सखियोंसहित जल लाईं और श्रीठाकुरजीको पिलाया। यहाँ तृषाकुण्ड और विशाखाकुण्ड हैं। खदिरवन (खायरो)– यहाँ गायोंका खिड़क है, कुण्डलवन——यहाँ भगवान्के कुण्डल खो गये थे जिन्हें गोपियोंने ढूँढ़कर भगवान्को पहिनाया था,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भवनकुण्ड, डकाराकुण्ड, चिन्ताखुरी, गोपीनाथजी और दाऊजीके दर्शन, बलभद्रकुण्ड, खेलनकुण्ड, चीर-तलाई, बकथरा (वकस्थल)—यहाँ भगवान्ने बकासुरको मारा था। सिद्धवन, भोजनस्थली, भदावल (भांडागार)——इसकी वाराह-पुराणमें बड़ी प्रशंसा है——कमई (विशाखाजीका जन्मस्थान)—

करहला

—(ललिताजीका जन्मस्थान) कंकणकुण्ड, कदम्बखण्डी, हिण्डोलाका स्थान, महाप्रभुजी, गुसाईंजी और गोकुलनाथजीकी बैठकें हैं। करहलामें शुद्ध, सरस रासलीला करनेवाले कई भक्त हो गये हैं और अब भी हैं। श्रीनाथजीके मुकुटके दर्शन हैं। वृषभानुजीका उपवन है। निधोली, सहार—यहाँ महेश्वरकुण्ड, माणिककुण्ड है। इसमें भूमि खोदनेसे एक पुराना मन्दिर और पुरानी वस्तुएँ निकली थीं। साखी (शंखचूड़के वधका स्थान) यहाँ रामकुण्ड है। जाववट——इसमें किशोरीकुण्ड, चीरकुण्ड, हिण्डोलेका स्थान है। (हिण्डोलेका स्थान उसको कहते हैं जहाँ वृक्ष इस प्रकारसे खड़े हों मानो हिण्डोला बना हुआ है।) गाँवके दूसरी ओर पाडरकुण्ड है।

पाडरकुण्डके सामने नरकुण्ड है। यहाँ पाँचों पाण्डव और नारायणके वृक्ष हैं। कोकिलावन——जहाँ कोकिलाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, पनिहारीकुण्ड, महाप्रभुजीकी बैठक; पाण्डवगङ्गास्थान हैं। इसमें बड़े सघन वृक्ष हैं और यह बहुत बड़ा वन है, देखने-योग्य है। बड़ी बठैन——जहाँ बलभद्रकुण्ड, दाऊजीका मन्दिर है। छोटी बठैन——यहाँ कृष्णकुण्ड, साक्षीगोपालका मन्दिर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बैन्दोखर

यहाँ चरणगङ्गा, चरणपहाड़ी—इसमें सूर्य, चन्द्रमा, गौ, घोड़ा और ठाकुरजीके चरणोंके चिह्न हैं। पौढ़ानाथजीके दर्शन, गायोंका खिड़क है। यहाँ गो-दोहन करके मटकोंमें दूध भरकर नन्दगाँव भेजा जाता था। ये सब स्थल वरसाने-नन्द-गाँवके आस-पास चारों ओर हैं। इनमें आगे-पीछेका क्रम नहीं है। इनमें वरसानेसे भी जा सकते हैं और नन्दगाँवसे भी।

रासौलीग्राम

यहाँ रासमण्डलका चबूतरा, रासकुण्ड, श्रीनाथजीका जलघड़ा, श्रीनाथजीकी बैठक है। श्रीनाथजीके जलघड़ाके आगे—

कामरगाँव

—है (मैया मेरी कामर कौन लई)। कामरमें गोपीकुण्ड, गोपी-जलविहार, हरिकुण्ड, मोहनकुण्ड, मोहनजीका मन्दिर, दुर्वासाजीका मन्दिर है।

दधिगाँव (दहगाँव)

यहाँ भगवान्‌ने दधिलीला की है। यहाँ दधिकुण्ड, दधिहारीदेवी, व्रजभूषण-मन्दिर (वृक्षमें), मुकुटका चिह्न, सात सखियोंका क्रीड़ा-स्थान—यहाँ भादों सुदी षष्ठीको मेला होता है। यहाँ वेणु-नाद करके और नाम ले-लेकर वनमें दूर गयी गायोंको भगवान्‌ने बुलाया है—'वेणुनाह्वयति गाः स यदा हि।' (श्रीमद्भागवत) कोटवन—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवान्‌ने लताओंका यहाँ कोट बनाया है। यहाँ कदम्बखण्डी है। यहाँ यशोदाजीको भगवान्‌ने रास दिखलाया है। चमेलीवन—यहाँ राम, लक्ष्मण, सीताजी, हनुमान्, नामके कुण्ड और हनुमान्‌जीका मन्दिर है। गहनवन, गोपालगढ़, गोपालकुण्ड, वत्सवन, फारैन—यहाँ होलीकी लीला की है। यहाँ प्रह्लादकुण्ड है। यहाँ होलिका-दहनके दिन एक ब्राह्मण जो पाँड़े कहलाता है सारे दिन निर्जल व्रत करता है और होलीके समय कुण्डमें स्नान करके जलती हुई होली जिसके पास होला भूजनेको भी लोग खड़े नहीं रह सकते उसके बीचमें होकर निकलता है। होलीको फाड़कर निकलनेसे उस गाँवका नाम फारैन हुआ है। फारैनसे आगे—

साँचोली

—है। यहाँ साँचीदेवीका मन्दिर है।

शेषशायी

यहाँ दाऊजीने शेषजीका और भगवान्‌ने लक्ष्मी-नारायणजीका रूप धारण किया है। यह रूप अपने ग्वाल-बाल सखाओंको दिखाया है। पौढ़ानाथके दर्शन, क्षीर-सागर, हिण्डोलेका स्थान, दूसरी ओर महाप्रभुजीकी बैठक है। यहाँसे कोसीको मार्ग जाता है। नन्दगाँवसे भी कोसीको मार्ग जाता है पर यात्राके और स्थान रह जाते हैं इससे यही मार्ग ठीक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोसी

नाज और कपासकी बहुत बड़ी मण्डी है। इसको कुशस्थली भी कहते हैं। इसमें रत्नाकरकुण्ड, मायाकुण्ड, विशाखा-कुण्ड और गोमतीकुण्ड हैं। यहाँ दशहरा और चैत सुदी द्वितीयाको फूलडोलका मेला होता है।

छाता

कोसीसे दक्षिणमें है। कभी श्रीकृष्णने यहाँ छत्र-धारण-लीला की थी। इससे इसका नाम छाता हुआ। यहाँ छत्र-वन था (अब नहीं है)। यहाँ सूर्यकुण्ड है जो नगरसे अब कुछ अलग है। कोई-कोई कोसी नहीं जाते हैं। उनका मार्ग शेषशायी-से नन्दनवन, चन्दनवन, बुखराईताल, बुखराईसे बढ़ाघाट, उझानीघाट, खेलनबन, लालबाग, उससे आगे शेरगढ़ है। दूसरा मार्ग कोसीसे छातई, वहाँसे पै (पय) गाँव, श्यामकुण्ड, नारदकुण्ड, प्रह्लादकुण्ड, चतुर्भुजनाथ और राधिकाजीका मन्दिर है। यहाँसे—

शेरगढ़

—है। दाऊजीने द्वारकासे आकर रास किया है और उसी समय हलसे यमुनाजीको खींचा है। यहाँ रामघाटमें गोरे दाऊजीका मन्दिर है। वहाँ यमुनाजी अबतक खिंची-सी दीखती हैं। उससे आगे ब्रह्मघाट है। यहाँ ब्रह्माजीने तप करके बछड़े चुरानेका दोष क्षमा कराया है। उसके आगे आभूषणवन है जहाँ गोपियोंने भगवान्का शृंगार फूलोंसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया है। उससे आगे निवारणवन—जहाँ शृंगारनिवारण किया है। यहाँ निवाड़ेके फूल बहुत होते हैं। गुञ्जावन—यहाँ गुञ्जा (चिरमिठी) की माला बनाकर गोपियोंने भगवान्‌का शृंगार किया है। श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

'गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय'

विहारवन—विहारीजीके दर्शन और विहार-कुण्ड है। कजरौटगाँवसे आगे दूसरी ओर अक्षयवट, अक्षय-विहारीके दर्शन। गोपी-तलाई—जहाँ भगवान्‌ने गोपियोंको अनेक लीलाएँ प्रकट दिखायी हैं। स्फटिकमणिके शालग्रामजी—जिनमें कुनवाड़ेके-से दर्शन होते हैं।

वस्त्रलोचन, कात्यायनीघाट और चीरघाट

यहाँ भगवान्‌के पति होनेके निमित्त कात्यायनीका व्रत गोप-कन्याओंने किया था, पर यमुनाजीमें नङ्गे होकर स्नान करती थीं, उस दोषको दूर करनेके लिये और उस कुप्रथाको हटानेके लिये और उनकी प्रेमाभक्तिको बढ़ानेके लिये भगवान् उनके वस्त्रोंको घाट-परसे उठाकर कदम्बके ऊपर जा बैठे। फिर उनकी प्रार्थनासे उनके वस्त्र उनको दिये। यहाँ चीरकदम्ब और कात्यायनीदेवीके दर्शन हैं। महाप्रभुजीकी बैठक है, आगे—

नन्दघाट

—है, जहाँ नन्दबाबा नित्य स्नान और सन्ध्या किया करते थे। एक दिन यहाँसे ही वरुणजीका दूत नन्दरायजीको पकड़कर ले गया था

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

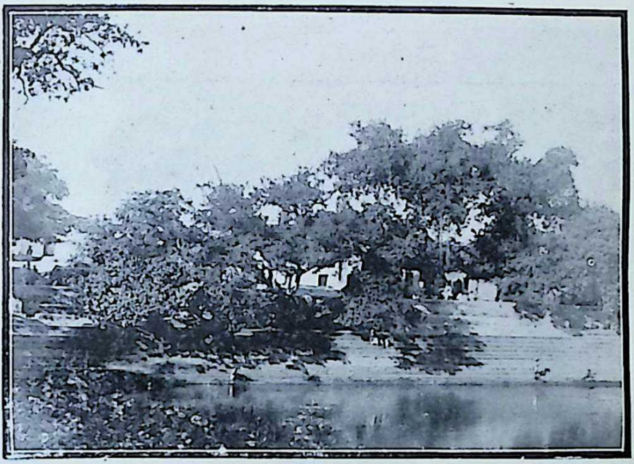

श्याम-कुण्ड पृष्ठ ५५

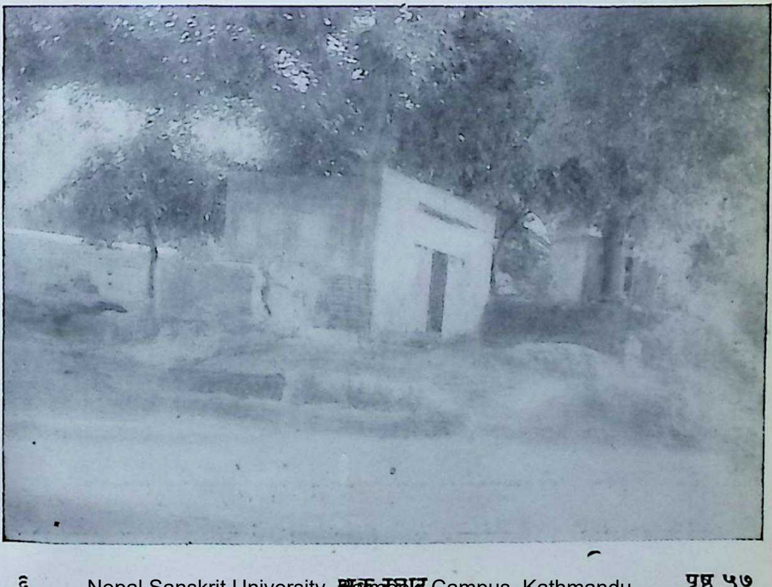

[illegible] पृष्ठ ५७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

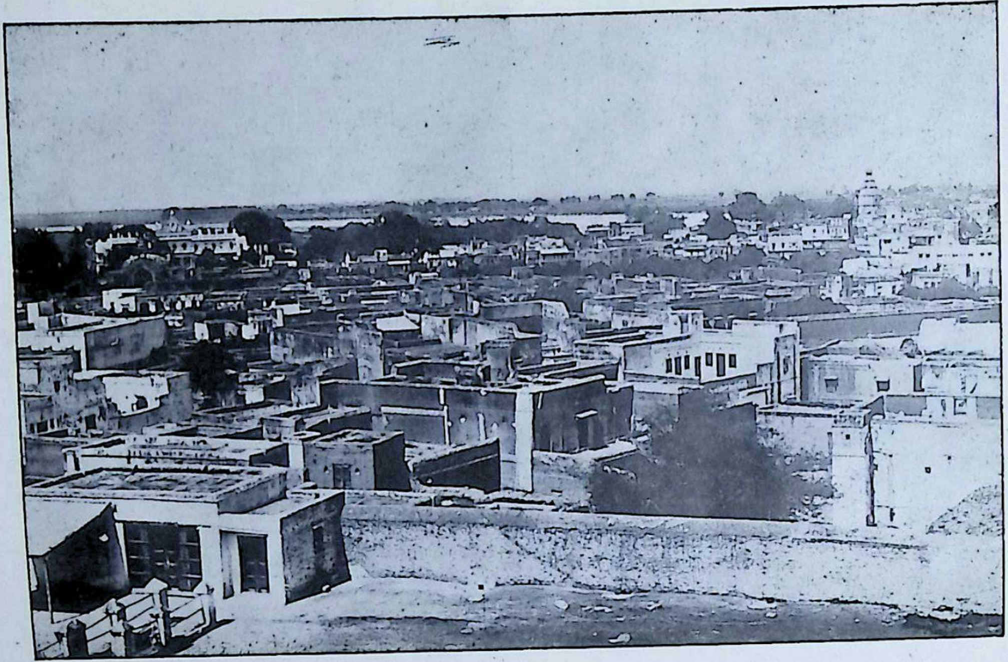

वृन्दावनका एक दृश्य

पृष्ठ ५७

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और श्रीकृष्ण वरुणलोकमें जाकर नन्दबाबाको लाये थे। यहाँ नन्दबाबाके दर्शन हैं। उसके पास भयगाँव है। नन्दराजको वरुणका दूत जब ले गया तब गोपोंको भय हुआ था, इससे उस स्थानका नाम भयगाँव पड़ गया। उसके पास—

वसईगाँव

—है। यह वसुदेवजीका गाँव है। यहाँ वसुदेव-कुण्ड है। उससे आगे—

वत्सवन

—है, जहाँ वत्सविहारी ठाकुरजीका मन्दिर है और महाप्रभुजीकी बैठक, ग्वालमण्डलीका स्थान, ग्वाल कुण्ड और हरिबोल तीर्थ है। यहाँ भगवान् बछड़ोंको चराया करते थे। ब्रह्मकुण्ड—जहाँ ब्रह्माजीने बछड़े चुराये थे। उसके पास—

रासौलीगाँव

—है। यहाँ रासमण्डलका चौतरा है। उसके पास सेईगाँव है और उसके पास आटसगाँव है, जहाँ देवीआटस और गोपाल-आटस ये दो गाँव प्रसिद्ध हैं। चीरघाटसे दो मार्ग हैं, एक तो यह ऊपर लिखा जा चुका है, दूसरा यमुना-पार होकर मेखवन, लताओंका दर्शन, भद्रवन (भदनवारो) भाण्डीरवन, श्यामवन, श्यामकुण्ड, श्यामजी और सुदामाजीके मन्दिर, मांट, बेलवन। यहाँसे यमुनाके इस पार वृन्दावन है। अथवा, आटस-गाँवसे रामभद्रताल—जहाँ भगवान्ने रामचन्द्रजीका स्वरूप धारण किया। उससे आगे—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नरी-सेमरीगाँव

—है। यहाँ बलदेवजीका मन्दिर है। नरीमें नरीदेवी और किशोरी-कुण्ड है। सेमरी श्यामलासखीका अपभ्रंश है। नरी, सेमरी—ये दोनों श्रीराधिकाजीकी सेवक सखियाँ हैं और व्रजकी देवी हैं। बड़ी-बड़ी दूरसे भक्तजन नवदुर्गाओंमें पूजन करने जाते हैं। यहाँ नारायण-कुण्ड है।

छटीकरागाँव

जहाँ सखियोंके छः कुञ्जभवन हैं। राधिकाजीका एक गुप्तभवन है।

गरुड़गोविन्दजी

जब भगवान्‌ने गोवर्धनपर्वत धारण किया था तब गरुड़जी सेवा करने पधारे थे—ये उस समयके दर्शन हैं। गोविन्दकी बारह भुजाएँ हैं और गरुड़पर विराज रहे हैं। व्रजवासियोंने एक पहेली बना रक्खी है कि 'पाँच हाथके मन्दिरमें बारह हाथके ठाकुरजी कैसे विराजते हैं?' गरुड़गोविन्दसे आगे दिल्लीकी सड़कपर—

चौमुहागाँव

—है, यह चतुर्मुखका अपभ्रंश है। बछड़ोंको चुरानेके बाद जब ब्रह्माजी यहाँ आये और भगवान्‌का यथावत् नित्यविहार देखा तब चतुर्मुखसे आश्चर्यचकित होकर भगवान्‌को देखते रहे और प्रणाम करने लगे तथा स्तुति की। श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

'स्पृष्ट्वा चतुर्मुकुटकोटिभिरङ्घ्रियुग्मं
नत्वा मुदश्रुसुजलैरकृताभिषेकम्।'

—यहाँ उस लीलाका निदर्शन है। गरुड़गोविन्दसे दूसरे मार्गसे—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालीदह (वृन्दावन) पृष्ठ ५७

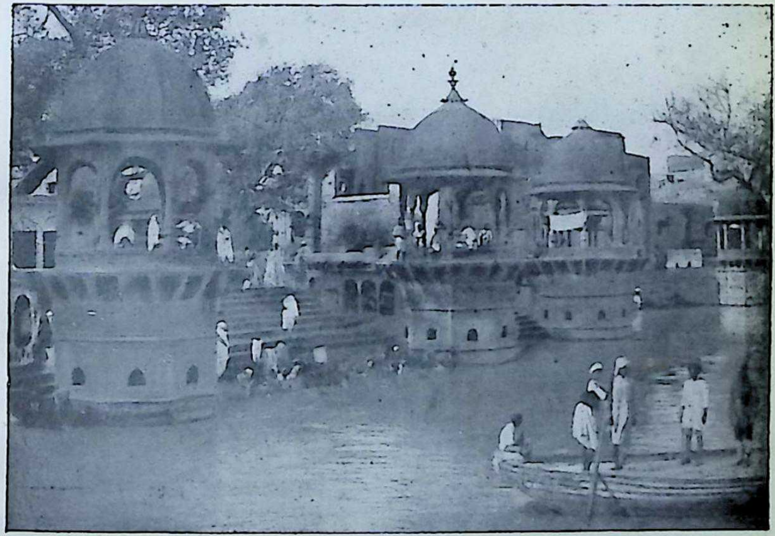

 युगलघाट (वृन्दावन) पृष्ठ ९७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

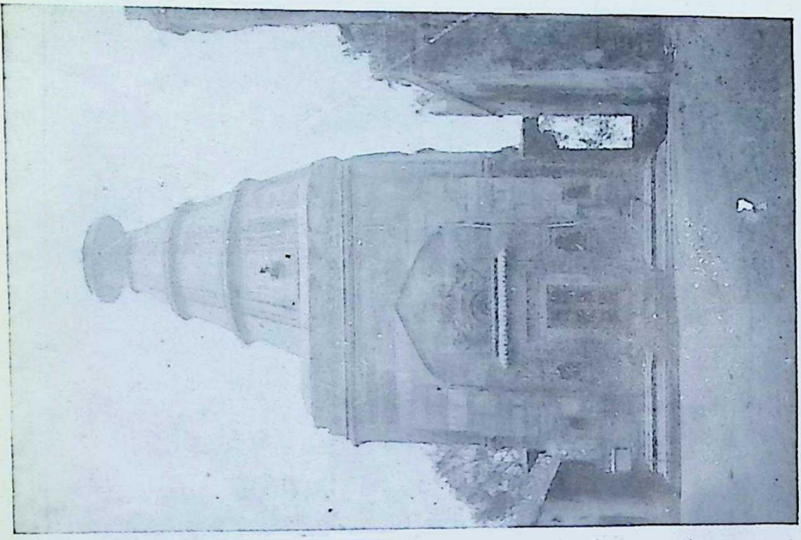

श्रीराधा-विनोदीलीका मन्दिर (वृन्दावन) पृ…

श्रीमदनमोहनजीका मन्दिर (वृन्दावन)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अक्रूरघाट, अक्रूरगाँव

—है (दूसरे मार्गसे ये वृन्दावनसे पीछे आते हैं) जहाँ अक्रूरजीको भगवान्ने वृन्दावनसे मथुरा आते समय यमुनाजीमें अपने स्वरूपके दर्शन कराये थे । उसके पास—

भतरोड

—है, जहाँ यज्ञकर्ता ब्राह्मणोंकी धर्मपत्नियोंने भगवान्को और ग्वाल-बालोंको भोजन कराया था। यहाँ ही बृहत्सेन राजाको शान्तऋषिने यज्ञ कराया था, उसीके वंशज बारहसैनी वैश्य हैं । वैशाख शुक्ला नवमी और कार्तिक शुक्ला पूर्णमासीको यहाँ मेला हुआ करता है । कोई-कोई मथुरातक यात्रा पूरी करके फिर अक्रूरजीके और भतरोडके दर्शन करते हैं । यही ठीक भी है । भतरोडका स्थान श्रीविष्णुस्वामिसम्प्रदायका है । मदनटेर मदनगोपालजीका दर्शन । उससे आगे वृन्दावन है ।

वृन्दावन

कालीदह (कालियहृद), जहाँ भगवान्ने कालियनागको मर्दन करके यहाँसे निकाला था । वहाँ वज्रनाभके पधराये हुए कालियमर्दन ठाकुरजीके दर्शन हैं ।

युगलघाट—यहाँ युगलकिशोरजीका मन्दिर है । इसके पास मदनमोहनजीका मन्दिर है । बंगाली गोस्वामी श्रीसनातनजीको यह मूर्ति मिली थी । इसके सम्बन्धमें यह किंवदन्ती है कि यह श्रीविग्रह मथुरामें किसी चौबेजीके पास था, जिनको सनातनगोस्वामी वृन्दावन ले गये। जिन चौबेजीके पास यह विग्रह था उनको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असकुण्डाबाजारमें मदनमोहनजीकी जायदादमेंसे एक दूकान मिली हुई है। जबसे यह मूर्ति करौली पधारी है तबसे करौलीके मदनमोहनजीके मन्दिरसे उन्हीं चौबेजीके वंशजोंको सौ रुपये सालाना अबतक मिल रहे हैं। पर श्रीनरहरि चक्रवर्तीकी बनायी हुई तीन सौ वर्षकी पुरानी बंगला पुस्तक 'भक्तिरत्नाकर' में इस मूर्तिकी प्राप्ति महावनसे बतायी गयी है। किसी रामदास-नामक पंजाबी सेठने लाल पत्थरका बहुत सुन्दर मदनमोहनजीका मन्दिर बनवाया था। यवन-उत्पीडनके समय वे मदनमोहनजी करौली पधराये गये। उसके पीछे दूसरा मन्दिर बङ्गाली बाबू नन्दकुमारघोषने बनवाया, उसमें दूसरी मदनमोहनजीकी मूर्ति स्थापित की गयी।

अद्वैतवट—श्रीअद्वैत गोस्वामीजीकी तपोभूमि। श्रीबाँके-विहारीजीका मन्दिर। ये स्वामी श्रीहरिदासजीके पूज्यदेव हैं। बड़ी मनोहर मूर्ति है। यहाँ सब ही बातें विलक्षण हैं। सबेरे दस बजेसे पहले तो आप उठते ही नहीं हैं। दर्शन होतेमें भी क्षण-क्षणमें पर्दा आ जाता है। वर्षदिनमें एक ही दिन अक्षय-तृतीयाको चरणोंके दर्शन होते हैं। वर्षभरमें एक ही दिन आश्विन शुक्ला पूर्णमासीको मुकुट और वंशी धारण करते हैं। एक ही दिन श्रावण शुक्ला तृतीयाको हिण्डोलेमें झूलते हैं। दूध-भात आपका प्रधान भोग है। मन्दिरमें शंख, घण्टा-घड़ियाल, मृदङ्ग आदि किसी प्रकार-का बाजा नहीं बजता है। स्वामी श्रीहरिदासजी बड़े पहुँचे हुए साधु थे, जिनकी कुटीपर तानसेनका चेला बनकर अकबर बादशाह आया था।

आगे स्वामी श्रीहितहरिवंशजीके दर्शन, श्रीराधावल्लभजीके दर्शन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीश्रीराधावल्लभजीकी झाँकी (वृन्दावन) पृष्ठ ५८

श्रीबाँकेविहारीजीका मन्दिर (वृन्दावन) पृष्ठ ५८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

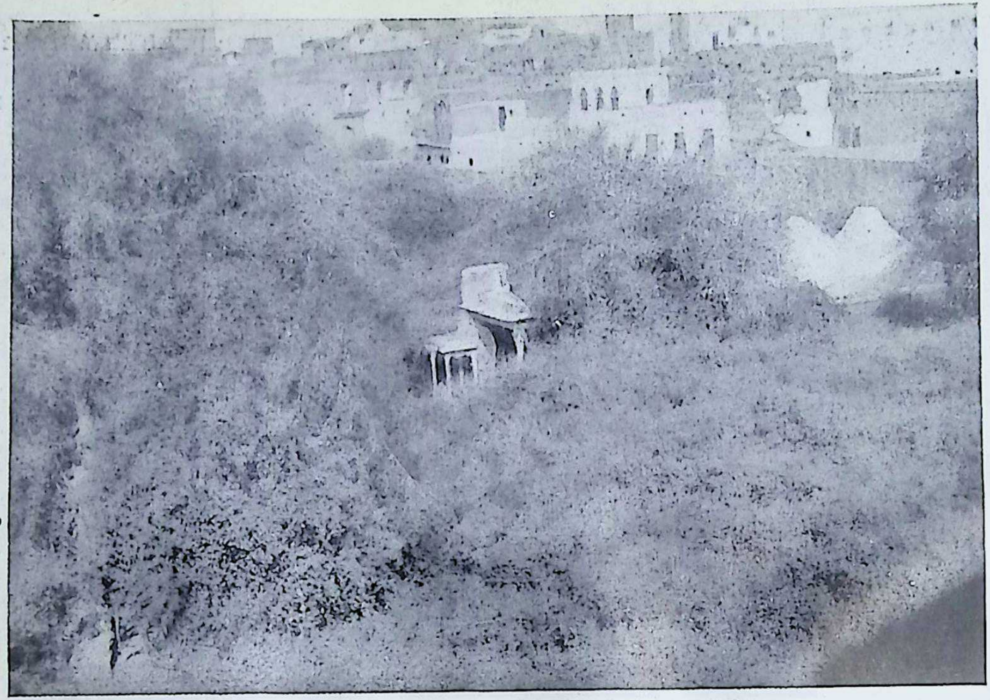

सेवाकुञ्ज (बन्दावन)

पृष्ठ ५६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

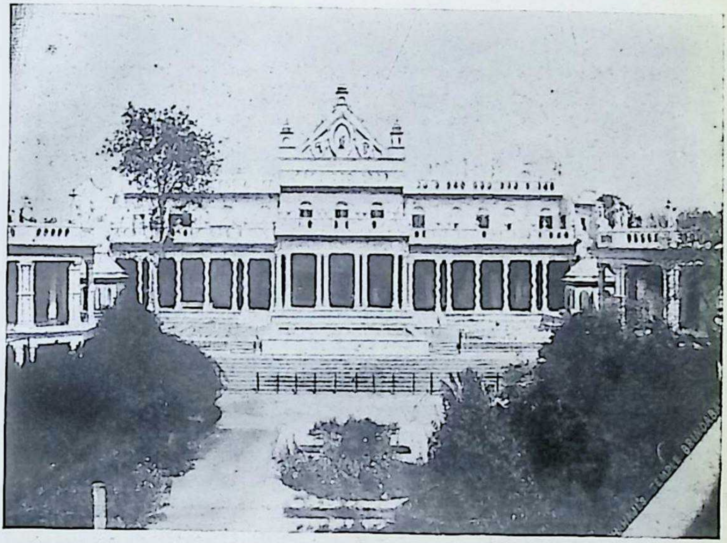

शाहविहारीलालजीका मन्दिर (वृन्दावन) पृष्ठ ५९

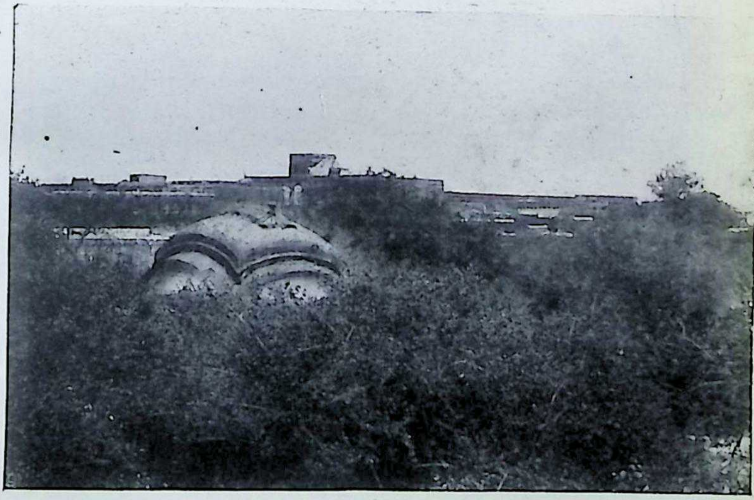

निधिवन (वृन्दावन) पृष्ठ ५९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

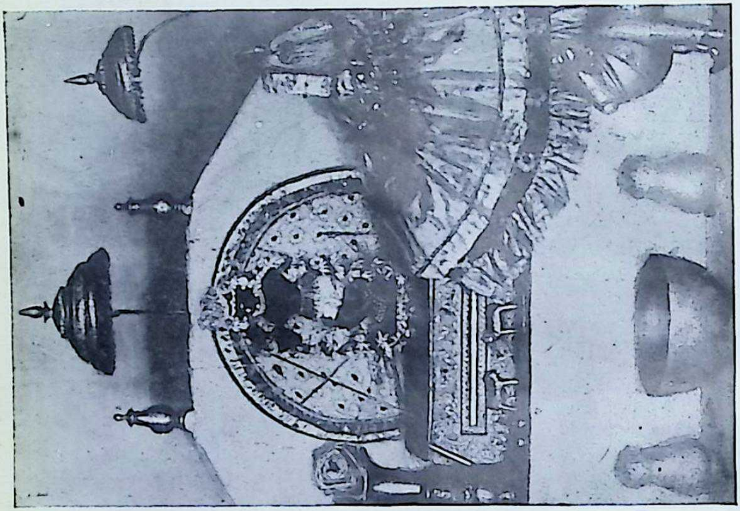

श्रीराधारमणजीकी झाँकी

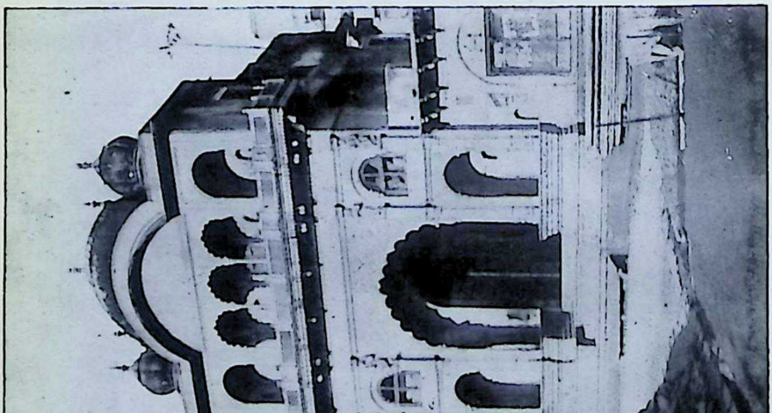

श्रीराधारमणजीका मन्दिर (वृन्दावन)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। ये स्वामी श्रीहरिवंशजीके पूज्यदेव हैं। स्वामी श्रीहरिवंश भी बड़े प्रतापी महात्मा थे। राधावल्लभजीके भोगमें खिचड़ी नामी वस्तु है।

आगे दानगली, मानगली, यमुनागली, कुञ्जगली, शृंगारवट, सेवाकुञ्ज हैं। सेवाकुञ्जमें रंगमहल है, जिसमें श्रीराधा-कृष्णका विचित्र चित्र-पट और शय्याके दर्शन होते हैं। ललिता-कुण्ड है, ललिताबाग है। श्याम तमालके वृक्ष हैं जिनकी गाँठ-गाँठमें शालग्रामजीके दर्शन होते हैं। यह श्रीराधा-कृष्णके नित्य-विहारका स्थल है। यहाँ रात्रिमें कोई नहीं रहने पाता। बन्दरतक भी जो दिनमें यहाँ असंख्य बैठे रहते हैं रातमें यहाँसे चले जाते हैं। यदि कोई रात्रिमें छिपकर रह जाता है तो सबेरे मरा हुआ या मुमूर्षु मिलता है। यहाँ अनेक प्रकारके फूलोंकी सुगन्ध आया करती है।

शृङ्गारवट—यहाँ श्रीराधिकाजीकी बैठक है। श्रीराधिका-जीके चरणचिह्न हैं।

सवा मनके शालग्रामजीका मन्दिर लोईबाजारमें है। इतने बड़े शालग्रामजी भी और कहीं देखनेमें नहीं आते हैं।

शाहविहारीलालजीका बनवाया हुआ छोटे राधारमणजीका मन्दिर है, जिसमें सङ्गमरमरके खम्भ, पुतलियाँ और जालीके कटावके काम बड़े सुन्दर हैं। मन्दिर देखने ही योग्य है। सेवा भी बड़े कोमल भावसे होती है। वसन्तपञ्चमीके दिन भगवान् वसन्ती कमरामें विराजते हैं। बड़ी शोभा होती है।

निधिवन—इसीमें श्रीस्वामीहरिदासजी विराजते थे। यहाँ ही श्रीबाँकेविहारीजी प्रकट हुए हैं, इसीसे इसका नाम निधिवन है। कोई-कोई इसको निधुवन कहते हैं, जो केवल भ्रम है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीराधारमणजीका मन्दिर—यह श्रीकृष्ण-चैतन्यमहाप्रभुके सम्प्रदायका मन्दिर है। ये श्रीराधारमणजी श्रीगोपालभट्टजीके पूज्यदेव हैं। सुनते हैं कि पहले ये श्रीशालग्रामरूपमें थे। एक समय कोई सेठ बहुत-से उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण इनके लिये लाया, पर जब दर्शन किये तब एक बाबाजीके शालग्रामजी-मात्र देखे। तब उसको भक्त्युद्रेकसे बड़ा सन्ताप हुआ, कहने लगा कि हे प्रभो! मैं तो बड़ी दूरसे और बड़ी श्रद्धासे आपके धारण करनेके लिये ये वस्तुएँ लाया था पर आप इस भक्तकी इन वस्तुओंको कैसे स्वीकार करेंगे? तब भक्तवत्सलको दया आयी और रात्रिमें उसे स्वप्न दिया कि तू चिन्ता मत कर। कल मैं तेरी सब वस्तुओंको स्वीकार कर लूँगा। दूसरे दिन प्रातःकाल जब उत्थापन हुआ तब देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि श्रीशालग्रामजी श्रीविग्रहरूपसे विराजमान हैं। यह देखकर भक्त बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने सब शृङ्गार प्रेम-गद्गद होकर भगवान्के भेंट किया। इनका प्रधान भोग मिट्टीकी छोटी-छोटी कुल्हियाँ हैं अर्थात् उन कुल्हियाओंमें बहुत औटा हुआ और बहुत मीठा मिला हुआ गाढ़ा दूध है और मीठे फुलके हैं। इस मन्दिरके पास रासमण्डलका चौतरा है और कई मन्दिर हैं। श्रीगोपालभट्टजी भी बड़े प्रतापी महात्मा थे। उस समय भगवदिच्छासे ही ऐसे-ऐसे प्रभावशाली महात्मा प्रकट हुए थे, जिन्होंने भक्ति-रसका समुद्र प्रकट कर दिया था।

इसके आगे गोपीनाथजीका मन्दिर है। यह भी श्रीकृष्ण-चैतन्यसम्प्रदायका मन्दिर है। परन्तु प्राचीन गोपीनाथजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रासमण्डल (वृन्दावन) पृष्ठ ६०

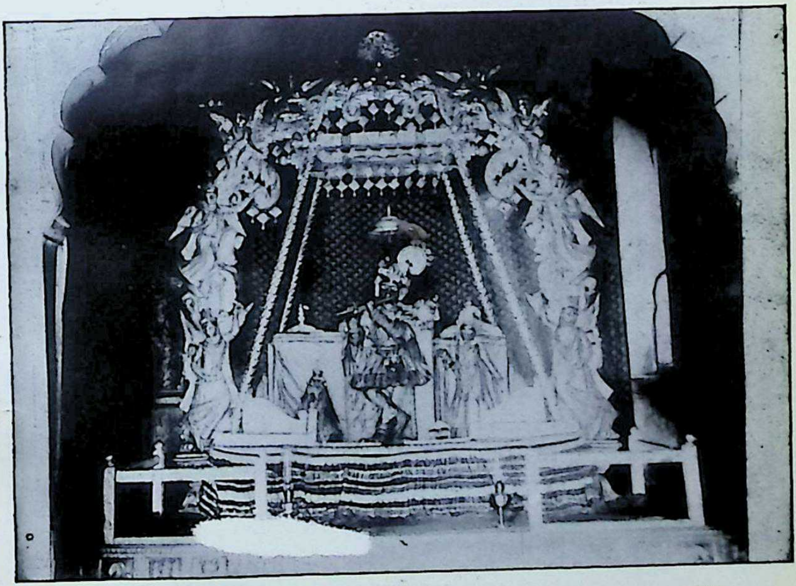

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

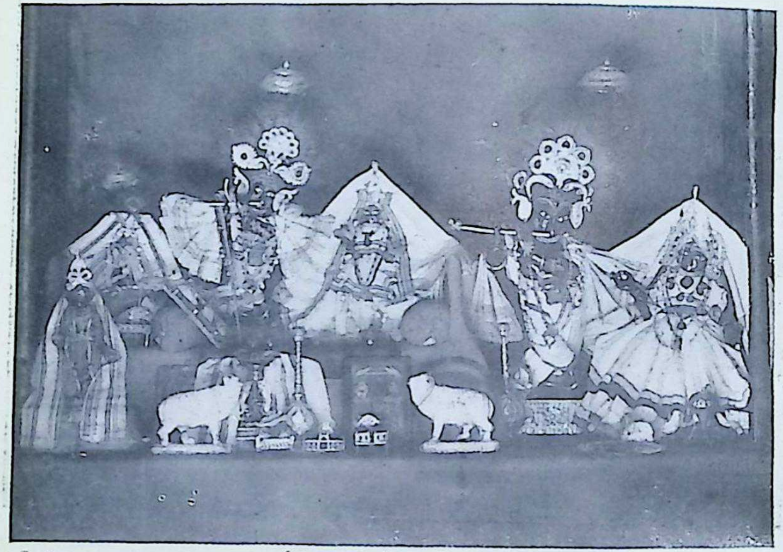

गोकुलानन्द-मन्दिर, श्रीराधाविनोदजी (वृन्दावन) पृष्ठ ६१

वंशीवट (वृन्दावन) पृष्ठ ६१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जयपुर पधार गये हैं। इनके सम्बन्धमें ऐसा सुना जाता है कि कोई बङ्गाली मधु पण्डित वृन्दावनमें आये और भगवान्‌के दर्शनोंके लिये व्याकुल हुए। भक्तकी व्याकुलतासे व्याकुल होकर भगवान्‌ने वंशीवटके नीचे गोपीनाथरूपसे दर्शन दिये। भक्त प्रसन्न हो गया। उनका पहला मन्दिर राजपूतानानिवासी श्रीरायशीलजीने बनवाया था। और वर्तमान मन्दिर किसी नन्दकुमार बाबूने बनवाया है।

श्रीगोकुलानन्द मन्दिर, दूसरा नाम श्रीराधाविनोद—लोकनाथ गोस्वामी श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुसे भी पहले वृन्दावन आये थे और उन्होंने श्रीराधाविनोद भगवान्‌को स्थापित किया तथा जीवनपर्यन्त सेवा करते रहे। इसके आगे वंशीवट है। वंशीवटके नीचे खड़े होकर श्रीश्यामसुन्दर वंशी बजाया करते थे। यहाँ श्रीठाकुरजी और ठकुरानीजीके चरणचिह्न हैं।

उसके आगे गोकुलनाथजी, गुसाईंजी, दामोदर रसाणीजी और महाप्रभुजीकी बैठकें हैं। नड़ियादके श्रीमदनमोहनजीका मन्दिर है।

गोपेश्वरमहादेवजीका मन्दिर——ये महादेवजी भी वज्रनाभके पधराये हुए हैं। इनके दर्शनके बिना वृन्दावनकी यात्रा सफल नहीं होती। जिस समय भगवान्‌ने शरद-पूर्णिमाको महारास किया था, तब महादेवजीकी भी इच्छा हुई कि हम भी इस लीलाको देखें, तब गोपीका रूप धरकर वहाँ पधारे। भगवान् ताड़ गये और बोले—आइये गोपीश्वर! उसी दिनसे गोपीश्वर या गोपेश्वर नामसे विख्यात होकर शिवजी यहाँ बस गये।

श्रीगिरधारीदास ब्रह्मचारीजीका मन्दिर ग्वालियरके महाराज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवाजीका बनवाया हुआ है जिसमें श्रीहंसगोपाल, सनकादिक, नारदजी और श्रीराधा-कृष्णजीके दर्शन हैं। ये ब्रह्मचारीजी भी बड़े सिद्ध थे। इनको वाक्‌सिद्धि थी। बड़े ब्राह्मणभक्त थे। पढ़े-लिखे कुछ नहीं थे, केवल भजनका प्रताप था। राजाओंसे साड़ा (साला) कहकर बोलते थे।

लालाबाबूका मन्दिर—यह भी बड़ा विलक्षण है। इसके शिखरपर चक्र-सुदर्शन विराजमान है और शिखर भी बहुत शोभायमान है। लालाबाबू विरक्त बनकर व्रजमें रहे, व्रजवासियोंके घरसे माधुकरी भिक्षा करते थे। परन्तु इन्होंने अपनी बुद्धिसे उस समयमें बहुत-से गाँव और स्थान बहुत थोड़े रुपयोंमें मोल ले लिये कि जिनमें प्रसिद्ध व्रजके स्थान हैं। इनकी जरा-सी धरतीपर रंगनाथके मन्दिरका डण्डा बन गया था, इसपर इन्होंने मुकदमा लड़कर डण्डा तुड़वा दिया। ये लालाबाबू कलकत्ताके बंगाली कायस्थ थे।

ब्रह्मकुण्ड है—इसको ब्रह्महद भी कहते हैं। भगवान्‌ने एक बार गोपोंको अपना ब्रह्मलोक दिखाया था। श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

ते तु ब्रह्महदं नीता मग्नाः कृष्णेन चोद्धृताः।
ददृशुर्ब्रह्मणो लोकं यत्राक्रूरोऽध्यगात् पुरा॥

—यह ब्रह्मकुण्ड इसी लीलाका द्योतक है।

श्रीरंगनाथका मन्दिर—जिसमें बहुत ऊँचा सुवर्णका गरुड़स्तम्भ है, विशाल पुष्करणी है, बीसियों त्रिमालियाँ (रहनेका स्थान) हैं। एक-एक त्रिमालीमें एक-एक कुँआ है। दक्षिणके मन्दिरोंके आकार-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

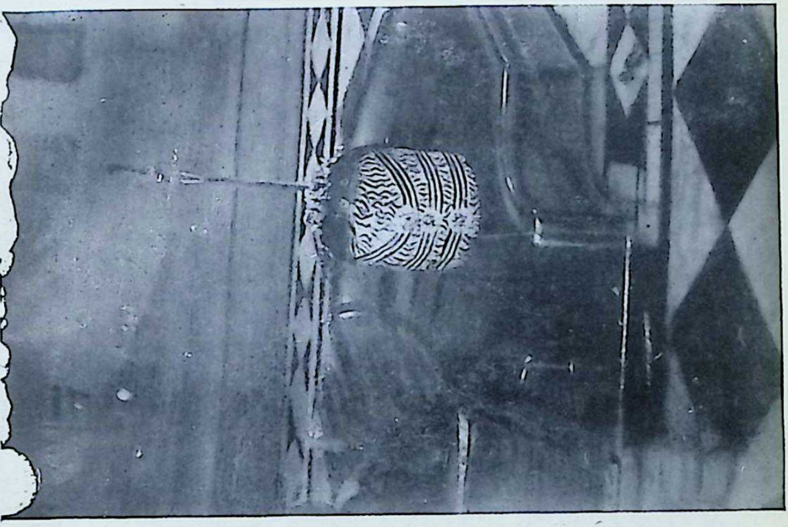

११ लालाबाबूका मन्दिर (वृन्दावन) पृष्ठ ६२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीरंगनाथजीका मन्दिर (वृन्दावन)

पृष्ठ ६२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकारका यह मन्दिर है। बहुत ऊँचा शिखर है । पश्चिमका दरवाजा व्रजके दरवाजोंके आकारका-सा है, चार परकोटा हैं । मन्दिरमें श्रीरङ्गनाथजीकी बड़ी विशाल मूर्ति है। चारों ओर मन्दिरोंमें अन्यान्य भगवन्मूर्तियाँ तथा आलवारोंकी (पूर्वाचार्योंकी) मूर्तियाँ हैं। यह मन्दिर व्रजमें श्रीरामानुज-सम्प्रदायकी कीर्तिरूप है । श्रीस्वामी रङ्गाचार्यजीके उपदेशसे जगत्प्रसिद्ध सेठ लक्ष्मी-चन्दजीके कनिष्ठ भ्राता सेठ राधाकृष्णजीका बनवाया हुआ है और अपने गुरु स्वामी श्रीरंगाचार्यजीकी भेंट किया हुआ है। ऐसा भी सुननेमें आता है कि स्वामी श्रीरंगाचार्यजीने ही अपनी सम्पत्तिसे—जो कि उनको तपोबलसे गोवर्धनमें प्राप्त हुई थी,—स्वर्गीय सेठजीके द्वारा यह मन्दिर बनवाया था। श्रीरङ्गाचार्यजीने इसका प्रबन्ध ट्रस्टियोंको सौंप दिया। राधा-कृष्णजी पूर्वमें जैनी थे, परन्तु भगवान्की ऐसी कुछ कृपा हुई कि श्रीरंगाचार्यजीके शिष्य होकर वैष्णव हो गये। इस मन्दिरमें उत्सव बहुत होते हैं, उनमें ब्रह्मोत्सव जो कि चैत्रके महीनेमें और वैकुण्ठोत्सव जो कि पौषके महीनेमें होता है बहुत प्रसिद्ध और बड़े सुन्दर हैं। इनमें नित्य नयी भगवान्की लीलाओंके दर्शन हुआ करते हैं । इस मन्दिरके आस-पास रामानुजसम्प्रदायके और भी कई मन्दिर हैं जिनमें श्रीस्वामी हयग्रीवजीका खटला बड़ा प्रसिद्ध है जिसमें पाठशाला है। विद्यार्थियोंको तथा अन्य साधुओंको भोजन मिलता है। और भी कई पाठशालाएँ हैं, जिनमें विशेषकर न्यायशास्त्रका अध्यापन हुआ करता है। उनमें श्रीरंगपाठशाला, धरणीधरजी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की पाठशाला उत्तम हैं। श्रीस्वामी रंगाचार्यजी तपस्वी, भजनानन्दी और पूर्ण विद्वान् थे। उन्होंने दण्डीजीको शास्त्रार्थमें जीता था। और कई ग्रन्थ बनाये हैं।

गोविन्ददेवजीका मन्दिर इस मन्दिरसे आगे है। गोविन्ददेवजी भी वज्रनाभके पधराये हुए हैं। यह मूर्ति श्रीरूपगोस्वामीजीको मिली थी, पर वह प्राचीन मूर्ति यवनोंके उत्पीडन-समयमें जयपुर पधार गयी और अब भी राजमहलमें विराजमान है। गोविन्ददेवजीका मन्दिर लाल पत्थरका बना हुआ बहुत ऊँचा, बड़ा विलक्षण है। इसमें ऐसी भूल-भुलइयाँ हैं कि जिन पैड़ियोंसे ऊपर जाते हैं और वहाँका सारा दृश्य देखकर नीचे उतरते हैं तो उन्हीं सीढ़ियोंसे नीचे कभी नहीं उतर सकते। यह पहले इतना ऊँचा था कि सबसे ऊँची अट्टालिकापर जलता हुआ दीपक दिल्लीमें दीखता था। पर इसका ऊपरका भाग यवनोंने गिरवा दिया। इसके पीछे दूसरा गोविन्ददेवजीका मन्दिर है, गोविन्दबाग है।

ज्ञान-गुदड़ी रंगजीके मन्दिरके पूर्वकी ओर यमुना-किनारे है। ज्ञान-गुदड़ी, गुदड़ी, हाट, पैंठ, बाजारको कहते हैं। यहाँ ज्ञानकी गुदड़ी थी। यहाँपर बैठकर प्राचीन महात्मा ज्ञान-भक्ति-की चर्चा किया करते थे। अपने-अपने सिद्धान्तोंका, रहस्योंका परस्पर आदान-प्रदान किया करते थे। इसमें श्रीविष्णुस्वामी-सम्प्रदायके विरक्तोंका अखाड़ा (मन्दिर) है। मोहनीदासजीका— जो कि स्वामी श्रीहरिदासजीकी शिष्यपरम्परामें थे—मन्दिर है, जो मोनीदासजीकी टट्टीके नामसे प्रसिद्ध है। यहाँकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

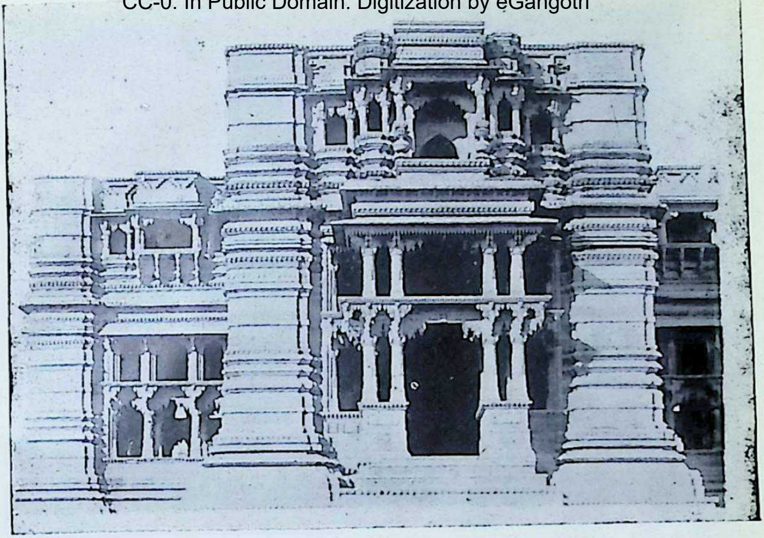

श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर (वृन्दावन) पृष्ठ ६४

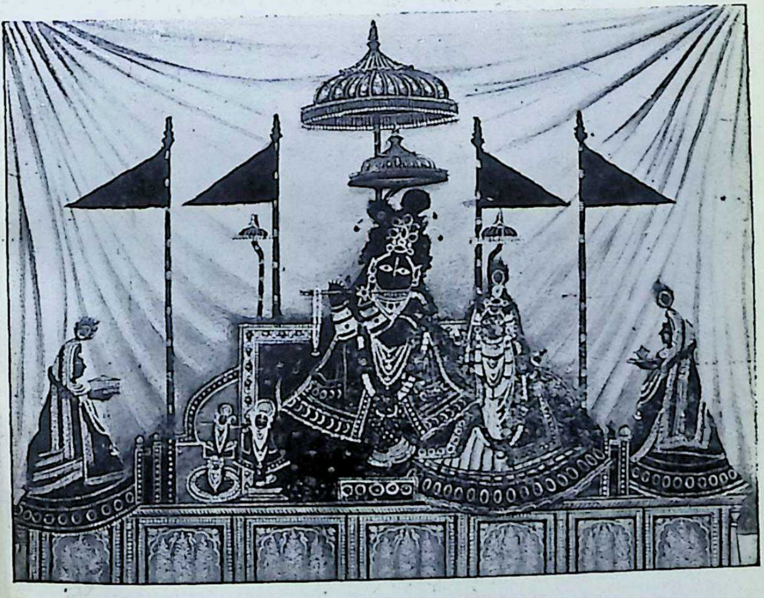

श्रीगोविन्ददेवजीकी झाँकी (जयपुर) पृष्ठ ६४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

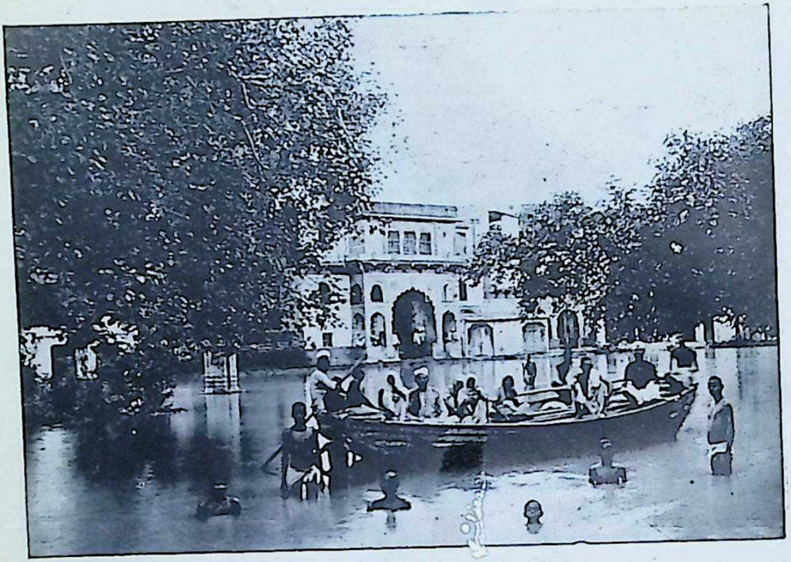

ज्ञान-गुदड़ी, यमुना-चढ़ाव (वृन्दावन) पृष्ठ ६४

यमुनापुलिन (वृन्दावन) पृष्ठ ६४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अरवी (घुइयाँ) और पूरी प्रधान भोग है, जो कि राधाष्टमीके दिन लगता है। कहते हैं कि यहाँ स्वामी हरिदासजीके करुआ और कौपीन रक्खे हैं। ज्ञान-गुदड़ीमें और भी कई मन्दिर हैं। जब कभी ज्ञान-गुदड़ीमें यमुनाजी आ जाती हैं तब बड़ा पर्व माना जाता है। यमुनापुलिन, ज्ञान-गुदड़ीमें श्रीयमुनाजीका बड़ा रमणीक पुलिन (तट) है। यहाँकी रज (रेती) बड़ी सुन्दर है।

श्रीकिशोरीरमणजीका मन्दिर शहरके भीतर सैयदबाजारमें शाहजहाँपुरवाली रानीका बनवाया हुआ है। यह विष्णुस्वामी-सम्प्रदायके गोस्वामी श्रीवंशीअलिजी (भ्रमर) के वंशके गोस्वामी श्रीलाड़िलीप्रसादजीकी भेंट है।

जैपुरके महाराजका बनवाया हुआ बहुत सुन्दर और विशाल मन्दिर शहरसे बाहर ब्रह्मचारीजीको भेंट किया हुआ है। इसमें जैपुरकी कारीगरीका अच्छा दृश्य है और ब्रह्मचारीजीके मन्दिरके अनुकरणका बना हुआ है, वैसी ही यहाँ मूर्तियाँ स्थापित हैं।

तड़ासके राजा वनमालीरायका बनवाया हुआ मन्दिर इसके सामने है। राजासाहब भगवान्से जमाई बाबूका सम्बन्ध रखते थे। इस मन्दिरमें ठाकुरजीको हुक्केका भी भोग लगाया जाता है।

बस प्रसिद्ध मन्दिर ये ही हैं और छोटे मन्दिर तो हजारों हैं, इसीसे कहते हैं कि 'वृन्दावनमें मन्दिर और बन्दर हैं।' किसी भक्तने कहा है कि—

बिंदरावनमें बँदरा वन। भजन करत हैं साधूजन॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसमें बहुत-से भजनानन्दी महात्मा छिपे हुए भजन करते हैं। विद्वान् भी यहाँ बहुत-से हैं। धर्मशाला, कुञ्ज, घाट बड़े सुन्दर बने हुए हैं और बहुत-से हैं। म्यूनिस्पालटी, कोतवाली, सफाखाना, डाकखाना, राम-कृष्ण-सेवाश्रम, भजनाश्रम, स्कूल, पाठशालाएँ भी बहुत हैं। आर्यसमाजियोंका गुरुकुल भी है। कुछ दिनोंसे मुसलमानोंकी एक मसजिद भी बन गयी है। रात्रिमें कान्स्टेबल 'जागो-जागो' न कहकर 'राधे-राधे' कहकर पहरा देते हैं। यहाँ श्रावणमें मेला बहुत अच्छा होता है।

केशीघाट, जहाँ भगवान्ने केशीदानवको मारा था। यहाँपर ही धीर समीर है। जिसका वर्णन जयदेव कविने किया है—

'धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली'

राजा महेन्द्रप्रतापका प्रेम महाविद्यालय यहींपर है, जो कि मन्दिरमेंसे भगवन्-मूर्तियोंको हटाकर बना है। आजकल सरकारने इसे 'नाजायज़' संस्था करार देकर जप्त कर लिया है। इसके पास दुर्वासा ऋषिका स्थल है। यहाँसे यमुना-पार जानेका मार्ग है।

बहुतसे यात्री वृन्दावनसे मथुरा चले आते हैं, पारके तीर्थोंको छोड़ देते हैं। बहुतसे यात्री चीरघाटसे या भयगाँव (भौ-गाँव) से यमुनापार होकर पारके तीर्थोंकी यात्रा करके फिर वृन्दावन आते हैं। प्रचलित परिपाटी भी यही है जैसे कि भौ-गाँवसे—

सुरीर (सुरभीरवन)

यहाँ जलमें बैठकर सौभरि ऋषिने तप किया है और उन्होंने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

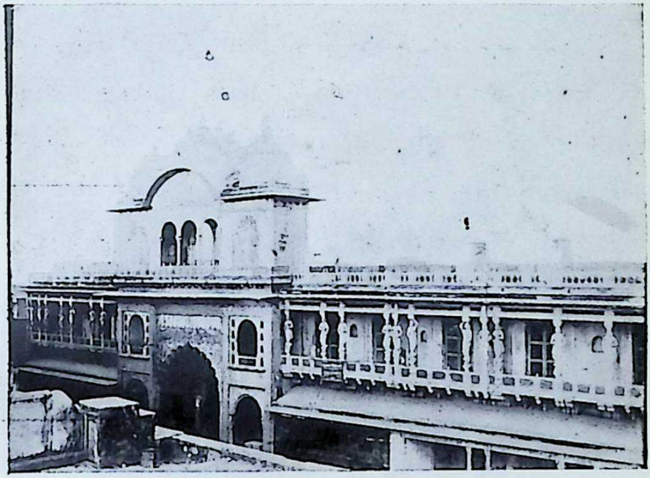

शाहजहाँपुरवाली रानीका मन्दिर (वृन्दावन)   पृष्ठ ६५

मानसरोवर   पृष्ठ ६६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

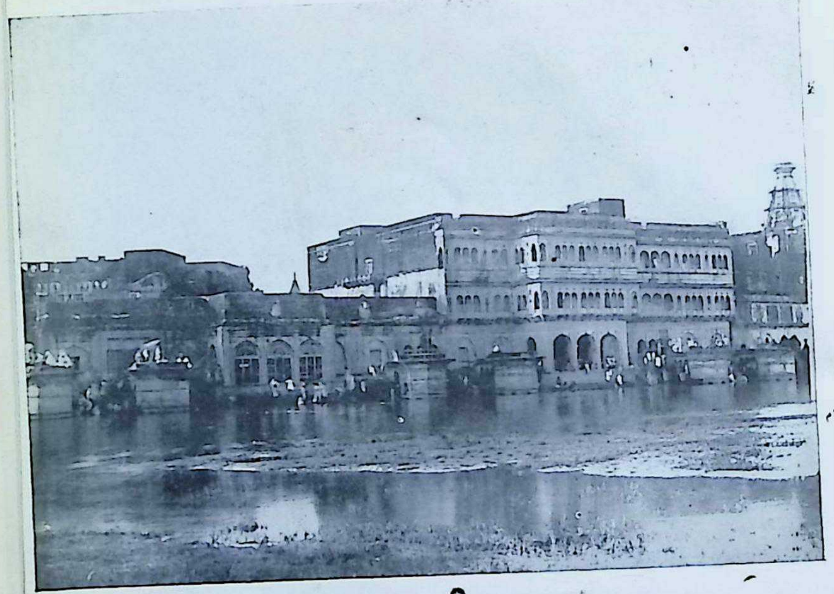

केशीघाट (वृन्दावन) पृष्ठ ६६

चीरघाट (वृन्दावन) पृष्ठ ६६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही व्रजमें जीवहिंसाको बन्द किया है। यहाँ सुरभीकुण्ड और बलदेवजीका मन्दिर है। इससे आगे—

मुञ्जाटवी

—(मँझ्यारी) है, जहाँ गायें और गोप वनमें मार्ग भूल गये। इधर चारों ओरसे दावानलके लग जानेसे गोप और गायें भगवान्‌को पुकारने लगे, तब भगवान्‌ने उनसे कहा कि आँखें मूँद लो। जब गोपोंने आँखें मूँद लीं, तब भगवान्‌ने अग्निको पान किया और गोप-गायोंको भाण्डीरवनमें पहुँचा दिया और उनसे कहा कि आँखें खोलो। जब गोपोंने आँखें खोलकर देखा तो न अग्नि है, न मुञ्जवन है।

भद्रवन (भदनवारो)

यहाँ गौघाट है। मध्याह्नके समय भगवान् गायोंको जल पिलाते थे और आप तथा बलदेवजी गोपोंके साथ मध्याह्नका राजभोग करते और जल पीते थे। यहाँ मधुसूदनकुण्ड है, मधुसूदन-मन्दिर और यमुना-किनारे बड़के पेड़के नीचे हनुमान्‌जी हैं। इससे आगे—

भाण्डीरवन

—है, जहाँ भाण्डीरवट है, भाण्डीरकूप है। यह बहुत पवित्र तीर्थ है। वत्सासुरको मारकर भगवान्‌ने इस पवित्र कूपको प्रकट किया था और इसमें स्नान किया था। यहाँ दाऊजी और श्रीकृष्णका मन्दिर है। यहाँपर ही बलदेवजीने प्रलम्बासुरको मारा था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मवैवर्तपुराण और गर्गसंहिताके अनुसार ब्रह्माजीने श्रीराधा-कृष्ण-का विवाह यहाँ ही कराया है। पहले जहाँ विवाहका उल्लेख किया गया है, वहाँ केवल किम्बदन्ती है, कोई आर्ष-प्रमाण नहीं मिला। यहाँ भगवान्‌के मुकुटका दर्शन है।

माँटगाँव

जहाँ भगवान्‌ने दही और माखनके माँट बखेरे तथा फोड़े हैं और फिर यशोदाजीके डरसे भागे हैं तथा उपवनमें जाकर छिपे हैं, तब यशोदाजीने ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कहा है—

नीतं यदि नवनीतं नीतं नीतं किमेतेन।
आतपतापितभूमौ माधव मा धाव मा धाव ॥

यहाँपर जीवगोस्वामीजीने भजन किया था। दाऊजीका मन्दिर है। उससे आगे—

बेलवन

—है, यहाँ श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है, महाप्रभुजीकी बैठक है। बेलवनसे वृन्दावन, जैसा कि आगे कह आये हैं। पुनः वृन्दावनसे—

खेलनवन

—जहाँ कि राधाकृष्ण खेले (क्रीडा किये) हैं। उससे आगे—

मानसरोवर

—(मानका स्थान)—यहाँ किसी समय भगवान्‌ने मान किया था,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर गोपियोंने बहुत ही विनती करके आपको मनाया था। यह सरोवर बहुत सुन्दर है। यहाँ राधा-कृष्णजीके दर्शन और बैठक हैं।

लोहवन

यहाँ कृष्णकुण्ड, लोहासुरकी गुफा और गोपीनाथजीका दर्शन है। यहाँ भगवान्ने लोहासुरको मारा है, सनकादिकोंने तप किया है। यहाँ ही—

बृहद्वन

—है, जो कई कोसके बीचमें था, वर्तमान महावन उसका एक भाग था, पर अब उस बृहद्वनका थोड़ा-सा अंश बाकी है। लोहवनसे कुछ दूर पूर्वकी ओर नींवगाँव है। जहाँ निम्बार्काचार्य प्रकट हुए थे। लोहवनसे आगे दक्षिणकी ओर—

आनन्दी-वन्दीदेवी

—हैं। ये दोनों देवियाँ श्रीनन्दराजके यहाँ गोबर थापा करती थीं और इसी बहाने नित्य श्रीकृष्ण और बलदेवजीके दर्शन किया करती थीं। यहाँ वन्दी-अनन्दी-कुण्ड है; आनन्दीवन्दी से आगे रीड़ागाँव है। अब उसको—

बलदेवगाँव

—कहा करते हैं। यहाँ श्रीबलदेवजी विराजते हैं। श्याम मूर्ति है, बड़ी मनोहर है। व्रजमें कई स्थानोंमें गोरेदाऊजी भी हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीबलदेवजीका प्रधान भोग माखन मिश्री है। यहाँ क्षीरसागर है। क्षीरसागरके पण्डा सनाढ्य हैं, और बलदेवजीके पुजारी हैवासी हैं। ये बलदेवजी वज्रनाभके पधराये हुए हैं। न जाने कैसे काल-महिमासे बहुत दिनतक ये क्षीरसागरमें शयन करते रहे। किसी समय ग्राऊस साहबके लेखानुसार जगन्नाथदास साधुको और वर्तमान हैवासियोंके कथनानुसार कल्याणजी हैवासीको स्वप्न दिया कि 'मैं क्षीरसागरमें शयन कर रहा हूँ, मुझे निकाल लो।' तब उन्होंने निकालकर एक कच्चे मन्दिरमें विराजमान कर दिया। सुनते हैं कि औरंगज़ेब मन्दिरोंको और मूर्तियोंको खण्डित करता हुआ जब व्रजमें अत्याचार कर रहा था तब बलदेवगाँवमें भी पहुँचा। यहाँ बलदेवजीके मन्दिरमेंसे बहुत-से भौंरे पैदा होकर औरंगज़ेबकी फौजको दिक करने लगे, इससे फौज भाग खड़ी हुई। औरंगज़ेबने यह चमत्कार देखकर इस मन्दिरको छोड़ दिया। इसीसे बलदेवजी व्रजमें विराज रहे हैं। किसीका कहना यह है कि मथुरामें श्रीकेशवकाश्मीरजी और श्रीकीलस्वामीजीने औरङ्गज़ेबको कई चमत्कार दिखलाये थे। उनसे ही मुग्ध होकर फिर शेष व्रजमें वह गया ही नहीं। इससे पारके तीर्थ उसके अत्याचारसे बच गये। अस्तु—

'दाऊजी तो गोरे थे यह मूर्ति श्याम क्यों है?' इसका उत्तर कोई तो यह देते हैं कि श्याम मूर्तिमें सौन्दर्य्य अधिक होता है इससे श्याम मूर्ति है। कोई कहते हैं श्रीकृष्णने एक बार अपना तेज बलदेवजीमें आविष्ट किया था। उस समयकी भावनासे दाऊजीमें श्यामता आ गयी और उस समयका निदर्शन यह श्याम मूर्ति है। श्रीभागवतमें लिखा है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीबलदेवजीकी झाँकी पृष्ठ ६९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

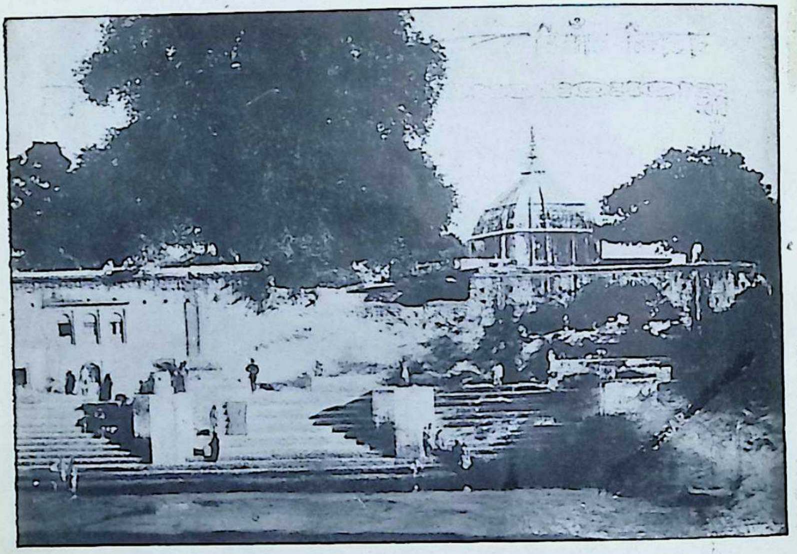

क्षीरसागर पृष्ठ ७०

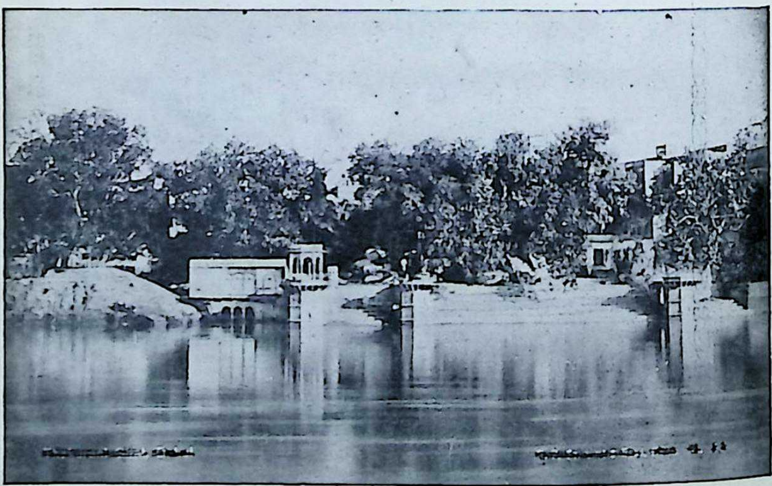

ठकुरानीघाट (गोकुल) पृष्ठ ७३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वयं विश्रमयत्यार्यं पादसंवाहनादिभिः ।

भगवान् आप ही पैर दाबकर बलदेवजीके परिश्रमको दूर करते हैं! और भी भगवान् बलदेवजीसे कहते हैं—

अहो अमी देववरामरार्चितं
पादाम्बुजं ते सुमनःफलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मन-
स्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥

इसमें और आगेके वर्णनमें दाऊजीमें वृक्ष, भौंरे, मोर, हिरनी इनकी भक्तिकी सूचना करके अन्तमें—

धन्येयमद्य धरणी तृणवीरुधस्त्वत्-
पादस्पृशो द्रुमलताः करजाभिमृष्टाः ।
नद्योऽद्रयः खगमृगाः सदयावलोकै-
र्गोप्योऽन्तरेण भुजयोरपि यत्स्पृहा श्रीः ॥

—इससे अपनी और दाऊजीकी एकता करते हुए उनमें निज तेज स्थापित किया है । यही दाऊजीकी मूर्तिमें श्यामताका कारण है । इस तेजके स्थापन होनेसे ही आगे दाऊजीने धेनुकासुर, प्रलम्बासुर आदिको मारा है । इससे पहले दाऊजीकी इस प्रकार-की कोई लीला देखनेमें नहीं आयी है । इन दाऊजीकी मूर्तिके दर्शन अन्त्यज भी कर सकते हैं । बलदेवजीसे पाँच कोस उत्तरकी तरफ दिवस्पति गोपके रहनेका—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवनगर

—स्थान है। यहाँपर रामसागरकुण्ड और उसके पास बहुत प्राचीन बहुत बड़ा एक कदम्बका वृक्ष है और दिवस्पतिगोपके पूजनेका गोवर्धन पर्वत भी वहाँ अबतक वर्तमान है। बलदेवगाँवके पास हतोड़ागाँव है वहाँ श्रीनन्दराजकी अथाई है।

ब्रह्माण्डघाट

'श्रीकृष्णने मृत्तिका खाई है' इस बातको सुनकर यशोदाजीने जब आपको धमकाया, तब आपने मुख खोल दिया और मुखमें श्रीयशोदारानीको ब्रह्माण्ड दिखा दिया। यह कथा श्रीमद्भागवतमें ही है। श्रीशंकराचार्यने इसका इस प्रकार वर्णन किया है—

मृत्स्नामत्सीहेतियशोदाताडनशैशवसन्त्रासम्।
व्यादितवक्त्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोकालिम्॥

उसी स्थानका नाम ब्रह्माण्डघाट है।

महावन

जिसमें चिन्ताहरण, यमलार्जुनभंग, बछड़ा चरानेका स्थान, नन्दराजके दाँतन (दतुअन) करनेका टीला, नन्दकूप, पूतनाखार, शकटासुर तृणावर्तका खार, नन्दभवन, दधिमथनका स्थान, भगवान्का छटी पालना, चौरासी खम्भोंका मन्दिर, मथुरानाथ, द्वारिकानाथ और श्यामजीका मन्दिर, गायोंका खिड़क, गोबरके टीले, दाऊजी-की और श्रीकृष्णजीकी रमणरेती, जहाँ दोनों भाई व्रजकी कीचमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घुटुवन चले हैं, गोपकूप, नारदटीला, जहाँ नारदजीने तप किया है। कोलाघाट जहाँ कोलेगाँव है।

कर्णावल

जहाँ भगवान्‌के कर्ण छिदे हैं।

लोचन भरि गये दोउ मातनके कनछेदन देखत मुरकी।
रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नौआकू घुरकी॥

—सूरदास

यहाँ कर्णबेधकूप और रतनचौक है। मदनमोहनजी, माधवरायजीके मन्दिर हैं। मथुरेशजीका प्राकट्यस्थान है। ये मथुरेशजी कोटामें विराजते हैं।

गोकुल

जहाँ नन्दराजकी गायोंका खिड़क है। ठकुरानीघाट है, यहाँ महाप्रभुजीने श्रीमद्भागवतके कई पारायण किये हैं। श्रीविट्ठलनाथजी, श्रीगोकुलनाथजीने भी कई पारायण किये हैं। इसीसे तीनोंकी बैठकें हैं। गोकुलनाथजी तो प्रायः गोकुलमें ही विराजते थे। आपने औरंगज़ेब बादशाहको अनेक चमत्कार दिखाकर धर्मकी और हिन्दुओंकी रक्षा की थी। इनके ठाकुरजीका नाम भी श्रीगोकुलनाथजी ही है। इसीसे गोकुलनाथजी गोकुलमें ही विराज रहे हैं, और सब स्वरूप उस यवनोत्पीडनके समयमें अन्य देशोंमें चले गये हैं। जो क्रमसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) मथुरेशजी कोटाको (२) विट्ठलनाथजी नाथद्वाराको, (३) द्वारकाधीशजी कांकरोलीको, (उदयपुर नरेश इसी गद्दीके शिष्य हैं) (४) गोकुलनाथजी गोकुलमें ही विराज रहे हैं (५) गोकुलचन्द्रमाजी कामवनको, (भरतपुर नरेश इसी गद्दीके शिष्य हैं) (६) बालकृष्णजी सूरतको, (गोकुलमें इनका कोई मन्दिर नहीं है। इस छठी गद्दीके सम्बन्धमें मतभेद भी है) मदनमोहनजी कामवनको। एक श्रीराजाठाकुरका मन्दिर है इनकी जमींदारी गोकुलमें है और प्रबन्ध श्रीनाथद्वाराके अधिकार-में है। इनके अतिरिक्त और भी कई मन्दिर हैं जिनकी संख्या सब मिलाकर चौबीस है। गोकुलमें रहनेसे ही वल्लभकुलके गोस्वामी गोकुलिया गुसाईं कहलाते हैं। गोकुलमें दो-एक विद्वान् भी अच्छे हैं। यहाँ ही श्रीविट्ठलनाथजीसे छीतस्वामी मिले हैं और इनके चमत्कारको देखकर सर्वप्रथम यह पद कहा है—'भई अब गिरिधर सों पहिचान' ये छीतस्वामी अष्टछापके एक रत्न हैं। मथुराके चतुर्वेदी हैं। इनके वंशधर मथुरामें विद्यमान हैं।

रावल

जहाँ राधाघाट और श्रीलाडिलीजीके दर्शन हैं। यह श्रीराधाजी-का ननिहाल है, यहाँ ही श्रीराधाजीका जन्म हुआ था। यहाँसे यमुनाजीको पारकर मथुरा आते हैं, गोकुलसे भी मथुरा आ जाते हैं। बस, यह व्रजभूमिका संक्षिप्त परिचय है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ अन्य आवश्यक बातोंका वर्णन करके अब यह लेख समाप्त किया जाता है। कारण, व्रजमें इतने पावन स्थान हैं और उनके साथ ऐसे इतिहास लगे हुए हैं जिनका सविस्तर वर्णन करनेसे एक बृहद् ग्रन्थ तैयार हो सकता है। अकेले वृन्दावनमें ही ५००० मन्दिर बतलाये जाते हैं। व्रजमण्डलकी बड़ी महिमा मानी जाती है, और अबतक *'तीन लोकतें मथुरा न्यारी'* की बात यहाँ कुछ-कुछ देखनेमें आती है।

व्रजभूमिमें मसजिदें

यों तो व्रजमें मसजिद तथा गिरजाका भी प्रवेश हो गया है, परन्तु फिर भी हिन्दू-संस्कृतिका यहाँ साम्राज्य है। और जो मसजिदें बनीं उनके साथमें भी अलग-अलग इतिहास है, जो हिन्दुओंकी उदारता या घोर उदासीनता प्रकट करता है। उदाहरणार्थ—मथुरामें दो मसजिदें प्राचीन, प्रसिद्ध और विशाल हैं। एक तो केशवदेवजीके मन्दिरको तोड़कर औरङ्गजेबद्वारा बनवायी गयी और दूसरी चौक-बाज़ारमें अब्दुलनवी खाँकी बनवायी हुई यह मसजिद सन् १६६२ ईस्वीमें बनी बतलायी जाती है। और इसका इतिहास भी यह सुना जाता है कि जहाँ यह मसजिद है वहाँ पहले बस्ती नहीं थी, कुछ कसाइयोंकी झोपड़ियाँ थीं। अब्दुलनवी खाँने, जो नवमुस्लिम फ़क़ीर थे, मुसलमानोंको तो यह जँचा दिया कि देखो, मथुरामें तुम्हारी मसजिद बन जायगी और हिन्दुओंको यह समझाकर राज़ी कर लिया कि देखो, यह मसजिद बननेसे यहाँसे कसाई हट जायँगे और यह रहेगी भी मथुराके बाहर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस प्रकार नवी खाँने मसजिद बनवायी और फिर चार ब्राह्मणोंको इसमें घण्टा बजानेके लिये नियुक्त कर दिया। मसजिदके पास दूकानें भी बनवायीं जिनमेंसे आठ दूकानका किराया उन चार ब्राह्मणोंको जीविकार्थ मिलनेकी व्यवस्था कर दी।* कुछ ब्राह्मण वहाँ दुर्गापाठ, विष्णुसहस्रनाम तथा गोपालसहस्रनामका पाठ किया करते थे, उन्हें भी एक दूकान सौंप दी। इस प्रकार मसजिद बनकर भी इसपर अधिकार हिन्दुओंका ही रहा। एक मुल्ला भी वहाँ रहता था; पर उसे भी हिन्दू ही नियुक्त करते थे। पर इधर आकर हिन्दुओंने मूर्खतावश अपना अधिकार छोड़ दिया। अपनी दूकानें मुसलमानोंको बेच दीं; और तबसे यह मसजिद सच्ची मसजिद हो गयी। मथुरामें एक बार पेशवाकी सवारी आयी थी। उन्हें यहाँ यह मसजिद देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने तुरन्त इसे तोड़ देनेका हुक्म दे दिया; पर हिन्दुओंने ही खुशामद कर-कराकर इसे टूटनेसे बचा लिया। अस्तु!

व्रजभूमिमें गोवध!

हिन्दुस्थानमें गोरक्षाका प्रश्न एक बड़ा विकट है। गोभक्त हिन्दुओंको छातीपर पत्थर रखकर गोवध नाम सुनना तथा गोवध-कार्य होने देनेके लिये विवश होना पड़ता है। यहाँ व्रजमें भी गोवध होता है, यह कैसे परितापका विषय है। पर गोप्रेमी हिन्दुओंको यह जानकर परम सन्तोष होगा कि यहाँका गोवध

* इन घण्टा बजानेवाले ब्राह्मणोंमेंसे एक ब्राह्मणका वंश अबतक मथुरामें विद्यमान है और घण्टापाँड़ेके नामसे प्रसिद्ध है।—लेखक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्द कराना हिन्दुओंके लिये उतना कठिन नहीं है जितना अन्य स्थानोंका। कारण, यहाँ जो गोवध होता है वह सरकारी निषेधाज्ञाकी अवहेलना करके होता है। भरतपुरविजेता लार्ड लेक इस व्रजभूमिकी पवित्रतासे बहुत अधिक प्रभावित हुए थे और उन्होंने फरमान निकालकर कभी गोवध न करनेकी आज्ञा जारी की थी। यही नहीं, उन्होंने तो इस भूमिमें शिकारतक खेलनेकी मनाही कर दी थी और अबतक भी वही मनाही चली आ रही है। मथुरा और वृन्दावनके बीचमें यत्र-तत्र उनके उस फरमानके शिलालेख गड़े हुए हैं। बीचमें इस निषेधाज्ञाकी अवहेलना होते देखकर पुनः फरमान जारी किये जा चुके हैं। दुबारा हिदायतका एक फरमान सन् १८६६ में जारी किया हुआ इधर-उधर गड़ा मिलता है। गोवध-सम्बन्धी फ़रमानका पालन नहीं हो रहा है, इसलिये हिन्दुओंका परम कर्तव्य है कि वह चेष्टा करके गोवध बन्द करानेका प्रयत्न करें। एक बार प्रयत्न किया जा चुका है; पर इस बार ऐसा सामूहिक उद्योग करनेकी आवश्यकता है जो सफल होकर ही रहे। सर्वसाधारणकी जानकारीके लिये कर्नल लेककी निषेधाज्ञाका सरकारी हिन्दी-अनुवाद नीचे दिया जाता है—

लेक (सही अंग्रेजीमें)

'मथुराजीकी भूमि हिन्दुओंकी पवित्र पूजा-भक्ति करनेकी जगह है, इस ज़मीनके ऊपर किसी तरहसे गायोंके लिये किसी प्रकारकी तकलीफ और हानि पहुँचानेकी सब लोगोंको मनायी करनेमें आती है, उन गायोंकी तरफ़ सब लोगोंको दया और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदारताका बर्ताव करना चाहिये । उसी मथुराजीकी भूमिमें बड़ा भारी प्रसिद्ध पुरुष, बड़ी खिताबोंका पानेवाला, बड़ा शूरवीर, इस ज़मीनपर राज्यशासन जमानेवाला, सब राजाओंके ऊपर राज्य करनेवाला, बहादुर सेनापति लार्ड लेक बहादुर संग्राममें जीतनेवाला सेनापति, जिसके हृदयमें परमेश्वरने दया और उदारताका अंश स्थापन किया है, वह इस हुकुमनामाको बाहर निकालता है कि कसाईकी जाति कोई मानस अथवा दूसरा कोई मथुरा शहरका रहनेवाला होय अथवा लशकर (पलटन) का सिपाही (गोरा) अथवा मुसाफिर होय वह कोई सदरमें, शहरमें अथवा उसके पासवाली फौजकी छावनीमें अथवा मथुरा शहरके पड़ावोंमें गायका क़तल नहीं करै, इस बाबदमें यह ज़ाहिर किया जाता है कि कोई भी मानस इस ज़मीनमें गायोंको न काटे, यदि कोई इस अपराधको करेगा तो उसके कसूरपर निश्चय की हुई सज़ा दी जायगी और वह क़सूर किसी तरह माफ नहीं किया जायगा । लिखी आजकी तारीख़ ३ जौलाई १८०५ ईस्वी रवी उलसानी महीनाकी तारीख़ ५ सन् १२२० हिजरी ।

यह सच्ची कौपी फोटोग्राफ (सही अंग्रेजीमें)

रुस्तम मेहरवान आगा,

पारसी आनआरविस एण्ड हिन्दुस्तानी

ट्रान्सलेटर हाईकोर्ट, बम्बई ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मथुरा-वृन्दावनके बीचमें शिकार खेलनेकी मनाही

स्टेशनकी आज्ञा

मार्फत करनेल डब्ल्यू एच सिमोर साहेब कमेंण्डि अर्थात् सरदार मथुराका ७ मार्च सन् १८६६ मथुरा और वृन्दावन-वासी लोकमहामहिम कमेण्डर इनचीफ अर्थात् सिपहसालारका हजूरमें अर्जी गुजराये हैं। इस मजमूनके लशकरी गोरा और दूसरा अधगोरालोग उस मुकामोंके नगीच मनेका हुक्म रहते भी अबतक शिकार खेलते हैं, इसलिये करनेल सिमर साहेब फरमाते हैं कि यह साफ समझना चाहिये जो कोई यह काम करेगा उसको साहेब भारी सजा देनेमें कसर नहीं करेंगे। मथुरा और वृन्दावनके बीच यमुनाका दोनों किनारा हिन्दुओंके समीप पवित्र बराबर हैं, इस कारण निश्चय निषेध हुआ कि कोई उन मुकामोंमें वा उनके बीच वा नगीच गोली न चलावे। सन् १८६६ अंगरेजी २४ फरवरी ६ नम्बरका हुकुम मुताविक मौजा गोकुल और गिर्द उसका अन्दाज डेढ़ मील नोरंगावादसे और यमुनाके दोनों किनारों निषिद्ध स्थान मुनसल्ला हैं, उस स्थानमें लशकरीलोक शिकार नहीं खेलेगा मुताविक हुकुम अलिन रडीमलेपट्टन साहेब स्टेशन स्टाफ मथुरा।

एक आवश्यक सूचना

इसके सिवा और एक आवश्यक सूचना है। मथुरामें विश्रान्तघाटसे जिसका माहात्म्य-वर्णन ऊपर किया जा चुका है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यमुनाजी दिन-दिन दूरातिदूर पहुँचती जाती हैं। मथुरावासियों तथा धनी यात्रियोंका परम धर्म है कि वे उद्योग करके उन्हें, घाटपर ले आयें और वह सदा उस घाटपर तथा अन्य घाटोंपर, जिनपर अबतक वे हैं, बनी रहें। यदि ऐसा उद्योग न किया गया तो मथुराकी सारी शोभा नष्ट हो जायगी।

मथुरासे कुछ तीर्थस्थानोंकी दूरी

		मील	
मथुरासे	वृन्दावन	६	
,,	गरुड़गोविन्द	३	
,,	गोकुल	४	
,,	महावन	५	कच्चे पुलसे
,,	,,	८	पक्के पुलसे
,,	बलदेव	१०	कच्चे पुलसे
,,	,,	१३	पक्के पुलसे
,,	गोवर्द्धन	१३	
,,	राधाकुण्ड	१७	
,,	नन्दगाँव	२३	
,,	बरसाना	२८	
,,	रावल	४	
,,	शान्तकुण्ड	४	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेखकपरिचयः

श्रीश्रीदेवाचार्यो विप्रः सारस्वतो ह्यासीत्।
विष्णुस्वामिपदानुगगोस्वामी कृष्णभक्ताग्र्यः ॥१॥

(तत्कुले) आसीच्छ्रीमच्छीलचन्द्राभिधानः
पुत्रस्तस्य श्रीसुखानन्दनामा।
तस्यापि श्रीसोमकृष्णो बभूव
तत्पुत्रोऽहं लक्ष्मणः कारकोऽस्य ॥२॥

चातुर्य्यमस्ति गणना विदुषां समाजे
श्रेष्ठे कुले जनिरथो बहवः सखायः।
किञ्चिद्यशश्च हरिभक्तिलवस्तदित्थ-
मर्थं विना सकलसम्पदनुग्रहोऽहो ॥३॥

सन्त्यक्ता जगदेषणा हि सकला मोहोऽपि कौटुम्बिकः
प्रध्वस्तो ममतास्पदन्तु किमपि ह्यन्यन्न चास्त्येव नः।
दासत्वेन हरेरहङ्कृतिरपि प्राणाशि शुद्धोऽभवं
श्रीमत्कृष्णपदारविन्दयुगलप्राप्तौ स्पृहा केवलम् ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राम बीना कोई न पार सुनो सनँसार
राम है हरता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरिः

नयी पुस्तकें नयी पुस्तकें

श्रीज्ञानेश्वर-चरित्र और ग्रन्थ-विवेचन

ले०—हरिभक्तिपरायण पं० श्रीलक्ष्मण रामचन्द्र पांगारकर बी० ए०
अनुवादक—पं० श्रीलक्ष्मण नारायण गर्दे सम्पादक 'श्रीकृष्ण-सन्देश'

एण्टिक कागज, पृष्ठ ३९६, छपाई अच्छी, एक चित्र मूल्य ॥।-) मात्र। महाराष्ट्रके सन्तोंमें श्रीज्ञानेश्वर महाराज अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। महाराष्ट्रके प्रायः सभी भक्त सन्तोंपर आपका प्रभाव पड़ा है। लोक-प्रसिद्ध 'श्रीज्ञानेश्वरी-गीता' आपकी ही रचना है। इस ग्रन्थमें आपके चरित्रके साथ-साथ आपके उपदेशोंका भी अमूल्य संग्रह है। पुस्तकमें आपके जीवनके अनेक चमत्कारोंका वर्णन है। आपके जीवनसे अनेक शिक्षाएँ, ज्ञान और प्रकाश मिलता है। एक बार पढ़कर देखिये।

विष्णुसहस्रनाम-शांकरभाष्य हिन्दी-अनुवाद-सहित (सचित्र)

अनुवादक—श्रीभोलेबाबाजी महाराज

यह डिमाई आठपेजी २७५ के लगभग पेजका ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी है। भगवान्‌के विविध नामोंके रहस्य इस ग्रन्थमें बताये गये हैं। छपाई नये ढंगसे ही एक तरफ भाष्य और दूसरी तरफ अर्थ देकर की गयी है। कई बातोंके भेद दिखानेके लिये छोटे-बड़े कई प्रकारके टाइपोंसे काम लिया गया है। इससे समझनेमें सुगम है। ऐसी सुन्दर पुस्तक अभीतक हमारे देखनेमें नहीं आयी। चिकने कागजपर छपी पुस्तकका मूल्य केवल ॥=) मात्र। श्रीविष्णुसहस्रनामके लिये अधिक क्या लिखें! इसके लिये बहुत लोग पूछा करते थे। अब यह तैयार हुआ है।

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भजन-संग्रह चौथा भाग

(मुसलमान सन्त और कवियोंके भजनोंका संग्रह)

संग्रहकर्त्ता—श्रीवियोगी हरिजी

पाकेट-साइज, सफेद चिकना कागज, सुन्दर छपाई, मूल्य =) मात्र, इसमें ३०-३२ मुसलमान सन्त और कवियोंके पद संगृहीत हैं। नजीर, रहीम, यारी साहब, रसखानि, बुल्लेशाह आदि अनेक मुसलमानोंके पद हिन्दू-सन्तोंके पदोंकी तरह ही अति सुन्दर भावमय हैं, जिनको पढ़नेसे बड़ा आनन्द मिलता है।

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीकृत

हनुमान-बाहुक

(सानुवाद, सचित्र)

अनुवादक—पं० श्रीमहावीरप्रसादजी मालवीय वैद्य 'वीर'

यह हनुमान्‌जीकी उन प्रार्थनाओंका प्रसिद्ध संग्रह है जो श्रीगोस्वामीजीने अपने हाथमें पीड़ा होनेपर उसके निवारणके लिये बनायी थी। अनेक लोग इसका नित्य पाठ करते हैं। श्रीहनुमान्‌जीका एक सुन्दर चित्र भी लगा दिया गया है। मूल्य -)॥ डेढ़ आना।

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरिः

गीताप्रेस, गोरखपुर

के

पुस्तकोंकी संक्षिप्त सूची

आश्विन १९९०

(१) पुस्तकोंके विशेष विस्तार तथा पूरा नियम जाननेके लिये बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

(२) हमारे यहाँ अनेक प्रकारके धार्मिक छोटे, बड़े, रंगीन और सादे चित्र मिलते हैं। विशेष जानकारीके लिये चित्र-सूची मँगाइये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ ध्यान देने योग्य बातें—

(१) हर एक पत्रमें नाम, पता, डाकघर, जिला बहुत साफ देवनागरी अक्षरोंमें लिखें। नहीं तो जवाब देने या माल भेजनेमें बहुत दिक्कत होगी। साथ ही उत्तरके लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिये।

(२) अगर ज्यादा किताबें मालगाड़ी या पार्सलसे मँगानी हों तो रेलवे-स्टेशनका नाम जरूर लिखना चाहिये।

(३) थोड़ी पुस्तकोंपर डाकखर्च अधिक पड़ जानेके भयसे एक रुपयेसे कमकी वी० पी० प्रायः नहीं भेजी जाती, इससे कमकी किताबोंकी कीमत, डाकमहसूल और रजिस्ट्री-खर्च जोड़कर टिकट भेजें।

(४) एक रुपयेसे कमकी पुस्तकें बुकपोस्टसे मँगवानेवाले सज्जन ।) तथा रजिस्ट्रीसे मँगवानेवाले ।=) (पुस्तकोंके मूल्यसे) अधिक भेजें। बुकपोस्टका पैकेट प्रायः गुम हो जाया करता है; अतः इस प्रकार खोयी हुई पुस्तकोंके लिये हम जिम्मेवार नहीं हैं।

कमीशन-नियम

१) से कमकी पुस्तकोंपर कमीशन नहीं दिया जाता। १) से ५) तक ६।) सैकड़ा, ५) से १०) तक १२॥) सैकड़ा, फिर २५) तक १८॥।) सैकड़ा, इससे ऊपर २५) सैकड़ा दिया जाता है।

३०) की पुस्तकें होनेसे ग्राहकको रेलवे-स्टेशनपर मालगाड़ीसे फ्री डिलेवरी दी जायगी। परन्तु सभी प्रकारकी पुस्तकें लेनी होंगी, केवल गीता नहीं। दीपावलीसे दीपावलीतक १०००) नेटकी पुस्तकें सीधे आर्डर भेजकर लेनेवालोंको ३) सैकड़ा कमीशन और दिया जायगा। जल्दीके कारण रेलपार्सलसे मँगवानेपर आधा भाड़ा दिया जायगा। इससे अधिक कमीशनके लिये लिखा-पढ़ी न करें।

यह कमीशन सिर्फ गीताप्रेस, गोरखपुरसे ही मिल सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गीताप्रेसकी पुस्तकें

*श्रीमद्भगवद्गीता-[श्रीशांकरभाष्यका सरल हिन्दी-अनुवाद] इसमें मूल भाष्य है और भाष्यके सामने ही अर्थ लिखकर पढ़ने और समझनेमें सुगमता कर दी गयी है। श्रुति, स्मृति, इतिहासोंके प्रमाणोंका सरल अर्थ दिया गया है । पृष्ठ ५०४, ३ चित्र, साधारण जिल्द २॥) बढ़िया जिल्द ... २॥।)

श्रीमद्भगवद्गीता-मूल, पदच्छेद, अन्वय, साधारण भाषाटीका, टिप्पणी, प्रधान और सूक्ष्म विषय एवं त्यागसे भगवत्प्राप्ति-सहित, मोटा टाइप, कपड़ेकी जिल्द, पृष्ठ ५७०, बहुरंगे ४ चित्र १।)

श्रीमद्भगवद्गीता-गुजराती-टीका, गीता नम्बर दोकी तरह ... १।)

श्रीमद्भगवद्गीता-मराठी-टीका, हिन्दीकी १।) वालीके समान मूल्य १।)

श्रीमद्भगवद्गीता-प्रायः सभी विषय १।) वालीके समान, विशेषता यह है कि श्लोकोंके सिरेपर भावार्थ छपा हुआ है, साइज और टाइप कुछ छोटे, पृष्ठ ४६८, मूल्य ॥≡) सजिल्द ... ॥।=)

श्रीमद्भगवद्गीता-बंगला-टीका, गीता नं० ५ की तरह मू० १) स० ... १।)

श्रीमद्भगवद्गीता-श्लोक, साधारण भाषाटीका, टिप्पणी, प्रधान विषय और त्यागसे भगवत्-प्राप्तिनामक निबन्धसहित, साइज मझोला, मोटा टाइप, ३१६ पृष्ठकी सचित्र पुस्तकका मूल्य ॥) स० ... ॥≡)

गीता-मूल, मोटे अक्षरवाली, सचित्र, मूल्य ।-) सजिल्द ... ।≡)

गीता-साधारण भाषाटीका, पाकेट-साइज, सभी विषय ॥) वालीके समान, सचित्र, पृष्ठ ३५२, मूल्य ≈)॥ सजिल्द ... ≡)॥

गीता-भाषा, इसमें श्लोक नहीं हैं। अक्षर मोटे हैं. १ चित्र मू० ।) स० ।≈)

गीता-मूल तावीजी, साइज २ × २॥ इञ्च, सजिल्द ... =)

गीता-मूल, विष्णुसहस्रनामसहित, सचित्र और सजिल्द ... =)

गीता-७॥ × १० इञ्च साइजके दो पन्नोंमें सम्पूर्ण ... -)

गीता-सूची (Gita-List)अनुमान २००० गीताओंका परिचय ॥)

अध्यात्मरामायण—सटीक, आठ चित्रोंसे सुशोभित-एक तरफ श्लोक और उनके सामने ही अर्थ है, हालहीमें प्रकाशित हुआ है, जल्दी नहीं लेनेवालोंको दूसरा संस्करण छपनेतक ठहरना पड़ेगा । मू० १॥।) सजिल्द ... २)

†प्रेम-योग-सचित्र, लेखक-श्रीवियोगी हरिजी, पृष्ठ ४२०, बहुत मोटा एण्टिक कागज, मूल्य अजिल्द १।) सजिल्द ... १॥)

---

* दुबारा छप रही है। पहला संस्करण समाप्त हो गया। † दुबारा छपेगी तो मिलेगी।

पता-गीताप्रेस, गोरखपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीकृष्ण-विज्ञान—अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीताका मूलसहित हिन्दी-पद्यानुवाद, गीताके श्लोकोंके ठीक सामने ही कवितामें अनुवाद छपा है। दो चित्र, पृष्ठ २७५, मोटा कागज, मू० १) स० ... १।)

विनय-पत्रिका—सरल हिन्दी-भावार्थ-सहित, ६ चित्र, अनुवादक—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, मू० १) सजिल्द ... १।)

*भागवतरत्न प्रह्लाद—३ रङ्गीन, ५ सादे चित्रोंसहित, पृष्ठ ३४०, मोटे अक्षर, सुन्दर छपाई, मूल्य १) सजिल्द ... १।)

श्रीश्रीचैतन्य-चरितावली—(खण्ड १) सचित्र, श्रीचैतन्यदेवकी बड़ी जीवनी। पृष्ठ ३६० मू० ॥।=) सजिल्द १=)

श्रीश्रीचैतन्य-चरितावली—(खण्ड २) सचित्र, अभी छपी है। अवश्य देखें। पृष्ठ ४५० मूल्य १=) सजिल्द १।=)

श्रीमद्भागवतान्तर्गत एकादश स्कन्ध—सचित्र, सटीक, पृष्ठ ४२०, मूल्य केवल ॥।) सजिल्द ... १)

देवर्षि नारद—२ रंगीन, ३ सादे चित्रोंसहित, पृष्ठ २४०, सुन्दर छपाई, मूल्य ॥।) सजिल्द ... ... १)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग १—सचित्र, लेखक—श्रीजयदयालजी गोयन्दका, यह ग्रन्थ परम उपयोगी है। इसके मननसे धर्ममें श्रद्धा, भगवान्में प्रेम और विश्वास एवं नित्यके बर्तावमें सत्य व्यवहार और सबसे प्रेम, अत्यन्त आनन्द एवं शान्तिकी प्राप्ति होती है। पृष्ठ ३५८, मूल्य ॥=) सजिल्द ... ॥।–)

तत्त्व-चिन्तामणि—भाग २—सचित्र, लोक और परलोकके सुख-साधनकी राह बतानेवाले सुविचारपूर्ण सुन्दर-सुन्दर लेखोंका अति उत्तम संग्रह है। ६०० से ऊपर पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य प्रचारार्थ केवल ॥।=) रक्खा गया है। यह अभी छपी है। एक पुस्तक अवश्य मँगवावें।

नैवेद्य—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारके २८ लेख और ६ कविताओंका सचित्र नया सुन्दर ग्रन्थ, पृ० ३५०, मू० ॥≈) स० ... ॥।–)

श्रीज्ञानेश्वर-चरित्र—दक्षिणके अत्यन्त प्रसिद्ध, सबसे अधिक प्रभावशाली भक्त, "श्रीज्ञानेश्वरीगीता" के कर्ताकी जीवनदायिनी जीवनी और उनके उपदेशोंका नमूना। एक बार अवश्य पढ़ें। सचित्र, पृष्ठ ३९६, मू० ... ... ॥।–)

---

* दुबारा छपेगी तो मिल सकेगी।

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विष्णुसहस्रनाम—शांकरभाष्य—हिन्दी-टीकासहित, सचित्र भाष्यके सामने ही उसका अर्थ छापा गया है। नित्य पाठके स्तोत्रोंमें सबसे अधिक प्रचार विष्णुसहस्रनामका ही है। भगवान्‌के नामोंके रहस्य जाननेके लिये यह अर्थ अद्वितीय है, मूल्य ॥=) बहुत सुलभ रक्खा है। अर्थ जानकर पाठ करनेसे यह अति आनन्ददायक है।

श्रुति-रत्नावली—लेखक—स्वामीजी श्रीभोलेबाबाजी, खास-खास श्रुतियोंका अर्थसहित संग्रह, एक पेजमें मूल श्रुतियाँ और उसके सामनेके पेजमें उनके अर्थ रक्खे गये हैं, मू० ॥)

तुलसी-दल—लेखक—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, इसमें छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, आस्तिक-नास्तिक, विद्वान्-मूर्ख, भक्त-ज्ञानी, गृहस्थी-त्यागी, कला और साहित्य-प्रेमी सबके लिये कुछ-न-कुछ उन्नतिका मार्ग मिल सकता है। पृष्ठ २६४, सचित्र, ॥) स० ॥≡)

श्रीएकनाथ-चरित्र—ले०—हरिभक्तिपरायण पं० लक्ष्मण रामचन्द्र पांगारकर, भाषान्तरकार—पं० श्रीलक्ष्मण नारायण गर्दे। हिन्दी-में एकनाथ महाराजकी जीवनी अभीतक नहीं देखी, मूल्य ... ॥)

दिनचर्या—(सचित्र) उठनेसे सोनेतक करनेयोग्य धार्मिक बातोंका वर्णन। नित्य पाठके योग्य स्तोत्र और भजनोंसहित। मूल्य ॥)

विवेक-चूडामणि—(सानुवाद, सचित्र) पृ० २२४, मू० ।≡) स० ॥≠)

श्रीरामकृष्ण परमहंस—(सचित्र) इस ग्रन्थमें इन्हींके जीवन और ज्ञानभरे उपदेशोंका संग्रह है। पृ० २५०, मूल्य ... ।≡)

भक्त-भारती—७ चित्र, कवितामें ७ भक्तोंकी सरल कथाएँ, मू० ।≡) स० ॥≠)

भक्त-बालक—गोविन्द, मोहन आदि बालक-भक्तोंकी कथाएँ हैं मू० ।-)

भक्त-नारी—स्त्रियोंमें धार्मिक भाव बढ़ानेके लिये बहुत उपयोगी है ।-)

भक्त-पञ्चरत्न—सद्गृहस्थोंके लिये यह पुस्तक बड़े कामकी है ।-)

गीतामें भक्ति-योग—(सचित्र) लेखक—श्रीवियोगी हरिजी ... ।-)

परमार्थ-पत्रावली—श्रीजयदयालजी गोयन्दकाके ५१ कल्याणकारी पत्रोंका संग्रह, पृष्ठ १४४, एण्टिक कागज, मूल्य ... ।)

माता—श्रीअरविन्दकी अंगरेजी पुस्तक (Mother) का हिन्दी-अनुवाद, मूल्य ... ।)

श्रुतिकी टेर—(सचित्र) लेखक—स्वामीजी श्रीभोलेबाबाजी, मू० ।)

ज्ञानयोग—सन्त श्रीभवानीशंकरजी महाराजके ज्ञानयोगसम्बन्धी उपदेश, पृष्ठ १२५, मूल्य ... ।)

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्रजकी झाँकी—लगभग ५० चित्र, मूल्य ।) भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी लीलाभूमिके सौन्दर्य, माहात्म्य और विचित्रताओंका परिक्रमाके ढङ्गसे बड़ा सुन्दर वर्णन है। पढ़नेसे व्रजयात्राका-सा आनन्द आता है।

पत्र-पुष्प *—सचित्र भावमय भजनोंकी पुस्तक, पृष्ठ ६६, मू० ≡)॥ स० ।)॥

प्रबोध-सुधाकर-(सानुवाद, सचित्र) इसमें विषयभोगोंकी तुच्छता दिखाते हुए आत्मसिद्धिके उपाय बताये गये हैं, मूल्य ≡)॥

गीता-निबन्धावली—गीताकी अनेक बातें समझनेके लिये उपयोगी है, यह गीता-परीक्षाकी मध्यमाकी पढ़ाईमें रक्खी गयी है, मू० ≡)॥

मानव-धर्म—ले०—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, पृष्ठ ११२, मूल्य ≡)

साधन-पथ— ,, सचित्र, पृ० ७२, मू० ⁄)॥

अपरोक्षानुभूति—मूल श्लोक और अर्थसहित सचित्र मूल्य … =)॥

मनन-माला—यह भावुक भक्तोंके बड़े कामकी चीज है मू० … =)॥

वेदान्त-छन्दावली—ले०—स्वामी श्रीभोलेबाबाजी पृष्ठ ७५, मू० =)॥

चित्रकूटकी झाँकी (२२ चित्र) ले०—लाला सीतारामजी बी० ए० ⁄)

भजन-संग्रह—प्रथम भाग, इसमें तुलसी, सूर, कबीरके भजन हैं =)

भजन-संग्रह—द्वितीय भाग, पृष्ठ १८६, मूल्य … ⁄)

भजन-संग्रह—तृतीय भाग, पृ० १६०, स्त्री भक्तोंके पद-संग्रह मूल्य … ⁄)

भजन-संग्रह—चतुर्थ भाग, मुसलमान भक्तों और कवियोंके पद-संग्रह =)

स्त्रीधर्मप्रश्नोत्तरी-(नये संस्करणमें १० पृष्ठ बढ़े हैं) … =)

सच्चा सुख और उसकी प्राप्तिके उपाय … ‒)॥

श्रीमद्भगवद्गीताके कुछ जानने योग्य विषय … ‒)॥

गीतोक्त सांख्ययोग और निष्काम कर्मयोग … ‒)॥

मनुस्मृति द्वितीय अध्याय अर्थसहित … ‒)॥

हनुमान-बाहुक—सचित्र, हिन्दी-अर्थसहित, गोस्वामी श्रीतुलसीदासकी की हुई श्रीहनुमान्‌जीकी प्रार्थना है, मूल्य ‒)॥

आनन्दकी लहरें—सचित्र ले०—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार … ‒)॥

मनको वशमें करनेके उपाय—सचित्र … ‒)।

गीताका सूक्ष्म विषय—पाकेट-साइज … ‒)।

---

* संस्करण समाप्त हो गया। कुछ बढ़ाकर दुबारा छपेगा।

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईश्वर—महामना मालवीयजीने इस पुस्तकमें ईश्वरके स्वरूपका और धर्मका वेदशास्त्रसम्मत बहुत ही सुन्दर निरूपण किया है, मू० -)।

सप्त-महाव्रत—ले०—महात्मा गान्धीजी, इसमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अस्वाद और अभय—इन सात महाव्रतों-पर बड़ी ही सुन्दर अनुभवपूर्ण व्याख्या है। मूल्य केवल -)

समाज-सुधार -)	मूल)॥। स० -)॥	श्रीहरिसंकीर्तनधुन)।
ब्रह्मचर्य -)	रामगीता सटीक)॥।	गीता द्वितीय अध्याय सटीक)।
श्रीप्रेमभक्तिप्रकाश -)	हरेरामभजन)॥।	पातञ्जलयोगदर्शन मूल)।
भगवान् क्या हैं ? -)	सन्ध्या हिन्दीविधि-सहित)॥	धर्म क्या है ?)।
आचार्यके सदुपदेश -)	बलिवैश्वदेवविधि)॥	दिव्य सन्देश)।
एक सन्तका अनुभव -)	प्रश्नोत्तरी सटीक)॥	लोभमें पाप आधा पैसा
त्यागसे भगवत्प्राप्ति -)	सेवाके मन्त्र)॥	गजलगीता आधा पैसा
विष्णुसहस्रनाम	सीतारामभजन)॥	

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

कल्याण

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और सदाचारसम्बन्धी सचित्र धार्मिक मासिक पत्र, वार्षिक मूल्य ४≡)

विशेषांक

रामायणाङ्क—पृष्ठ ५१२, तिरंगे-इकरंगे १६७ चित्र मू० २॥≡) स० ३≡)
(इसमें कमीशन नहीं है, डाक-महसूल हमारा)

भगवन्नामाङ्क—पृष्ठ ११०, रंग-विरंगे ४१ चित्र, मूल्य ॥≡) स० १≡)

भक्ताङ्क—तीसरे वर्षकी पूरी फाइलसहित, मू० ४≡) सजिल्द ४॥≡)

गीताङ्क—चौथे वर्षकी पूरी फाइलसहित मू० ४≡) सजिल्द ५।-)

श्रीकृष्णाङ्क—पृष्ठ ५२३, रंग-विरंगे १०७ चित्र मूल्य २॥≡) स० ३≡)

श्रीकृष्णाङ्क परिशिष्टांकसहित अजिल्द ३) सजिल्द ३॥)

ईश्वराङ्क सपरिशिष्टाङ्क—पृष्ठ ६१८, लगभग १०० चित्र, अजिल्द ३) स० ३॥)

शिवांक सपरिशिष्टांक-पृष्ठ ६६६, चित्र २८७ मू० ३) स० ३॥)

व्यवस्थापक—कल्याण, गोरखपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्र

छोटे, बड़े, रंगीन और सादे धार्मिक चित्र

श्रीकृष्ण, श्रीराम, श्रीविष्णु और श्रीशिवके दिव्य दर्शन ।

जिसको देखकर हमें भगवान् याद आवें, वह वस्तु हमारे लिये संग्रहणीय है । किसी भी उपायसे हमें भगवान् सदा स्मरण होते रहें तो हमारा धन्यभाग हो । भक्तों और भगवान्के स्वरूप एवं उनकी मधुर मोहिनी लीलाओंके सुन्दर दृश्य-चित्र हमारे सामने रहें तो उन्हें देखकर थोड़ी देरके लिये हमारा मन भगवत्स्मरणमें लग जाता है और हम सांसारिक पाप-तापोंको भूल जाते हैं ।

ये सुन्दर चित्र किसी अंशमें इस उद्देश्यको पूर्ण कर सकते हैं । इनका संग्रहकर प्रेमसे जहाँ आपकी दृष्टि नित्य पड़ती हो, वहाँ घरमें, बैठकमें और मन्दिरोंमें लगाइये एवं चित्रोंके बहाने भगवान्को यादकर अपने मन-प्राणको प्रफुल्लित कीजिये । भगवान्की मोहिनी मूर्तिका ध्यान कीजिये ।

कागजका साइज १० इञ्च चौड़ा, १४ इञ्च लम्बा, सुनहरी चित्रका ≈)॥, रंगीन चित्रका मूल्य ≈), दोरंगे और सादे चित्रका मूल्य)॥।, यह छोटे ब्लाकोंसे ही बेल (बार्डर) लगाकर बड़े कागजोंपर छापे गये हैं ।

कागजोंका साइज ७॥ × १० इञ्च, सुनहरीका मूल्य ≈), रंगीनका मूल्य)॥।, सादेका)॥ मात्र ।

इनके सिवा १८ × २२, १४ × २० और ५ × ७॥ के बड़े और छोटे चित्र भी मिलते हैं ।

दूकानदार और थोक-खरीदारोंको कमीशन भी दिया जाता है । चित्रोंकी सूची अलग मुफ्त मँगवाइये ।

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ श्रीरामजी ❀

चित्रकूट माहात्म्य

और

पञ्चक्रोशी परिक्रमा वर्णन

चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर।
तुलसिदास चन्दन घसैं, तिलक देत रघुबीर॥

प्रकाशक—
रामकिसुनदास अग्रवाल, बुक्सेलर
चित्रकूट (बाँदा)

चौथा संस्करण] .सं० २००४ मूल्य -)॥ आना।
८०००

सर्वाधिकार सुरक्षित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्रीकामतानाथ ।

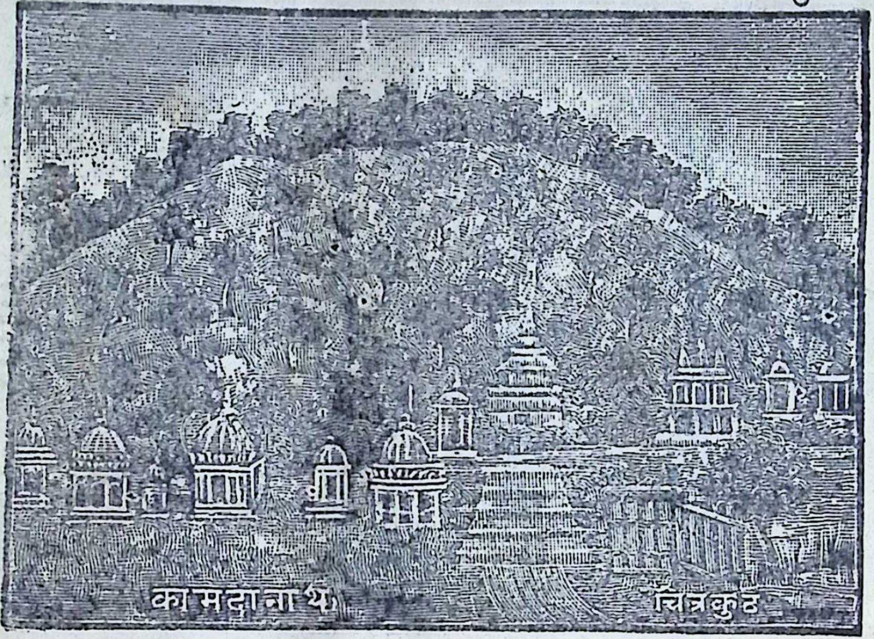

कामद भे गिरि राम प्रसादा । अवलोकत अघ हरत विषादा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तक चौभकुवाट ल्याया को एकप्रसर है १ आनामास पैतेत्य।
रअसा दिरह थियो र ल्याये वोह वसैले चलाये भने २ १ आनाटे
२। रूपमा जरीवाना हुद

❀ श्रीरामजी ❀

चित्रकूट माहात्म्य

और

पञ्चकोशी परिक्रमा वर्णन

माहात्म्य

चित्रकूट

जहाँ वन पावनो सुहावनो विहंग मृग,
देखि अति लागत अनंद खेत खूट सो।
सीता-राम-लखन निवास वास मुनिनको,
सिद्ध साधु साधक सबै विवेक बूट सो॥
झरना झरत झारि सीतल पुनीत वारि,
मन्दाकिनि मञ्जुल महेश-जटाजूट सो।
तुलसी जो रामसो सनेह साँचों चाहिये तो,
सेइये सनेहसों विचित्र चित्रकूट सो॥

(कवितावली उत्तरकाण्ड १३५)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीरामचरित्रसे सम्बन्ध रखनेवाले तीर्थोंमें चित्रकूटका स्थान बहुत ऊँचा है। चित्रकूट-माहात्म्यमें लिखा है कि 'यह ब्रह्मपुरी है; इसमें तीस धनुषके प्रमाण एक यज्ञवेदी है; जहाँ यज्ञ करनेसे अग्निवेशादि मुनि परम सिद्धिको प्राप्त हुए थे और इसमें सारे तीर्थ निवास करते हैं।'

वाल्मीकीय रामायणमें लिखा है—

श्रीरघुनाथजी श्रीसीताजीसे कहते हैं—

भावार्थ—'हे भद्रे! नाना प्रकारके पक्षियोंसे सेवित, अनेक धातुओंसे भूषित, ऊँचे शिखरोंके इस पर्वतको देखो। कोई चाँदीकी तरह सफेद है, कोई लोहू के समान लाल है, कोई पीला मँजीठके रंगका है, कोई इन्द्र-नील-मणिकी भाँति चमकता है, कोई पुष्प-रागकी तरह, कोई स्फटिकमणिकी तरह है, कोई केतकीके रंगके हैं, कोई तारे और कोई पारेकी भाँति चमकते हैं।'

(२। ९४। ४-६)

इससे सिद्ध है कि अनेक रंगके धातुओंके कारण इस पहाड़ीका नाम चित्रकूट पड़ा।

दोहा—चित्रकूटके बिहग मृग, बेलि बिटप तृन जाति।
पुन्य-पुञ्ज सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिक्रमा

परिक्रमा और देवदर्शन तीर्थ-यात्राके प्रधान अंश हैं। परिक्रमाकी महिमा इस संस्कृत श्लोक में कही गयी है—

यानि कानि च पापानि, जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिण पदे पदे॥

भावार्थ--इस जन्म और पूर्व जन्मके जितने पाप हैं प्रदक्षिणाके एक-एक पदसे नष्ट होते हैं।

रामायणमें लिखा है कि भरतजीने भी चित्रकूट-यात्रा की थी—

दोहा—देखे थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ।
कहत सुनत हरिहर सुजस, गयेउ दिवस भई साँझ॥

उसी यात्राके क्रमसे अब भी परिक्रमा की जाती है।

पहिले दिनकी परिक्रमा ६ मील—

राघव-प्रयागसे स्नान करके पुरानी लंका, अक्षयवट का दर्शन करते हुए कामतानाथकी प्रदक्षिणा करे और पुरीकी परिक्रमा करता हुआ चित्रकूट लौटे।

दूसरे दिनकी परिक्रमा १२ मील—

राघव-प्रयागमें स्नान करके कोट तीर्थ जाय (४ मील), वहाँ से देवाङ्गना, (१ मील) सीतारसोई, (४ मील) हनूमानधाराकी यात्रा करके नयागाँव होते हुए फिर चित्रकूट (३ मील) लौटे। इस पहाड़ी पर करीब तीन सौ सीढ़ी चढ़ना-उतरना पड़ता है। बड़ा ही मनोहर दृश्य है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीसरे दिनकी परिक्रमा १० मील—

राघव-प्रयाग में स्नान करके रामधाम, केशवगढ़, दासहनुमान, प्रमोदवन, जानकीकुण्ड, सिरसावन व स्फटिक शिलाका दर्शन करै। (यहाँ से चित्रकूट ४ मील है और अनुसूयाजी ६ मील है।) यहाँ से अनुसूयाजी जावै और वहीं विश्राम करै।

यहीं से श्रीमंदाकिनी गंगाजीकी उत्पत्ति हुई है। यहाँ का दर्शन अवश्य करना चाहिये। बड़ा ही सुन्दर दृश्य है।

चौथे दिनकी परिक्रमा १० मील—

अनुसूयाजी से गुप्तगोदावरी करीब ८ मील है। यहाँ जाकर पहाड़के अन्दर देवताओंके दर्शन और रामकुण्डमें स्नान करै।

यह बड़ा विचित्र और पवित्र स्थान है। यहाँ पर रोशनी लेकर पहाड़के अन्दर जाना पड़ता है। वहाँ से लौट कर कैलाश, जो कि २ मील पड़ता है, वहाँ विश्राम करै। यह स्थान चौबेपुर ग्रामसे करीब सटा हुआ है।

पाँचवें दिनकी परिक्रमा १२ मील—

कैलाश से भरतकूप (६ मील) जाय, वहाँ स्नान और दर्शन करके रामशय्या (४ मील) के दर्शन करै। फिर चित्रकूट (२ मील) वापिस आवै।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्णन।

राघव-प्रयाग।

यह स्थान चित्रकूटका बड़ा तीर्थ है। यहीं पयोष्णीमें धन्वाके आकारका नाला मिलता है जिसको वहाँ के लोग मन्दाकिनी कहते हैं। यद्यपि अनुसूयाजी से इस स्थान तक सारी पयोष्णी भी कभी कभी मन्दाकिनी कही जाती है। नाला बरसात-बीते सूख जाता है और तब पयोष्णी ही रह जाती है। फिर भी इस स्थानका नाम प्रयाग होनेसे जैसे प्रयागराज (इलाहाबाद) में एक तीसरी नदी सरस्वती नीचे-नीचे अदृश्य रूपसे गङ्गा-यमुनासे मिलती है वैसे ही यहाँ भी गुप्त नदी गायत्री (सावित्री) मान ली गयी है। कहा जाता है कि श्रीरघुनाथजीने, जब सुना कि पिताका स्वर्गवास होगया, तब यहीं तिलाञ्जलि दी थी।

मन्दाकिनी मज्जन तिहुकाला, राम दरसु मुद मंगलमाला।

इसी घाटके ऊपर मत्तगजेन्द्रेश्वर (मजगन्देश्वर) का बड़ा मन्दिर है।

राघव-प्रयागके सामनेका घाट मन्दाकिनी-घाट कहलाता है।

राम-घाट।

बीचका घाट राम-घाट कहलाता है और इसके ऊपर का मन्दिर यज्ञवेदीके नामसे प्रसिद्ध है जहाँ ब्रह्माजीने यज्ञ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया था। इसी मन्दिरके जगमोहनमें उत्तरकी ओर पर्ण-कुटीका स्थान है जहाँ श्रीरघुनाथजीने कुछ दिन निवास किया था। कुटीके बनने की कथा गोस्वामी तुलसीदासजी ने यों लिखी है—

रघुबर कहेउ लखन भल घाटू। करिय कतहुँ अब ठाहर ठाटू॥
लखन दीख पय उतर करारा। चहुँदिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा॥
पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकै न घात मार मुठभेरी॥
अस कहि लखन ठाँव दिखरावा। थल बिलोकि रघुबर सुख पावा॥
रमेउ राम मन देवन्ह जाना। चले सहित सुरपति परधाना॥
कोल किरात वेष सब आये। रचे परन तृन सदन सोहाये॥
बरनि न जाहिं मंजु दुई साला। एक ललित लघु एक बिसाला॥

लखन जानकी सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत।
सोह मदन मुनिवेष जनु, रति ऋतुराज-समेत॥

पर्णकुटी को साधारण लोग परमकुटी भी कहते हैं।

तुलसीदासजी की कुटी

गोस्वामी तुलसीदासजीके चित्रकूट-वासके दो स्थान हैं, एक रामघाटके सामने गलीमें, दूसरा कामताकी परि-क्रमामें चरणपादुकाके पास। रामघाटहीके निवासमें गोस्वामीजीको सारूप्य दर्शन हुए, जिसका प्रचलित दोहेमें वर्णन किया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्रकूटके घाट पर, भइ सन्तनकी भीर।
तुलसिदास चन्दन घसैं, तिलक देत रघुबीर॥

रामघाटके ऊपरकी कुटीमें श्रीराम, लक्ष्मण और जानकीकी मूर्तियाँ हैं और दो-तीन साधु रहते हैं। परिक्रमाकी कुटीमें गोस्वामीजीकी मिट्टीकी मूर्ति है।

जानकी-कुण्ड

पर्णकुटीसे कुछ दूर मन्दाकिनीके किनारे-किनारे चल कर जानकी-कुण्ड मिलता है। प्राकृतिक शोभाके विचारसे यह स्थान अत्यन्त रमणीय है। नदीके दोनों तटोंपर सुहावना वन है और बीच-बीचमें सफेद पत्थर निकले हैं जिन पर युगल सरकारके चरण-चिह्न हैं। इसमें कोई बात बनावट की नहीं है और जिन पत्थरों पर चिह्न बने हैं वे आग्नेय हैं। रामभक्त यह मानते हैं कि जब युगल सरकार इन पर चलते थे तब पत्थर मोमकी भाँति नरम हो जाते थे।

फटिक-शिला

जब युगल सरकार चित्रकूटसे अत्रिमुनिके आश्रमको जाते थे तो रास्तेमें नदी-तटपर एक भारी सफेद शिलापर बैठे थे और यहीं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निज कर भूषण राम बनाये॥
सीतहि पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर सुन्दर॥

यहीं जयन्तने कौवे का रूप धरकर श्रीसीताजी के चोंच मारी थी जिसका वर्णन रामायण अरण्यकाण्डमें है।

अब दो शिलाएँ हैं सो कदाचित् पहले मिली हुई थीं। यह दोनों मन्दाकिनीके बीचमें स्थित हैं। जो अगली शिला है उसपर चरणके चिह्न हैं। दूसरेमें जो दृश्य है वह शिलाके सामने का पड़ता है। यह बड़ा मनोहर दृश्य है।

कामता

यों तो परिक्रमा में जितने तीर्थ आ जाते हैं सब चित्रकूट के अन्तर्गत हैं परन्तु मुख्य तीर्थ यही पहाड़ी है। इसे चित्रकूट न कहकर कामता क्यों कहते हैं इसका कारण हमारी समझ में नहीं आता। गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है—

कामदगिरि भे रामप्रसादा। अवलोकत अपहरत विषादा॥

यही कारण था तो कामदगिरि कहने में क्या आपत्ति थी? यह टेकरा युगल सरकारका सिंहासन माना जाता है और उनके निवास-स्थान होनेके कारण संसारभरके तीर्थ इसीके चारों ओर आकर बस गये। यों तो रामायणमें लिखा है कि श्रीरघुनाथजी कुछ दिन यहाँ रहकर दक्षिण चले गये थे, परन्तु भक्तोंका विश्वास यह है कि अब भी यहीं विराजमान हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्रकूट सब दिन बसत, प्रभु सिय-लखन समेत।

यह पहाड़ी विन्ध्याचलकी शाखामें शिखर-श्रेणीकी अन्तिम चोटी है और सुडौल होनेके कारण महाकवि कालिदासने मेघदूत काव्यमें इसे भूकुच-समान बखाना है। यह सदा हरी-भरी रहती है और इसके तटपर चारों ओर मन्दिरोंकी पंक्ति है। वाल्मीकिने जब युगल सरकारके रहने योग्य इसे बताया, तो कहा था—

सैल सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहँग बिहारू॥
नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रिप्रिया निज तप बल आनी॥
सुरसरि धार नाउँ मन्दाकिनी। जो सब पातक-पोतक-डाकिनी॥
अत्रि आदिमुनिवर बहु बसहीं। करहिं जोग-जप-तप तनु कसहीं॥

आजकल भी पहाड़ी वैसी ही है जैसी महर्षि वाल्मीकिने बखानी थी। भेद इतनाही होगया है कि अब यहाँ करि (जंगली हाथी) और केहरि (सिंह) नहीं रहते। इसकी परिक्रमा तीन मील लम्बी है।

मुखारविन्द

चित्रकूट से कामता की ओर चढ़ती परिक्रमा से २ फर्लाङ्ग पर श्रीकामदनाथ मुखारविन्द के दर्शन होते हैं। यह स्थान श्रीरघुनाथजीकी मूर्तिके समान पूजनीय माना जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चरण-चिह्न

चरण-चिन्ह कई स्थान पर हैं, परन्तु मुख्य तीन हैं (१) फटिक-शिला, (२) जानकी-कुण्ड और (३) चरण-पादुका।

राम-शय्या

इस स्थानकी विचित्रता किसीकी समझमें नहीं आती। इसमें बनावट की कोई बात नहीं है। एक बड़ी शिलापर दो चिन्ह ऐसे बने हुए हैं जैसे कोमल रूईके गद्दीपर दो प्राणियोंके सोनेसे बन जाते हैं। कहा जाता है कि एक चिन्ह श्रीरघुनाथजी के लेटने से बना था और दूसरा श्री सीताजीके। दोनोंके बीचमें धनुषका चिन्ह है। वानप्रस्थाश्रममें रहनेसे युगल सरकार धनुष बीचमें रखकर सोते थे।

भरत-कूप

यह एक बहुत बड़ा कुआँ इसी नामके रेलवे स्टेशनसे एक मील दक्षिण और कामतासे ६ मील पश्चिमोत्तर है। रामायणके पढ़नेवाले जानते ही हैं कि भरतजी श्रीरघुनाथजीके राज्याभिषेक के लिये तीर्थोंका जल साथ लाये थे। जब श्रीरघुनाथजीने अभिषिक्त होना स्वीकार न किया-

अत्रि कहेउ तब भरत सन, सैल समीप सुकूप।
राखिय तीरथ-तोय तहँ, पावन अमिय अनूप॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भरत अत्रि अनुसासन पाई। जल भाजन सब दिये चलाई॥
सानुज आप अत्रि मुनि साधू। सहित गये जहँ कूप अगाधू॥
पावन पाथ पुन्य थल राखा। प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा॥
तात अनादि सिद्ध थल एहू। लोपेउ काल बिदित नहि केहू॥
तब सेवकन्ह सरस थल देखा। कीन्ह सुजलहित कूप बिसेखा॥
बिधि बस भये बिस्व उपकारू। सुगम अगम अति धरम बिचारू॥
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा। अति पावन तीरथ जल जोगा॥
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी। होइहहिं बिमल करम मन बानी॥

भरतजी का मन्दिर

यह छोटा-सा मन्दिर भरतकूप के सामनेही है।

हनूमान्-धारा

यह धारा (झरना) हनूमान-धारा टेकरेके आधेसे कुछ ऊपर से निकलती है। धारा पतली और श्रीहनूमानूजीकी मूर्तिके आगे एक कुण्डमें गिरती है। वहाँसे जो धारा बहती है उसे पातालगङ्गा कहते हैं। यह स्थान बड़ा सुहावना है और कुछ धर्मात्मा लोगोंने यात्रियोंके विश्रामके लिये नीचे एक चौड़ी दालान बनवा दी है। यहाँ से सीतापुर तक देशका बड़ा रमणीक दृश्य दिखायी देता है।

सीताकी रसोई

यह स्थान हनूमान्-धाराके ऊपर उसी पर्वतमें है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कथा प्रसिद्ध है कि यहीं चित्रकूट जाते समय ठहरकर श्रीसीताजीने भोजन बनाया था, अब इस जगह एक छोटी-सी दालान बनी हुई है।

अनसूयाजी

अनसूयाजी और उनके पति अत्रिमुनिका आश्रम पहाड़ी के ऊपर कामतासे ८ मील दक्षिण है। यहाँ एक मन्दिरमें अत्रिमुनि, अनसूयाजी और उनके पुत्र दत्तात्रेय, दुर्वासा तथा चन्द्रकी मूर्तियाँ हैं।

यह स्थान बड़ाही रमणीक है, वहाँ जाकर अवश्य दर्शन करिये।

अनसूयाजीके मन्दिर से आगे करीब एक फर्लांग पर कुछ साधु लोग रहते हैं। रात रहने वाले यहाँ विश्राम कर सकते हैं।

इति श्री चित्रकूट माहात्म्य और पंचकोशी परिक्रमा वर्णन समाप्त।

यात्रियोंको सूचना—

यहाँ पर श्रीरामजीने श्राद्ध किया था अतः यात्रियोंको यहाँ श्राद्ध करना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राग कान्हारा

अब चित चेतु चित्रकूटहि चलु ।
कोपित कलि, लोपित मंगल मगु,
बिलसत बढ़त मोह-माया-मलु ॥
भूमि बिलोकु राम-पद अंकित,
बन बिलोकु रघुबर-बिहारथलु ।
सैल-सृङ्ग भव भंग-हेतु लखु,
दलन कपट पाखंड-दंभ-दलु ॥ १ ॥

जहँ जनमे जग-जनक जगतपति,
बिधि-हरि-हर परिहरि प्रपंच छलु ।
स ! प्रवेस करत जेहि आश्रम,
बिगत-बिषाद भये पारथनलु ॥ २ ॥

न करु बिलंब बिचारु चारुमति,
बरष पाछिले सम अगिले चलु ।
मंत्र सो जाइ जपहि, जो जपि भे,
अजर अमर हर अचई हलाहलु ॥ ३ ॥

रामनाम-जप जाग करत नित,
मज्जत पय पावन पीवत पलु ।
करिहैं राम भावतौ मनकौ,
सुख साधन, अनयास महाफलु ॥ ४ ॥

कामदमनि कामता, कलपतरु,
सो जुग-जुग जागत जगतीतलु ।
तुलसी तोहि विशेष बूझिये,
एक प्रतीति-प्रीत एकै बलु ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूचना

हमारे यहाँ गीता प्रेस, गोरखपुर की प्रायः सभी पुस्तकें और चित्र तथा अन्य-अन्य स्थानों की भी पुस्तकें मिलती हैं। प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि एक बार अवश्य देखैं और इससे लाभ उठावैं।

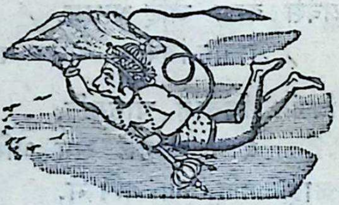

पुस्तक मिलने का पता—

रामकिसुनदास अग्रवाल, बुकसेलर

गंगातीर बाजार, चित्रकूट (बाँदा)

मुद्रक—बी० के० शास्त्री,
ज्योतिष प्रकाश प्रेस, विश्वेश्वरगंज, बनारस।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

सचित्र

काशी यात्रा प्रकाश

[काशीके संक्षिप्त राजकीय तथा धार्मिक इतिहासके सहित]

लेखक—

पं० भाऊशास्त्री वझे

K. $\frac{3}{8}\frac{1}{6}$ ब्रह्माघाट, काशी।

१९४५]

[मूल्य ४ आना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूचना

हमारे यहाँ गीता प्रेस, गोरखपुर की प्रायः सभी पुस्तकें और चित्र तथा अन्य-अन्य स्थानों की भी पुस्तकें मिलती हैं। प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि एक बार अवश्य देखें और इससे लाभ उठावें।

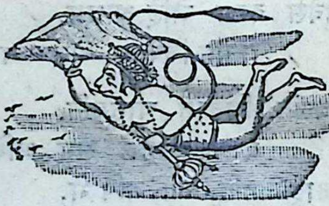

पुस्तक मिलने का पता—

रामकिसुनदास अग्रवाल, बुकसेलर

गंगातीर बाजार, चित्रकूट (बाँदा)

मुद्रक—बी० के० शास्त्री,
ज्योतिष प्रकाश प्रेस, विश्वेश्वरगंज, बनारस।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

सचित्र

काशी यात्रा प्रकाश

[काशीके संक्षिप्त राजकीय तथा धार्मिक इतिहासके सहित]

लेखक—

पं० भाऊशास्त्री वझे

K. ३१/८६ ब्रह्माघाट, काशी।

१९४५]

[मूल्य ४ आना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमपूज्य स्वर्गीय

श्री वासुदेव शास्त्री वझे

काशी

[इस पुस्तकके सब अधिकार लेखकके अधीन]

मुद्रक—
डब्लू. एम. गोडसे,
आर्यभूषण प्रेस, बनारस।

प्रकाशक—
आर्यभूषण प्रेस,
ब्रह्मघाट, बनारस।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

काशी यात्रा प्रकाश

काशीका संक्षिप्त राजकीय इतिहास

मुक्ति-जन्ममहि जान, ज्ञानखानि अघ-हानिकर ।
जँह बस संभु भवान, सो कासी सेइय कस न ॥

भारतवर्षकी शिरोभूता काशी अनादिकालसे ही पुण्यभूमिरूपसे प्रसिद्ध है। श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास आदि सब ग्रन्थोंमें इसका माहात्म्य वर्णन देखा जाता है।

नव्य शिक्षितोंके मतसे भी सबसे प्राचीन वैदिक वाङ्मय ऋग्वेद माना जाता है। उसमें काशीका वर्णन स्पष्टरूपसे नहीं पाया जाता, तो भी उसमें ऐल पुरूरवा राजाका नाम आया है। और पुराणोंमें ऐल पुरूरवा राजाकी राजधानी प्रतिष्ठान (प्रयागके पास झूंसी) कही गयी है। वेद और पुराण इनका समन्वय करनेसे प्रयागसे सन्निहित काशीदेश पर उसीका अधिकार था यह कल्पना अनुचित नहीं मालूम होती। ब्राह्मण और उपनिषदोंमें तो स्पष्ट ही काशी और काशीराजाओंके नाम पाये जाते हैं। ऐसी एक भी स्मृति या पुराण नहीं है जिसमें काशीका नाम या माहात्म्य देखनेमें न आता हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शंखाकार काशीकी सीमा इस प्रकार :—

मुखं शंखस्य गंगायां पृष्ठं देहलिसन्निधौ ।
वामपार्श्वस्थितं तोयं रामाख्यं वरुणाभिधम् ।

शंखके आगेका भाग गंगाजीमें और उसका पृष्ठ भाग देहली विनायकके तरफ तथा बाँए बगलमें रामेश्वरकी वरुणा नदी ।

वाराणसीकी सीमा

दक्षिणोत्तरयोर्नद्योः वरणासिश्च पूर्वतः ।
जान्हवी, पश्चिमे चापि पाशपाणिर्विनायकः ॥

वाराणसीकी उत्तर सीमामें वरुणा, दक्षिणमें अस्सी, पूर्वमें गंगा और पश्चिममें पाशपाणि विनायक । वरुणा और अस्सी इन दोनों नदियोंके बीचमें यह होनेके कारण इसे वाराणसी कहते हैं । कलि-युगमें वाराणसीकोही काशी कहते हैं ।

इस वाराणसीमें ओंकार खंड, विश्वेश्वर खंड और केदार खंड ऐसे तीन खंड हैं । विश्वेश्वर खंडकोही **'अंतर्गृही'** कहते हैं ।

विश्वेश्वर खंडकी सीमा

पूर्वमें मणिकर्णिकेश्वर, पश्चिममें गोकर्णेश्वर, उत्तरमें भारभूतेश्वर, दक्षिणमें ब्रह्मेश्वर । विश्वेश्वरखंडकोही **अविमुक्तक्षेत्र** कहते हैं । इसी खंडके दक्षिण दिशामें **महास्मशान** है । इस विश्वेश्वर खंडका अविमुक्तक्षेत्र नाम होने का कारण इस प्रकार है—

एक वार शिवजीको राजा दिवोदासके कारण सब देवताओंके साथ काशी छोड देनी पडी थी । पर उस समय भी उन्होंने चुपचाप कुक्कुटांड प्रमाण लिंगरूपमें यहाँ प्रकट होकर वस्तुतः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काशी नहीं छोडी (अ-विमुक्त) इसलिये इसे अविमुक्त कहने लगे। इस लिंगका प्रादुर्भाव माघ कृष्ण (फाल्गुन कृष्ण) चतुर्दशीके दिन हुआ। इसीको महाशिवरात्रि कहते हैं।

माघकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः॥ (ईशानसंहिता)

तभीसे देव, ऋषि, मनुष्यादिकोंने अपने अपने नामोंसे शिवलिंगकी स्थापना शुरू की। इसीलिये सब देवताओंके नामकी लिंगस्थापना यहाँ पाई जाती है। इनसे अतिरिक्त चार धाम, सातों पुरियां, बारह ज्योतिर्लिंग, छप्पन विनायक, अष्ट भैरव, द्वादशादित्य नव दुर्गा और अनेक योगिनियोंके पीठ काशीमें हैं। ऐसी यह काशी सर्वतीर्थ और क्षेत्रमयी है। इसकी यात्रा करनेसे भारत-वर्षकी संपूर्ण तीर्थयात्रा करनेका फल प्राप्त होता है।

इन सब यात्राओंका वर्णन काशीखंडमें है। ये सोलह यात्राएँ हमारे स्व० पू० पिताजी श्री वासुदेव शास्त्री वझेने स्वयं अनेक बार करते हुए अनेक लोगोंसे कराई हैं। उन्होंने ही बडे परिश्रमसे सब स्थानोंका ठीक ठीक निर्णयकर प्रचलित नामोंके सहित इन्हें लिख रक्खा है। उसीको हम आगे प्रकाशित कर रहे हैं।

यद्यपि इस समय काशीखंडोक्त प्राचीन देवतामंदिरादि, अनेक विदेशियोंके आक्रमणके कारण लुप्त और रूपान्तरित हो गये हैं। तो भी उन उन स्थानोंकाही पूजन और दर्शन करनेसे यात्राका पूर्ण फल प्राप्त होता है। यह बात श्री नारायण भट्टभट्टजीने **त्रिस्थलीसेतु** में लिखी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संहार देवता श्री रुद्रका यहाँ वास होनेके कारण इसका नाम **रुद्रावास** भी है। इस काशीमें देह का दाह संस्कार होनेसे उस जीवको पुनः जन्म नहीं आता इसलिये इसको '**महास्मशान**' कहते हैं। 'महास्मशानदग्धानां पुनर्जन्म न विद्यते।' अव्यक्त ब्रह्म ज्योति यहाँ पर लिंगरूपसे प्रकाशित होनेके कारण इसका नाम **काशी** है। सदाचार संपन्न मुमुक्षुओंको देहपातके समय स्वयं शंकरही गुरु होकर तत्वज्ञानका उपदेश देते हैं इसीसे इसका नाम **मुक्तिपुरी** है। कलियुगमें तो इसके समान दूसरा मोक्षका सुलभ साधन ही नहीं है। कहा है—

कलौ विश्वेश्वरो देवः कलौ वाराणसी पुरी।
कलौ भागीरथी गंगा दानं कलियुगे महत्॥
अष्टांगादिभिरन्यैश्च तपोयज्ञादिभिः सदा।
साध्यते पाक्षिकी सिद्धिरविमुक्ते त्वनिर्गला॥
सदा कृतयुगं चात्र महापर्व सदाऽत्र वै।
न ग्रहास्तोदयकृतो दोषो विश्वेश्वरालये॥
मरणं मंगलं यत्र विभूतिर्यत्र भूषणम्।
कौपीनं यत्र कौशेयं काशी केनोपमीयते॥

ऐसा इसका लोकोत्तर माहात्म्य है। काशीमें आनेके लिये मुहूर्त देखनेकी आवश्यकता नहीं। श्रद्धा उत्पन्न होते ही यहां पर कर्म करनेके लिये देश, काल, मुहूर्त इत्यादि देखनेका भी कुछ कारण नहीं। ऐसो यह लोकोत्तर काशी श्रीविश्वनाथकी राजधानी है। अतएव धर्माचार्योंके आज्ञापत्रोंसे यहांके पण्डितोंका धार्मिक व्यवस्था पत्र अधिक प्रमाण माना जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह काशीक्षेत्र काशी, वाराणसी और अविमुक्त इन तीन रूपोंमें विभक्त है। तीनोंकी सीमा पृथक् पृथक् पद्मपुराणमें इस प्रकारसे लिखी है—

काशीकी सीमा

मध्यमेश्वरमारभ्य यावद्देहलिविघ्नपम्।
सूत्रं स्थाप्य चतुर्दिक्षु भ्रामयेन्मंडलाकृति ॥
तत्र या जायते रेखा तन्मध्ये क्षेत्रमुत्तमम्।
काशीति च विदुर्वेदास्तत्र मुक्तिः प्रतिष्ठिता ॥

काशीमें मध्यमेश्वरका स्थान है। इसको 'मध्यमेश्वरका महल्ला' कहते हैं। वही काशीक्षेत्रका मध्यबिंदु है। वहाँसे देहली विनायक तक एक सूत्र चारों तरफ घुमानेसे जो वर्तुलाकार रेखा होगी वह काशीकी सीमा है। इस वर्तुलाकार सीमा के भीतर गंगाजीके पूर्व तीरका भी भाग काशीमें आता है। तो भी वह वाराणसी नहीं है। इसीलिये भगवान श्रीशंकरजीने वाराणसीसे निष्कासित व्यासजी वहांपर निवास करते हैं। उस भागको लोग **'व्यास काशी'** कहते हैं।

वस्तुतः त्रेता युगमें ही काशीका स्वरूप वर्तुलाकार था। और व्यासजीको वाराणसीसे निकाल देनेकी कथा भी त्रेता युगकी ही है। कलि युगमें तो काशीकी सीमा शंखाकार है ऐसा स्कंदपुराणके नागर खंडमें लिखा है:—

कृते त्रिशूलवज्ज्ञेयं त्रेतायां चक्रवत्तथा।
द्वापरे तु रथाकारं शंखाकारं कलौ युगे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुराणोंसे ज्ञात होता है कि, चंद्रवंशीय राजा ऐल पुरूरवाके वंशज 'काश' राजाने यहाँ पर स्वतंत्र राज्य शुरू किया। तबसे यह काशेय वंश कहलाने लगा। इनकी अठ्ठाईस पीढियोंके बाद कोसलोंका अधिकार इस पर हुवा। फिर यह मागधोंके स्वाधीन हुई। बाद क्रमशः नंद, मौर्य, शुंग, काण्व, कनिष्क, भारशिव और गुप्त इनका स्वामित्व इस पर ईसाकी छठी शताब्दीके अंत तक रहा। सातवीं शताब्दीमें यह हर्षवर्धनके स्वाधीन हुई। आठवीं शताब्दीके अंतमें गौड राजा धर्मपाल इसके अधिपति हुए। ९१६ ईसवीमें राष्ट्रकूट राजा इंद्रायुधका इस पर अधिकार हुवा। १०१५ ई० से १०४१ ई० तक गांगेयदेव और उसके पुत्र राजा कर्णदेवने राज्य किया। बीचमें १०३३ ई० में अहमद नियाल्तिगीनने काशीको खूब लूटा। ग्यारहवीं शतीके अंतमें गढवालवंशी चंद्रदेवकी काशी राजधानी हुई। ११९४ ई० में कुतुबुद्दीनने काशी पर आक्रमण करके विश्वनाथका मंदिर तथा अन्यान्य १००० मंदिर तोड़े और लूटपाट की। १५वीं शतीमें काशी जौनपुरके शर्की सुलतानोंके आधीन हुई। १४९४ ई० में सिकंदर लोदीने हजारों मंदिर नष्ट किये। फिर यह अकबरके स्वाधीन हुई। १५८५ ई० में श्रीनारायण भट्टभट्टने विश्वेश्वरका मंदिर पुनः बनवाकर विश्वनाथकी स्थापना की। उसको १६६९ ई० में औरंगजेबने तोडा। १७४८ ई० में राजा बलवंत सिंह काशीके राजा हुए। १७७७ ई० में इंदौरकी रानी अहिल्याबाईने पुनः नया मंदिर बनवाया जो आजकल विद्यमान है। इसके ऊपरका शिखर महाराजा रणजीतसिंहने १८३९ ई० में सोनेसे मढवाया। १७९४ ई० में काशी अंग्रेजोंके स्वाधीन हुई। यह संक्षेपमें काशीका राजकीय इतिहास है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईसा पूर्व छठी शताब्दीसे आजतक काशी पर विदेशियोंके अनेक कठोर और मृदु आक्रमण होकर मठ-मंदिर नष्ट भ्रष्ट किये गये। इसका राजकीय स्वरूप नष्ट किया गया। तो भी धार्मिक स्वरूप आजतक अक्षुण्ण है। प्राचीन ऋषि मुनि और राजाओं द्वारा स्थापित हजारोंसे अधिक भव्य, विशाल और समृद्ध शिव विष्णु आदिके मंदिर सैकडों बार मटियामेट किये गये। जलाये गये। तथा रूपांतरित किये गये। तो भी फिर उतने ही मठ-मंदिर-घाट बनाये गये, बन रहे हैं और भविष्यमें बनेंगे भी।

काशीका धार्मिक इतिहास

काशीके धार्मिक स्वरूपके विचारमें तो यह केवल पुण्य क्षेत्रही नहीं किंतु भगवान श्री शंकरजीका यह प्रत्यक्ष स्थावर स्वरूप ही है। पुण्य सलिला भागीरथी उत्तरदिशासे निकलकर पूर्व समुद्रमें जाते हुए काशीमें पुनः उत्तराभिमुख होकर बहती है। जिससे काशी-स्वरूप महादेवजीका 'गंगाधर' नाम यहाँ पर भी यथार्थ होता है।

काशी यह ब्रह्माजीकी सृष्टि नहीं है किंतु इसकी उत्पत्ति काशीखंडके अनुसार इस तरह है—

न यदा भूमिवलयं न यदाऽपां समुद्भवः।
तदा विहर्त्तुमीशेन क्षेत्रमेतद्विनिर्मितम्॥

जिस समय पृथ्वी और जलकी उत्पत्तिही नहीं हुई थी उस समय विहार करनेकी इच्छासे परमेश्वरने इसको निर्माण किया और उसे अपने त्रिशूल परही धारण किया। भगवान महेश्वर यहाँपर आनंदसे निवास करते हैं इस लिये इसको **आनंदवन** कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

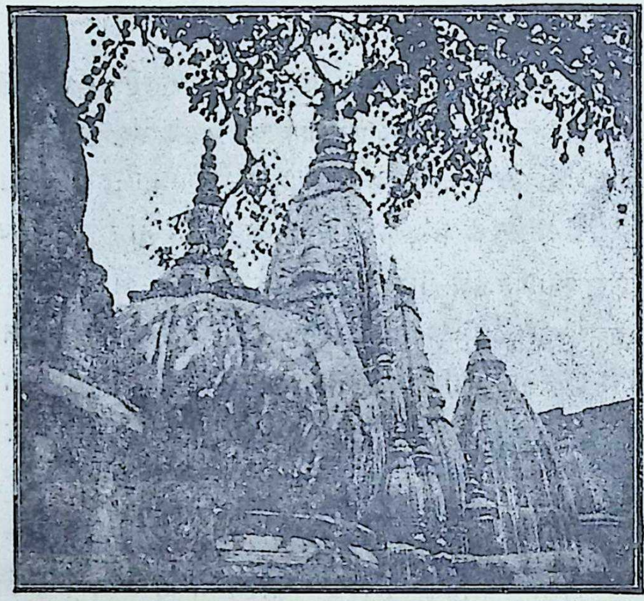

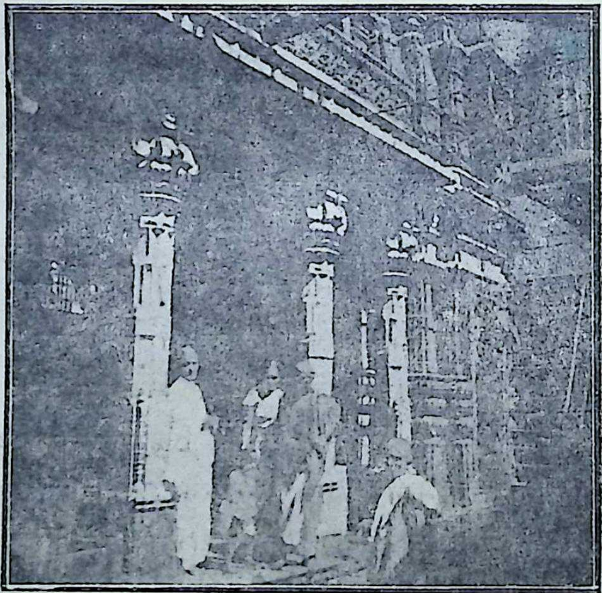

विश्वेश्वर मंदिर १७७७ ई० (रानी अहिल्याबाई इंदोर द्वारा स्थापित)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काशीमें चार धामोंके स्थान

१ जगन्नाथ — अस्सीघाट पर जगन्नाथ मंदिर।
२ रामेश्वर — पंचक्रोशीमें रामेश्वर मंदिर।
३ द्वारका — शंखोद्धारातीर्थ पर।
४ केदार — केदारघाट पर गौरीकुंड।

काशीमें सप्त पुरियोंका स्थान

१ मथुरा — शैलेश्वरके पास (वसंत ऋतुमें)।
२ अयोध्या — पंचक्रोशीमें रामेश्वर (ग्रीष्म ऋतुमें)।
३ द्वारका — शंखोद्धारातीर्थ (वर्षा ऋतुमें)।
४ अवंतिका (उज्जयिनी) — वृद्धकालेश्वर (शरद् ऋतुमें)।
५ कांची — बालाजी मंदिर (हेमंत ऋतुमें)।
६ माया (हरिद्वार) — अस्सीघाट पर संगमेश्वर (शिशिर ऋतुमें)।
७ काशी — ललितादेवी, ललिताघाट पर (वसंत ऋतुमें)।

१ नित्ययात्रा (काशीखंड अ० १००)

१ द्रौपदादित्याय नमः — विश्वनाथजीके पास, हनुमानजीके मंदिरमें अक्षय वटके नीचे।
२ द्रौपद्यै० ,, — वहींपर।
३ विष्णवे० ,, — विश्वनाथके मंदिरमें दाहिने तरफ।
४ दंडपाणये० ,, — ज्ञानवापीके पश्चिम भागके बाजारमें।
५ महेश्वराय० ,, — ज्ञानवापीके पास पीपलके नीचे।
६ ढुंढिराजाय० ,, — प्रसिद्ध हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७ ज्ञानवाप्यै० ,. — प्रसिद्ध है।

८ नंदिकेश्वराय०,, — ज्ञानवापीके पूर्वदिशामें ।

९ तारकेश्वराय०., — नंदिकेश्वरके पीछे अरवेमें ।

१० महाकालेश्वराय०,, — ज्ञानवापीके आग्नेय कोणमें पीपलके नीचे ।

११ (पुनः) दंडपाणये०,.– (ऊपर लिखा है)।

२ अनुक्रम यात्रा (काशीखंड)

१ विश्वेश — प्रसिद्ध ।

२ माधव — विंदुमाधव।

३ ढुंढि — प्रसिद्ध।

४ दंडपाणि — प्रसिद्ध।

५ भैरव — कालभैरव ।

६ काशीदेवी — काशीपुरामें चतुःसागर कूपके पास ।

७ गुहा — जागेश्वरके पास ।

८ गंगा — इसरगंगीका तालाव ।

९ भवानी — अन्नपूर्णा ।

१० मणिकर्णिका — प्रसिद्ध।

३ षडंग यात्रा (का० खं० अ० ४१)

१ विश्वेश्वराय नमः — प्रसिद्ध।

२ विशालाक्षी — मीरघाट पर।

३ मंदाकिनी — कंपनीबागमें।

४ कालभैरव — प्रसिद्ध।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ ढुंढिराज — प्रसिद्ध।
६ दंडपाणि — प्रसिद्ध।

४ त्रिकंटक यात्रा (लिंगपुराणानुसार)

१ अविमुक्तेश्वराय नमः — ज्ञानवापीके पास मस्जिदके कोनेपर।
२ स्वर्लीनेश्वर — राजघाटपर। (नया घाट)
३ मध्यमेश्वर — मंदाकिनी पर (कंपनीबागके पास)।

५ अष्टौ वसू यात्रा (का० खं०)

१ दक्षेश्वराय नमः — वृद्धकालेश्वरमें।
२ पार्वतीश्वर — त्रिलोचनमंदिरमें आदि-महादेवके पास।
३ पशुपतीश्वर — पशुपति महल्लेमें प्रसिद्ध।
४ गंगेश्वर — ज्ञानवापीके मस्जिदके पास पीपलके नीचे।
५ नर्मदेश्वर — त्रिलोचनेश्वर मंदिरके बाहर पीपलके नीचे।
६ गभस्तीश्वर — मंगला गौरी मंदिरमें प्रसिद्ध।
७ सतीश्वर — वृद्धकालेश्वरके रास्तेमे रत्नेश्वरके-पासके कुंएके पास।
८ तारकेश्वर — ज्ञानवापीके पास।

६ नव गौरी यात्रा (का० खं० अ० १००)

काशीखंडमें हर एक गौरीके पास तीर्थ लिखे हुए हैं। वहाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नान करके गौरीका दर्शन करना चाहिये । अब ये सब तीर्थ कहीं कुएंके रूपमें, कहीं गंगाजीमें, कहीं अदृश्य रूपमें हैं ।

१ गोप्रेक्षतीर्थ–मुखनिर्मालिकागौर्यै नमः —
गौ घाट पर हनुमानजीके मंदिरमें ।

२ ज्येष्ठा वापी–ज्येष्ठागौरी – करनघंटा महल्लेमें
ज्येष्ठेश्वरके पास ।

३ ज्ञानवापी–सौभाग्यगौरी – विश्वनाथ मंदिरमें ।

४ ज्ञानवापी–शृंगारगौरी — विश्वनाथ मंदिरमें ।

५ विशालतीर्थ (गंगामें)–विशालाक्षी गौरी – मीरघाट पर ।

६ ललितातीर्थ–ललितागौरी – ललिता घाट पर ।

७ अन्नपूर्णाकूप–अन्नपूर्णागौरी – प्रसिद्ध ।

८ बिंदुतीर्थ (गंगामें)–मंगलागौरी — प्रसिद्ध ।

९ लक्ष्मीकुंड–महालक्ष्मीगौरी – प्रसिद्ध ।

यह नव गौरी यात्रा हर एक महिनेके शुक्ल पक्षकी तृतीयाको करनी चाहिये ।

७ नव ग्रह यात्रा

१ गभस्तीश्वराय नमः – प्रसिद्ध ।

२ चंद्रेश्वर — सिद्धेश्वरीके मंदिरमें ।

३ मंगलेश्वर }
४ बुधेश्वर } — आत्मावीरेश्वरके मंदिरमें ।

५ बृहस्पतीश्वर — आत्मावीरेश्वर मंदिरके सामने ।

६ शुक्रेश्वर — विश्वनाथके दाहिने तरफ ।
कालिका गलीमें ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७ शनीश्वर — विश्वनाथ मंदिरमें प्रदक्षिणा मार्गमें।

८ राहू — मणिकर्णिकेश्वरके बाहर उत्तरमें ।

९ केतू — कंबलेश्वर अश्वतरेश्वर ये दोनों ही लिंग एक ही जगह हैं। वें ही राहू-केतू हैं।

८ एकादश महारुद्र यात्रा (का० खं० अ० १००)

१ आग्नीध्रेश्वराय नमः — जागेश्वर नामसे प्रसिद्ध हैं। वहां-परके इसरगंगी तीर्थका ही नाम आग्नीध्र कुंड है।

२ उर्वशीश्वर — औसानगंजमें (बाबूके बजारमें) सीढ़ी चढ़कर ऊपर बगोचेमें पीपलके नीचे।

३ नकुलीश्वर — विश्वनाथके पास हनुमानजीके मंदिरमें अक्षय वटके नीचे।

४ आषाढीश्वर — गुदड़ीके पास काशीपुरामें बितियावालेके मंदिरमें।

५ भारभूतेश्वर — मच्छरहट्टा-राजादरवाजा ।

६ लांगलीश्वर — कचौड़ीगली खोवाबाजार।

७ त्रिपुरांतकेश्वर — सिगराके टीलापर ।

८ मनः प्रकामेश्वर — साक्षीविनायकके आगे पूरबके तरफ धनेश्वरके मंदिरमें ।

९ प्रीतिकेश्वर — साक्षीविनायकके बाहर उसी रास्ते-पर वायव्य कोणमें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१० मदालसेश्वर — कालिका गलीके पूरबके तरफ सड़कपर।

११ तिलपर्णेश्वर — बड़ी दुर्गाजीके मंदिरके आगे दरवाजेके पास ।

यह एकादश महारुद्र यात्रा करनेसे रुद्रत्वकी प्राप्ति होती है।

९ द्वादशादित्य यात्रा (का० खं० अ० ४६)

१ लोलार्काय नमः — भदैनीमें तुलसीदासजीके घाटके ऊपर।

२ उत्तरार्क — अलईपुरामें बकरियाकुंड जो कहा जाता है वही तीर्थ है। वहींपर उत्तरार्क का स्थान था। इसलिये अब उसी स्थान की पूजा करनी चाहिये.

३ सांबादित्य — सूर्यकुंडके पास पश्चिमके तरफ।

४ द्रौपदादित्य — विश्वनाथ के पास हनुमानजी-के मंदिरमें।

५ मयूखादित्य — मंगलागौरी मंदिरमें (बालाघाट)।

६ खखोल्कादित्य — त्रिलोचनेश्वरके उत्तरमें कामेश्वर-के मंदिरमें (मच्छोदरी)।

७ अरुणादित्य — त्रिलोचनेश्वरके मंदिरमें।

८ वृद्धादित्य — मीरघाटपर।

९ केशवादित्य — वरुणासंगमपर आदिकेशव मंदिरमें।

१० विमलादित्य — हरिकेशवन-जंगमवाड़ीमें खारी कुआंके पास।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११ गंगादित्य — ललिताघाटके ऊपर वसिष्ठेश्वरके पास।

१२ यमादित्य — संकटाघाट पर वसिष्ठवामदेवके पास पीपलके नीचे।

यह यात्रा रविवार षष्ठी तथा सप्तमी इन दिनोंमें करनेसे सर्व रोग और विघ्नोंकी निवृत्ति होती है।

१० भैरव यात्रा (का० खं० अ० ७२)

१ रुरु भैरवाय नमः — हनुमानघाटपर आनंदभैरव नामसे प्रसिद्ध हैं।

२ चंड भैरव — बड़ी दुर्गाके मंदिरमें।

३ असितांग भैरव — वृद्धकालमें कुण्डके पास।

४ कपालि भैरव — लाट भैरव के नामसे प्रसिद्ध।

५ क्रोधन भैरव — कमच्छामें कामाक्षी मंदिरके पास बटुक भैरव नामसे प्रसिद्ध।

६ उन्मत्त भैरव — पंचकोशीके रास्तेमें भीमचंडीके पीछे डेढ़ कोसपर तालाव पर हैं। उसका रास्ता मड़वाडीसे दो कोस जाकर बाएं तरफसे गया है।

७ संहार भैरव — गौघाटपर पाटनदरवाजा। कोई लोग काल भैरव को ही संहार भैरव कहते हैं।

८ भीषण भैरव — करनघंटापर ज्येष्ठेश्वरके उत्तरमें। यही भूतभैरव नामसे प्रसिद्ध है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्दशी, अष्टमी, रविवार, मंगलवार, इन दिनोंमें इनकी यात्रा करनेसे संपूर्ण भीती और काशीमें किये हुए पापोंकी शांति होती है।

११ ज्योतिर्लिंग यात्रा (शिवरहस्य)

१ केदारेश्वराय नमः — केदारघाटपर।

२ ओंकारेश्वर — मच्छोदरीके पास छित्तनपुरामें।

३ वैद्यनाथेश्वर — कमच्छामें शखोद्धारा तीर्थपर।

४ घृष्णेश्वर — रेवड़ीतालावपर।

५ नागेश्वर — भोंसलाघाटके पास अग्नीश्वर घाटपर (गुल्लरघाट)।

६ महाकालेश्वर — वृद्ध कूपके उत्तरमें वृद्धकाल।

७ भीमेश्वर — काशीकरवटमें।

८ त्र्यंबकेश्वर — हौदकटोरापर त्रिलोकनाथ नामसे प्रसिद्ध।

९ विश्वेश्वर — प्रसिद्ध।

१० शैलेश्वर — वरुणाके मढ़िया घाटपर।

११ गोकर्णेश्वर — कुदई चौकी महल्ला—गोविंदपुरा—दैलूकी गलीमें।

१२ रामेश्वर — मानमंदिर के पूरब गंगातीरपर पीपलके पास।

अब इसके आगे काशीखंडोक्त अंगयात्रा दी जा रही है। जिस प्रकार संपूर्ण ब्रह्मांडको ईश्वरके विराट् रूपमें कल्पना कर उनके एकेक अवयवोंमें एकेक लोकोंकी कल्पना की जाती है। उसी तरह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाराणसी क्षेत्रको शिवरूपकी कल्पना करके वाराणसी स्थित स्थानोंको शिवजीके अवयव कल्पना कर उनके दर्शन लेना इसीको 'विश्वेश्वर स्वरूपात्मक अंगयात्रा' कहते हैं।

१२ अंगयात्रा

१ कृत्तिवासेश्वर (मस्तक) — हरतीरथ पर
२ ओंकारेश्वर (शिखा) — छित्तनपुरामें
३ त्रिलोचनेश्वर (नेत्र) —प्रसिद्ध
४ गोकर्णेश्वर (दक्षिण कर्ण) कुदईचौकी
५ भारभूतेश्वर (वामकर्ण)— गोविंदपुरा
६ विश्वेश्वर
७ अविमुक्तेश्वर } (दाहिना हाथ) — प्रसिद्ध
८ धर्मेश्वर
९ मणिकर्णिकेश्वर } (बांया हाथ) मीरघाटपर गौमठके पास काकारामके गलीमें
१० कलशेश्वर (दक्षिण पाद) — सिद्धेश्वरी मोहल्लेमें
११ कपर्दीश्वर (वाम पाद) —पिशाचमोचनपर
१२ ज्येष्ठेश्वर (नितंब) — कर्णघंटादेवीके पास
१३ मध्यमेश्वर (नाभि) — मंदाकिनीके पास
१४ आदिमहादेव (जटाजूट) — त्रिलोचनेश्वरके गलीमें
१५ श्रुतीश्वर (शिरोभूषण) — आदिमहादेवके मंदिरमें
१६ चंद्रेश्वर (हृदय) — सिद्धेश्वरीके मंदिरमें
१७ आत्मावीरेश्वर (मन) — संकठाजीके मंदिरके पास
१८ केदारेश्वर (लिंग) — केदारघाटपर प्रसिद्ध
१९ शुक्रेश्वर (वीर्य) — कालिका गलीमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगयात्रात्मक वाराणसी स्वरूप शिवमूर्त्ति

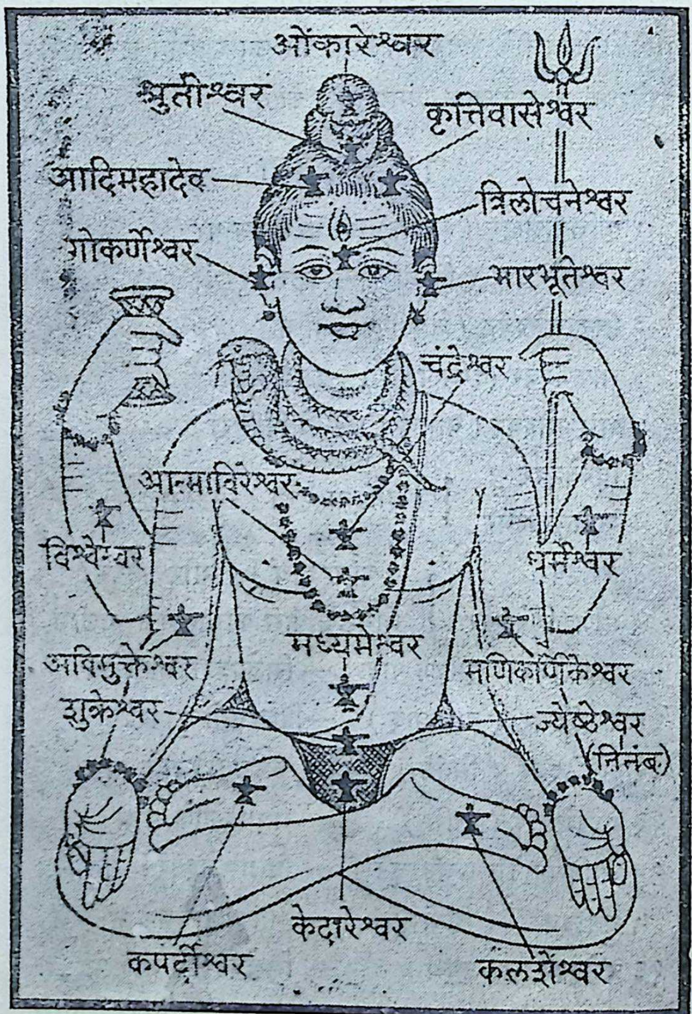

मस्तकसे कंठतक ओंकार खण्ड, कमरतक विश्वेश्वर खण्ड, उसके नीचे केदार खण्ड ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३ बयालीस लिंगोंकी यात्रा

१	ओंकारेश्वराय नमः	— मच्छोदरी पर प्रसिद्ध
२	त्रिलोचनेश्वर	— प्रसिद्ध
३	आदि महादेव	— ,,
४	कृत्तिवासेश्वर	— ,,
५	रत्नेश्वर	— ,,
६	चंद्रेश्वर	— ,,
७	केदारेश्वर	— ,,
८	धर्मेश्वर	— ,,
९	आत्मा वीरेश्वर	— ,,
१०	कामेश्वर	— त्रिलोचनके पास
११	विश्वकर्मेश्वर	— हनुमान फाटकके पश्चिम
१२	मणिकर्णिकेश्वर	— प्रसिद्ध
१३	अविमुक्तेश्वर	— ,,
१४	विश्वेश्वर	— ,,
१५	अमृतेश्वर	— नीलकंठके पास कुञ्जविहारी गंगा-पुत्रके मकानमें (जव विनायकके पास)
१६	तारकेश्वर	— प्रसिद्ध
१७	ज्ञानेश्वर	— लाहोरीटोलामें दारूमल खत्रीके मकानमें
१८	करुणेश्वर	— लाहोरीटोलामें
१९	मोक्षद्वारेश्वर	— लाहोरी टोलामें फूटे गनेशजीके पास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२० स्वर्गद्वारेश्वर — ब्रह्मनालमें जवविनायकके पास बच्चासिंहके मकानके समीप

२१ ब्रह्मेश्वर — दशाश्वमेध पर बंगालीटोलामें

२२ लांगलीश्वर — कचौड़ी गली खोवा बाजारमें

२३ वृद्धकालेश्वर — प्रसिद्ध

२४ वृषेश्वर — गोरखटीला

२५ चंडीश्वर — सिकरौल छावनी सदरबाजारमें चंडीमाताके पास

२६ नंदिकेश्वर — प्रसिद्ध

२७ महेश्वर — ,,

२८ ज्योतीरूपेश्वर — गौमठके पास कांकारामके गलीमें

२९ शैलेश्वर — वरुणातोरपर मढियाघाट (वरुणास्नान)

३० संगमेश्वर — आदिकेशवके पास (वरुणास्नान)

३१ स्वर्लीनेश्वर — राजघाटपर नया महादेव नामसे प्रसिद्ध –(राजघाटपर स्नान)

३२ मध्यमेश्वर — प्रसिद्ध (मंदाकिनी स्नान)

३३ हिरण्यगर्भेश्वर — त्रिलोचनघाटपर (गंगाजीमें स्नान)

३४ ईशानेश्वर — कोतवालपुरामें आदिविश्वेश्वरके पश्चिममें नये सड़कपर (मणिकर्णिका स्नान)

३५ गोप्रेक्षेश्वर — लालघाटपर (लालघाटपरके कूपमें स्नान)

३६ वृषभध्वजेश्वर — कपिलधारामें (कपिलधारातीर्थस्नान)

३७ उपशांतेश्वर — अग्नीश्वरघाटपर (कूपस्नान)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३८ ज्येष्ठेश्वर — काशीपुरामें सप्तसागरके पास (पंच-चूडा-ह्रदमें स्नान)

३९ निवासेश्वर — कर्णघंटापर भूतभैरवके पास (चतुःसमुद्रकूपस्नान)

४० शुक्रेश्वर — कालिकागलीमें (कूपस्नान)

४१ व्याघ्रेश्वर — भूतभैरवके पास (दंडखात तीर्थ स्नान)

४२ जंबुकेश्वर — बड़े गनेसजीके दरवाजेके पास (शौनकेश्वर कुंडमें स्नान)

१४ छप्पन्न विनायक यात्रा

१ प्रथमावरण

१ अर्कविनायकाय नमः — असीसंगमपर लोकार्कके दक्षिणमें उत्तराभिमुख

२ दुर्ग विनायक — दुर्गाकुंडके आग्नेय कोणमें अथवा महादुर्गाके समीप मन्दिरमें पश्चिम तरफ, पूर्वाभिमुख

३ भीमचंडविनायक — भीमचंडीमंदिरमें रविरक्ताक्ष गंधर्वके उत्तरमें पश्चिमाभिमुख

४ देहली विनायक — सिंधुसागर तीर्थसे एक कोस पूर्वाभिमुख

५ उद्दंड विनायक — देहलीविनायकके आगे करीब डेढ़ मीलपर (भुइली गांव) रामेश्वरके पहिले उत्तराभिमुख

६ पाशपाणि विनायक सिकरौल छावनी बड़े गांवमें चंडीमाताके पश्चिम कुछ दूरपर दक्षिणाभिमुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७ खर्व विनायक — वरुणाके दक्षिण में आदिकेशवमंदिर
के बाहर पश्चिममें उत्तराभिमुख

८ सिद्धि विनायक — मणिकर्णिका तीरपर अमेठीके
शिवालयके समीप

२ द्वितीयावरण

९ लंबोदर विनायक — केदारेश्वरके आगे सोनारपुरामें
चिंतामणि नामसे प्रसिद्ध

१० कूटदंत विनायक — उसीके (लंबोदर विनायकके)
पश्चिम कृसिकुण्डके पश्चिममें किनाराम
बाबाके मठके पास सिद्धेश्वर मंदिरमें
प्रदक्षिणामें पश्चिमाभिमुख

११ शालकटंकट विनायक–मडुआडी तालावपर नैऋत्य दिशामें

१२ कूष्मांड विनायक — बड़ेगाँवके आगे फुलवरिया गाँवमें
फुलेश्वरी देवीके मंदिरमें दक्षिणाभिमुख

१३ मुंड विनायक — चंडीमाताके पास चंडेश्वर मंदिरमें
दक्षिणाभिमुख (सिकरौल सदर बाजार)

१४ विकटद्विज विनायक-नाटीइमलीपर धूपचंडीके मंदिरमें
पश्चिमाभिमुख

१५ राजपुत्र विनायक — आदिकेशवके पास रास्तेमें धूस नाम-
की जगहपर पूर्वोत्तरमुख (थि० सो०
स्कूलके कुछ आगे बढ़कर सामने)

१६ प्रणव विनायक — त्रिलोचन घाटपर हिरण्यगर्भेश्वर —
मंदिरमें उत्तराभिमुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३ तृतीयावरण

१७ वक्रतुंड विनायक — चौसट्टीदेवीके पीछे मंदिरमें सरस्वती विनायक नामसे प्रसिद्ध, पूर्वाभिमुख

१८ एकदंत विनायक — बंगालीटोलामें पुष्पदंतेश्वर मंदिरमें पश्चिमाभिमुख

१९ त्रिमुख विनायक — सिगरामें टीलापर त्रिपुरांतकेश्वरके मंदिरमें उत्तराभिमुख (इन्हें वानर, सिंह, और हस्तीके मुख हैं)

२० पंचास्य विनायक — पिशाचमोचन कपर्दीश्वरके पास उत्तराभिमुख

२१ हेरंब विनायक — पिशाचमोचनके उत्तरमें रास्तेहीमें बाल्मीक टीलेपर महादेव मंदिरमें पूर्वाभिमुख

२२ विघ्नराज विनायक — चित्रकूट नामक स्थानपर तुलसीदास के मठमें हनुमानजीके पास उत्तराभिमुख

२३ वरद विनायक — राजघाटपर रास्ते हीमें दक्षिणाभिमुख

२४ मोदक विनायक — त्रिलोचनेश्वरके पीछे आदिमहादेव मंदिरमें पूर्वाभिमुख

४ चतुर्थावरण

२५ अभय विनायक — दशाश्वमेध घाटपर शूलटंकेश्वरके मंदिरमें उत्तराभिमुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६ सिंहतुंड विनायक— बालमुकुन्दजीके चौहट्टीमें ब्रह्मेश्वर मंदिरमें पूर्वाभिमुख

२७ कूणिताक्ष विनायक—लक्ष्मीकुण्डपर महालक्ष्मीजीके आगे के मंदिरमें सीढीके आरंभमें उत्तराभिमुख

२८ क्षिप्रप्रसादन विनायक-पितरकुण्डपर पित्रीश्वरके मंदिरमें पूर्वाभिमुख

२९ चिंतामणि विनायक—इसरगंगीपर जागेश्वर मंदिरके बाहर दीवारमें पश्चिमाभिमुख

३० दंतहस्त विनायक बड़ागनेश मंदिरके बाहर कुएँके पास पश्चिमाभिमुख

३१ पिचिंडिल विनायक—प्रह्लाद घाटपर प्रह्लादेश्वरके बाहर बडके नीचे दक्षिणाभिमुख

३२ उद्दण्ड विनायक — त्रिलोचन मंदिरमें पीपलके पास दीवारमें पूर्वाभिमुख

५ पंचमावरण

३३ स्थूलदंत विनायक — मानमंदिरके पास सोमेश्वर मंदिरके बाहर घाटपर पश्चिमाभिमुख

३४ कलिप्रिय विनायक—साक्षिविनायकके सामने प्रकामेश्वरके मंदिरमें पश्चिमाभिमुख

३५ चतुर्दंत विनायक — कुदई चौकीके पास ध्रुवेश्वरके बाहर दीवारमें पश्चिमाभिमुख

३६ द्वितुंड विनायक — सांबादित्यके पास पूर्वाभिमुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३७ ज्येष्ठ विनायक — कर्णघंटामें ज्येष्ठेश्वरके मंदिरमें पूर्वाभिमुख

३८ गण विनायक — मच्छरहट्टा-गोविंदपुरा—गलीमें भार-भूतेश्वर मंदिरमें पूर्वाभिमुख राज विनायक नामसे प्रसिद्ध

३९ काल विनायक — रामघाट पर बडके नीचे हनुमानजीके पास पूर्वाभिमुख

४० नागेश विनायक — भोसला घाटपर नागेश्वर मंदिरमें पूर्वाभिमुख

६ षष्ठावरण

४१ मणिकर्णिका विनायक-स्मशानपर सतुआ बाबाके मठके पास जमीनपर उत्तराभिमुख

४२ आशा विनायक — मीरघाटपर हनुमानजीके मंदिरमें पश्चिमाभिमुख

४३ सृष्टि विनायक — कालिकागलीमें भवानीशंकर महादेव के दक्खिनसे आगे जाकर कोने परके मकानमें महादेवजीके पास दीवारमें पूर्वाभिमुख

४४ यक्ष विनायक — ढुंढिराजके पश्चिममें वेणीधर ब्रह्म-पुरीमें कुएँके पास पूर्वाभिमुख

४५ गजकर्ण विनायक — कोतवालपुरा—ईशानेश्वर मंदिरमें (बाँसका फाटक) उत्तराभिमुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६ सिंहतुंड विनायक— बालमुकुन्दजीके चौहट्टीमें ब्रह्मेश्वर मंदिरमें पूर्वाभिमुख

२७ कूणिताक्ष विनायक—लक्ष्मीकुण्डपर महालक्ष्मीजीके आगे के मंदिरमें सीढीके आरंभमें उत्तराभिमुख

२८ क्षिप्रप्रसादन विनायक-पितरकुण्डपर पित्रीश्वरके मंदिरमें पूर्वाभिमुख

२९ चिंतामणि विनायक—इसरगंगीपर जागेश्वर मंदिरके बाहर दीवारमें पश्चिमाभिमुख

३० दंतहस्त विनायक बड़ागनेश मंदिरके बाहर कुएँके पास पश्चिमाभिमुख

३१ पिचिंडिल विनायक—प्रह्लाद घाटपर प्रह्लादेश्वरके बाहर बडके नीचे दक्षिणाभिमुख

३२ उद्दण्ड विनायक — त्रिलोचन मंदिरमें पीपलके पास दीवारमें पूर्वाभिमुख

५ पंचमावरण

३३ स्थूलदंत विनायक — मानमंदिरके पास सोमेश्वर मंदिरके बाहर घाटपर पश्चिमाभिमुख

३४ कलिप्रिय विनायक—साक्षिविनायकके सामने प्रकामेश्वरके मंदिरमें पश्चिमाभिमुख

३५ चतुर्दंत विनायक — कुदई चौकीके पास ध्रुवेश्वरके बाहर दीवारमें पश्चिमाभिमुख

३६ द्वितुंड विनायक — सांबादित्यके पास पूर्वाभिमुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३७ ज्येष्ठ विनायक — कर्णघंटामें ज्येष्ठेश्वरके मंदिरमें पूर्वाभिमुख

३८ गण विनायक — मच्छरहट्टा-गोविंदपुरा—गल्लीमें भारभूतेश्वर मंदिरमें पूर्वाभिमुख राज विनायक नामसे प्रसिद्ध

३९ काल विनायक — रामघाट पर बडके नीचे हनुमानजीके पास पूर्वाभिमुख

४० नागेश विनायक — भोसला घाटपर नागेश्वर मंदिरमें पूर्वाभिमुख

६ षष्ठावरण

४१ मणिकर्णिका विनायक-स्मशानपर सतुआ बाबाके मठके पास जमीनपर उत्तराभिमुख

४२ आशा विनायक — मीरघाटपर हनुमानजीके मंदिरमें पश्चिमाभिमुख

४३ सृष्टि विनायक — कालिकागलीमें भवानीशंकर महादेव के दक्खिनसे आगे जाकर कोने परके मकानमें महादेवजीके पास दीवारमें पूर्वाभिमुख

४४ यक्ष विनायक — ढुंढिराजके पश्चिममें वेणीधर ब्रह्मपुरीमें कुएँके पास पूर्वाभिमुख

४५ गजकर्ण विनायक — कोतवालपुरा—ईशानेश्वर मंदिरमें (बाँसका फाटक) उत्तराभिमुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४६ चित्रघंटा विनायक– चित्रघंटा देवीके पास (चौक) उत्तराभिमुख

४७ मंगल विनायक — मंगलागौरीके मंदिरमें

४८ मित्र विनायक — आत्मावीरेश्वरके पास वसिष्ठवाम-देवके बाहर घाटके ऊपर बडके नीचे

७ सप्तमावरण

४९ मोद विनायक — ज्ञानवापीके उतारके ऊपर वाले बायें हाथके मकानमें नीचे, पूर्वाभिमुख

५० प्रमोद विनायक — उसीके कुछ आगे बढ़कर दाहिने ओरके मकानमें दीवारमें, पूर्वाभिमुख

५१ सुमुख विनायक — विश्वेश्वरमंदिरमें वायव्यकोणमें विष्णुभगवानके पास, पूर्वाभिमुख

५२ दुर्मुख विनायक — ढुंढिराजके पीछेके शिवमंदिरमें पश्चिममें. पूर्वाभिमुख

५३ गणनाथ विनायक — ढुंढिराजके बाजारमें दंडपाणिके इधरके रास्तेमें, हाथ पीछे किये हुवे, (अपारनाथके मठके पास) पूर्वाभिमुख

५४ ज्ञान विनायक — लांगलीश्वरमंदिरमें बाहरके कोनेमें, पूर्वाभिमुख

५५ द्वार विनायक — काशीकरवटमें भीमेश्वर मंदिरमें ऊपर हैं

५६ अविमुक्त विनायक — काशीकरवटके थोड़े दूरपर ढारके पहिले घरमें महादेवके नैऋत्यमें पूर्वाभिमुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

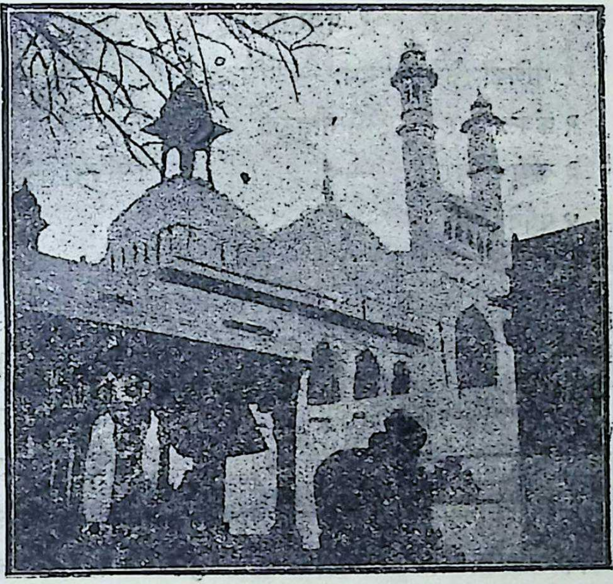

ज्ञानवापी मंडप

ई० १८२८ में (बायजा बाई शिंदे, गवालियर द्वारा)

१५ अंतर्गृही यात्रा

अंतर्गृहीयात्राकी विधि

यात्रीने प्रातःस्नान करके मोदविनायकादि पंच विनायकोंको विश्वनाथजीकी सभामें नमस्कार कर विश्वनाथजीका दर्शन करते हुवे मुक्तिमंडपमें बैठकरके —

अंतर्गृहस्य यात्रां वै करिष्येऽघौघशांतये

ऐसा संकल्प करके मणिकर्णिकाका स्नान कर मौनसे यात्रा आरंभ करनी चाहिये। इस यात्राके भी सात आवरण हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१ प्रथमावरण

१ मणिकार्णकेश्वराय नमः	—	प्रसिद्ध
२ कंबलाश्वतर	—	गौमठके पास काकारामके गलीमें
३ वासुकीश्वर	—	सिंधिया घाटपर
४ पर्वतेश्वर	—	,, ,,
५ गंगाकेशव	—	ललिताघाटपर
६ ललिता देवी	—	प्रसिद्ध
७ जरासंधेश्वर	—	मीरके पुश्तेपर स्थानकीही पूजा होती है
८ सोमनाथेश्वर	—	मानमंदिर घाटपर
९ आदिवाराहेश्वर	—	दशाश्वमेध घाटपर
१० ब्रह्मेश्वर	—	प्रसिद्ध
११ अगस्तीश्वर	—	अगस्तिकुंडपर (दशाश्वमेध)
१२ कश्यपेश्वर	—	जंगमबाड़ीके पास नये सड़कपर
१३ हरिकेशेश्वर	—	,, ,,
१४ वैद्यनाथेश्वर	—	कुदई चौकीके पास
१५ ध्रुवेश्वर	—	कुदई चौकीके पास गोसावी मंदिरमें
१६ गोकर्णेश्वर	—	,, दैलूके गलीमें
१७ अस्थिक्षेप तडाग	—	हडहा महल्लामें
१८ हाटकेश्वर	—	,, ,, पीपलके नीचे
१९ कीकसेश्वर	—	,, राजादरवाजाके पश्चिम
२० भारभूतेश्वर	—	प्रसिद्ध
२१ चित्रगुप्तेश्वर	—	मछरहट्टा
२२ चित्रघंटा	—	लक्खी चौतरेके पीछे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ पशुपतीश्वर	—	प्रसिद्ध
२४ पितामहेश्वर	—	सीतलागल्ली-काश्मीरीमलकी हवेलीके पास
२५ कलशेश्वर	—	ब्रह्मपुरीमें काश्मीरीमलके हवेलीके पास
२६ चंद्रेश्वर	—	प्रसिद्ध
२७ वीरेश्वर	—	आत्मावीरेश्वर
२८ विद्येश्वर		नीमवालें ब्रह्मपुरीमें
२९ अग्नीश्वर	—	प्रसिद्ध
३० नागेश्वर	—	प्रसिद्ध
३१ हरिश्चंद्रेश्वर	—	संकटा घाटपर
३२ चिंतामणि विनायक	—	"
३३ सेना विनायक	—	"
३४ वसिष्ठ वामदेव	—	"

२ द्वितीयावरण

३५ त्रिसंघेश्वर	—	लाहोरीटोलेमें फूटे गनेसजीके पास
३६ विशालाक्षी	—	प्रसिद्ध
३७ धर्मेश्वर		"
३८ बिश्वबाहुका	—	मीरघाटपर धर्मकूपके पास
३९ आशा विनायक	—	"
४० वृद्धादित्य	—	मीरघाट पर
४१ चतुर्वक्त्रेश्वर	—	सकरकंदकी गलीमें
४२ ब्राह्मीश्वर	—	" " "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४३ मनः प्रकामेश्वर — साक्षी विनायकके पास
४४ ईशानेश्वर — प्रसिद्ध

३ तृतीयावरण

४५ चंडी चंडीश्वर — कालिकागलीमें
४६ भवानीशंकर — कालिकागली शुक्रकूपके पास (अब अन्नपूर्णाके पास नये राममंदिरमें)
४७ ढुंढिराज — प्रसिद्ध
४८ राजराजेश्वर — ज्ञानवापीके पश्चिम तरफ
४९ लांगलीश्वर — प्रसिद्ध
५० नकुलीश्वर — विश्वनाथके पास हनुमानजीके मंदिरमें

४ चतुर्थावरण

५१ परान्नेश्वर — ज्ञानवापीके बाजारमें दंडपाणिके पास
५२ परद्रव्येश्वर ,, ,,
५३ प्रतिग्रहेश्वर — ,,
५४ निष्कलंकेश्वर — ,,
५५ मार्कंडेयेश्वर — ,,
५६ अप्सरसेश्वर — ज्ञानवापीके उत्तर फाटकके पास
५७ गंगेश्वर — ,, ,, ,,

५ पंचमावरण

५८ ज्ञानवापी स्नान —
५९ नंदिकेश्वर — प्रसिद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६० तारकेश्वर — प्रसिद्ध
६१ महाकालेश्वर — ज्ञानवापीके आग्नेय कोणमें

६ षष्ठावरण

६२ दंडपाणि — प्रसिद्ध
६३ महेश्वर — ,,
६४ मोक्षेश्वर — ज्ञानवापीमें गुप्त

७ सप्तमावरण

६५ वीरभद्रेश्वर — ज्ञानवापीके नैऋत्य कोणमें गुप्त
६६ अविमुक्तेश्वर — ज्ञानवापीके उत्तर फाटकमें गुप्त

मोक्षेश्वर, वीरभद्रेश्वर तथा अविमुक्तेश्वर इन तीन लिंगोंकी पूजा उनके आदि स्थानहीके ऊपर की जाती है।

इसके अनंतर मोदादि पंच विनायकोंका (विश्वनाथकी सभामें) और विश्वनाथजीका दर्शन लेकर :—

अंतर्गृहस्य यात्रेयं यथावद्या मया कृता।
न्यूनातिरिक्तया शंभुः प्रीयतामनया विभुः ॥

इस मंत्रसे यात्रा समाप्त कर क्षणभर मुक्तिमंडपमें बैठकर अपने घर जाना चाहिये।

पंचतीर्थी यात्रा

(१) अस्सीसंगम (२) दशाश्वमेध (३) वरुणासंगम (४) पंचगंगा (गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा, धूतपापा, इन पांचों नदियोंका संगम यहां पर है) (५) मणिकर्णिका इन पांचो तीर्थोंपर स्नान और श्राद्धोंका विधान है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६ पंचक्रोशी यात्रा

अविमुक्तं महाक्षेत्रं पंचक्रोशपरीमितम् ।
ज्योतिर्लिंगं तदेवैकं ज्ञेयं विश्वेश्वराभिधम् ॥

पंचक्रोशात्मक अविमुक्तक्षेत्र (वाराणसी) यह भगवान शंकरजीका स्थावर स्वरूप होनेके कारण पंचक्रोशी प्रदक्षिणा करना बड़ा पुण्यकारक है। यह प्रदक्षिणा करनेसे ब्रह्मांडांतर्गत सब तीर्थ, क्षेत्र एवं देवताओंके प्रदक्षिणाका पुण्य प्राप्त होता है।

यह प्रदक्षिणा ४७ मील की है। मणिकर्णिका से कर्दमेश्वर ७ मील। वहांसे भीमचंडी ९ मील। वहांसे रामेश्वर १४ मील। वहांसे शिवपुर ८ मील। वहांसे कपिलधारा ६ मील। वहांसे मणिकर्णिका ३ मील। इन सब स्थानोंमें यात्रियोंके वास्ते धर्मशाला बनाई हुई हैं और दुकानें भी हैं।

पंचक्रोशी यात्रा विधि

यात्री पंचक्रोशी यात्रा करनेके पहिले दिन हविष्य भोजन करे। दूसरे दिन प्रातःकाल स्नानादि नित्यकर्मों से निवृत्त होकर मुक्ति-मंडपमें बैठकरके :—

पंचक्रोशस्य यात्रां वै करिष्ये विधिपूर्वकम् ।
प्रीत्यर्थं तव देवेश सर्वाघौघप्रशांतये ॥

ऐसा संकल्प करके मणिकर्णिका स्नान, विश्वेश्वर दर्शन और मोदादि पंचविनायकोंका स्मरण कर मणिकर्णिकासे यात्राको प्रारंभ करे। कमसे कम मणिकर्णिकासे ललिता देवीतक यात्रीने मौन रखना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह नीचे लिखी हुई अनेक देवताओंकी पंचक्रोशी यात्रा अनुक्रम यात्रा कही जाती है। इसमें मुकामभी बहुतसे होते हैं और देवताएं भी बहुतसी हैं। समयाभाव अथवा अशक्तिके कारण इतनी बड़ी यात्रा न हो सके तो केवल स्थानोंपरके मुख्य देवताओंके दर्शन, पूजन; और श्राद्ध, इतने अवश्यही करना चाहिये। साधारण यात्रा में पांचही मुकाम होते हैं। विश्रांतिके वास्ते लोग रामेश्वरके बाद शिवपुरमें भी मुकाम करते हैं, इसी लिये यहां श्राद्धादिकोंका विधान नही है।

मणिकर्णिकासे कर्दमेश्वरतकके देवताओंके नाम :—

१ मणिकर्णिकेश्वराय नमः	११ बंदिदेवी (दशाश्वमेध घाट)
२ सिद्धि विनायक	१२ सर्वेश्वर (पांडेघाट)
३ गंगा केशव	१३ केदारेश्वर
४ ललिता देवी	१४ हनुमदीश्वर (हनुमान घाट)
५ जरासंधेश्वर	१५ संगमेश्वर (अस्सी संगम घाट)
६ सोमेश्वर	१६ लोलार्क
७ दालभ्येश्वर (मानमंदिरके पास)	१७ अर्क विनायक
८ शूलटंकेश्वर	१८ दुर्ग विनायक
९ आदिवाराहेश्वर	१९ दुर्गादेवी
१० दशाश्वमेधेश्वर	२० विष्वक्सेनेश्वर (चितईपुर)

१ पहिला मुकाम कर्दमेश्वर

कर्दम तीर्थपर स्नान करके यहांपर पहिला मुकाम कर श्राद्धादि करना चाहिये। दूसरे दिन प्रातःकाल स्नानादि करके परिक्रमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुरू करनी चाहिये। परिक्रमाके रास्तेमें दाहिने तरफ मलमूत्र-त्याग और थूकना वगैरह नहीं करना चाहिये और दाहिने तरफ मुकाम भी न करे।

२१ कर्दमेश्वराय नमः
२२ कर्दमकूप
२३ सोमनाथ
२४ विरूपाक्ष
२५ नीलकंठ

ये पांच देवताएँ मुकामपर ही हैं इनका दर्शन पूजन करना चाहिये।

२६ नागनाथ (अमरा गाँवमें)
२७ चामुंडा (अबडा गाँवमें)
२८ मोक्षेश्वर (रास्तेमें)
२९ करुणेश्वर
३० वीरभद्रेश्वर
३१ विकटाक्ष दुर्गा
३२ उन्मत्त भैरव
३३ नीलगण
३४ कालकूटगण
३५ विमल दुर्गा
३६ महादेव
३७ नंदिकेश गण
३८ भृङ्गिरिटी गण
३९ गणप्रिय (गौरा गाँव में)
४० विरूपाक्ष
४१ यक्षेश्वर
४२ विमलेश्वर
४३ मोक्षद (प्रयागपुर गाँवमें)
४४ ज्ञानदेश्वर
४५ अमृतेश्वर

२ दूसरा मुकाम भीमचंडो

यहाँपर गंधर्व सागर तीर्थ है। यहाँपर भी स्नान दान श्राद्धादि कर्म करना चाहिये। गंधर्व सागर तीर्थके बादः—

४६ भीमचंडी देव्यै नमः
४७ चंड विनायक
४८ रविरक्ताक्ष गंधर्व (इसका दर्शन स्त्रियोंको नहीं करना चाहिये।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४९ नरकार्णवतारक शिव
५० एकपाद गण (कचनार गाँवमें)
५१ महाभीम (रानीके तालावपर)
५२ भैरव
५३ भैरवी
५४ भूतनाथ
५५ सोमेश्वर (सिंधुसागर गाँवमें)
५६ कालनाथ
५७ कपर्दीश्वर
५८ कामेश्वर (चौखंडी गाँवमें)
५९ गणेश्वर
६० वीरभद्र
६१ चारुमुख
६२ गणनाथ
६३ देहली विनायक

इसके पीछे १६ विनायक हैं उनका पूजन करना चाहिये।

६४ उद्दंड गणपति
६५ उत्कलेश्वर
६६ रुद्राणी तपोभूमि

३ तीसरा मुकाम रामेश्वर

यहां पर वरुणा नदीका स्नान और श्राद्ध करके रामेश्वरका पूजन करना चाहिये। ब्राह्मण रुद्राभिषेक करे। दूसरे दिन प्रातः-काल वरुणा नदीमें स्नान और रामेश्वर दर्शन करके यात्रा प्रारंभ करनी चाहिये।

६७ रामेश्वर
६८ सोमेश्वर
६९ भरतेश्वर
७० लक्ष्मणेश्वर
७१ शत्रुघ्नेश्वर
७२ द्यावाभूमीश्वर
७३ नहुषेश्वर
७४ असंख्यातेश्वर
७५ देवसंघेश्वर
७६ पाशपाणि विनायक
७७ पृथ्वीश्वर
७८ यूपसरोवर तीर्थ

यहां पर सुवर्णदानका माहात्म्य है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४ चौथा मुकाम कपिलधारा

मंदराचलसे काशीमें आते हुवे श्रीशिवजीने यहांपर मुकाम किया था, उस समय अनेक कपिला गौओंने मिलकर भगवानको अपने दुग्धसे अभिषेक किया। उस दूधका तीर्थ हुवा। इसलिये इस तीर्थका नाम कपिलधारा तीर्थ है। यहां पर श्राद्ध तथा वृषभध्वज महादेवका पूजन कर खीरका नैवेद्य समर्पण कर स्वयं भोजन करना चाहिये। दूसरे दिन प्रातःकाल वहांके देवताओंके दर्शन करते हुवे सेर वा आधा सेर जव साथमें लेकर यात्रा आरंभ करनी चाहिये।

कपिलधारा तीर्थ स्नान—

७९ वृषभध्वजेश्वर
८० ज्वालानृसिंह

वरुणा संगम स्नानः—

८१ आदिकेशव
८२ संगमेश्वर
८३ खर्व विनायक (इसीको जव विनायक कहते हैं। यह गणपति गंगाके किनारे पर है। यहांसे गंगा किनारेसे जव छिड़कते जाना चाहिये
८४ प्रह्लादेश्वर
८५ त्रिलोचनेश्वर
८६ बिंदुमाधव

पंचगंगा स्नान :—

८७ गभस्तीश्वर
८८ मंगला गौरी
८९ वसिष्ठ वामदेव
९० पर्वतेश्वर
९१ महेश्वर
९२ सिद्धि विनायक

यहांपर बचे हुवे जव समर्पण कर मणिकर्णिका स्नान तथा विश्वेश्वर दर्शन, नित्ययात्राकी देवताएं (पृ० ९) और मोदादि पंच विनायकों का स्मरण तथा साक्षीविनायकका दर्शन करके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञानवापीमें जाना चाहिये। वहां संपूर्ण देवताओंको नमस्कार और—

पंचक्रोशस्य यात्रेयं यथावद्या मया कृता।
न्यूनं संपूर्णतां यातु त्वत्प्रसादादुमापते ॥

ऐसी प्रार्थना करते हुए अपने घर जाकर (५) **पांचवा मुकाम घर पर (काशी)** करते हुए श्राद्धादि करके यात्रा संपूर्ण करनी चाहिये।

काशी तीर्थ यात्रामें पिशाचमोचन तीर्थ पर स्नान और श्राद्धका विधान है।

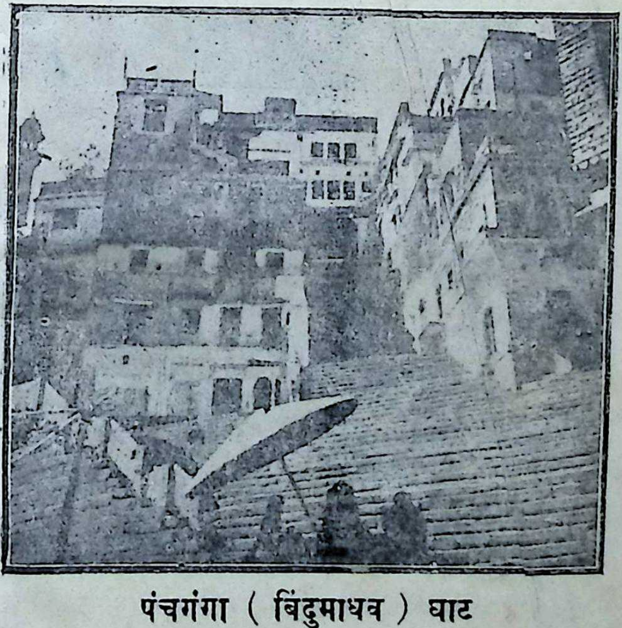

पंचगंगा (बिंदुमाधव) घाट

ई० १७७५ (प्रतिनिधि द्वारा)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

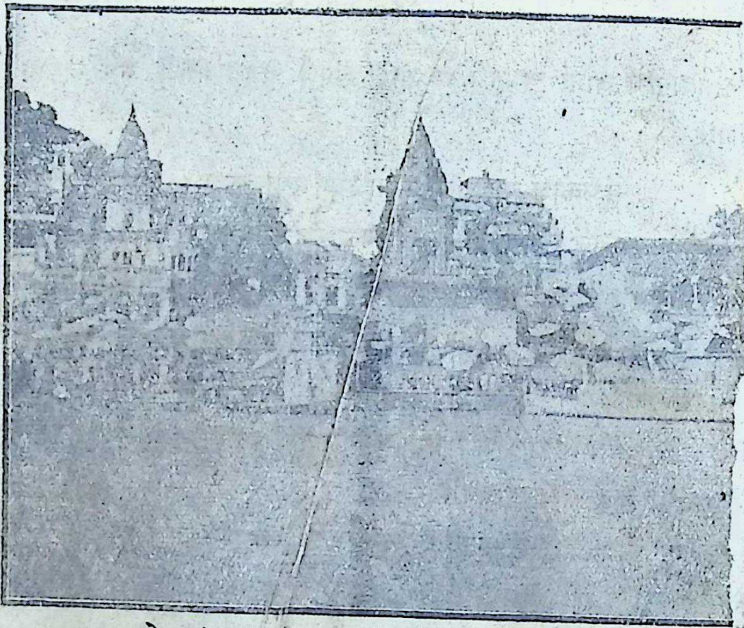

दशाश्वमेध (रानी अहिल्याबाई इन्दौर द्वारा ई० १७८७ में)

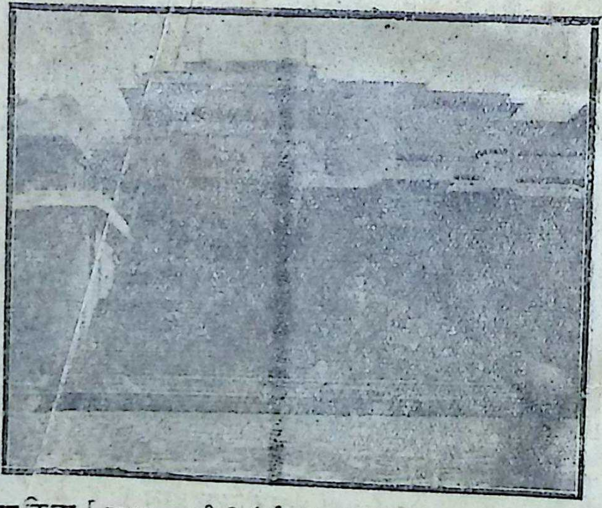

रामनगर किला [व्यास काशी] (ई० १७५२ में राजा बलवंतसिंह द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu